राजद समाचार

आजादी, समानता और भाईचारा

अंक - 14 मासिक सितम्बर, 2022 सहयोग राशि - 20 रुपये

इस बार

पाठकीय अभिमत	03
राजद राज्य परिषद सम्मेलन की रिपोर्ट	04
विश्वास मत पर तेजस्वी यादव	09
फासीवाद पर उदय नारायण चौधरी	12
नारायण गुरु पर सिद्धार्थ रामू	14
पेरियार पर ओमप्रकाश कश्यप	16
पेरियार ललई सिंह पर वीरेंद्र यादव	20
पेरियार की जीवनी पर कमलेश वर्मा	23
पक्षधर के ग्राम्शी अंक पर सौरभ राय	24
अवध बिहारी चौधरी पर डॉ दिनेश पाल	25
डॉ. रामचंद्र पूर्वे पर प्रो. डी. के. पाल	26
प्रदीप गिरि पर यशवंत गिरि	28

सम्पादक

अरुण आनंद

सहयोग

कवि जी/ डॉ.दिनेश पाल

जगदानन्द सिंह

प्रदेश अध्यक्ष, राष्ट्रीय जनता दल, वीरचन्द पटेल पथ, पटना-1 द्वारा प्रकाशित एवं वितरित।

तथाकथित सहकारी संघवाद का ग्रास बनतीं राज्य सरकारें

यह बहुत बुरा दौर है। इतना बुरा कि राजनीति में कब, कौन किसको ग्रास बना ले, यह ठीक से अनुमान लगा पाना कठिन है। केन्द्र और राज्यों के बीच इधर के वर्षों में जिस जिस तरह के टकराव, अविश्वास और बदले की परस्पर जो प्रतिस्पर्धा चल रही है, वह भारत की संसदीय राजनीति के इतिहास के सबसे निकृष्टम स्वरूप में आ पहुंचा है। संविधान निमार्ताओं ने शायद ही इसकी कल्पना की होगी कि राज्य की शासन इकाई और केन्द्रीय शासन व्यवस्थाएं इस हद तक अराजक हो उठेंगी कि उससे उत्पन्न गतिरोध संविधान के मूल उद्देश्य को ही मटियामेट करने पर इस तरह उतारू हो जाएंगे।

आज भारत के कमोबेश सभी राज्य केन्द्र के तथाकथित सहकारी संघवाद की प्रताड़ना के शिकार हैं। दिल्ली में अरविंद केजरीवाल और बंगाल में ममता बनर्जी का मामला लगातार सुर्खियों में रहा है। इसी तरह बिहार, झारखंड, महाराष्ट्र, तेलांगना आदि राज्यों में भी केन्द्र जिस तरह से ईडी, सी.बी.आई और इनकम टैक्स का दुरुपयोग विपक्षी पार्टियों को बदनाम करने के लिए करती आई है उससे यह सवाल एक बार फिर से मुखर हो उठा है कि केन्द राज्य संबंधों की पड़ताल की जाए और उनकी जो संवैधानिक शक्तियां हैं उसके उपयोग की लक्ष्मण रेखा भी तय की जाए। पिछले कुछ वर्षों में केन्द्र सरकार कुछ विशेष जांच एजेंसियों को अपने खास उद्देश्य के लिए इस्तेमाल करती रही है। यह अकारण नहीं कि सी.बी.आई, ईडी और इनकम टैक्स जैसी संस्थाओं की एक दौर में अपनी जो विश्वसनीयता थी, वह भाजपा सरकार की कठपुतली बन जाने के कारण पूरी तरह से खत्म हो चुकी है। इन एजेंसियों का दुरुपयोग पूर्व की सरकारें भी करती थीं, लेकिन यह प्रवृत्ति के बतौर भाजपा सरकार में जिस तरह से एक अभियान का शक्ल ले चुकी है, वह आनेवाले भयावह कल का संकेत है। यह सवाल भी अहम है कि ईडी द्वारा जांच के 95 प्रतिशत मामले में विपक्ष ही क्यों निशाने पर रहे हैं?

कई सारे ऐसे दृष्टांत देखेने में आये हैं जब केन्द्र सरकार राज्यों की सहमति के बगैर अपनी मनमानी उनपर थोपती आई है। इस मामले में दिल्ली और बंगाल के साथ उनका जो रुख रहा है वह बहुत ही बर्बर रूप में सामने आया है। अभी हाल ही में महाराष्ट्र में डेढ़ हजार करोड़ के मेदांता प्रोजेक्ट का महाराष्ट्र से गुजरात में स्थानांतरित किया जाना उनके इसी विभेदकारी व्यवहार का सूचक है। कोविद महामारी के दौरान महामारी प्रबंधन के नाम पर जिस तरह से राज्यों के अधिकारों का हनन करते हुए इकतरफा लाकडाउन, तालाबंदी और वैक्सीनेशन नीति अपनाई गई वह संघवाद के नाम केन्द्रवाद का नमूना भर है। राज्यों में जी.एस.टी के लाभांश का सवाल हो, या बिहार जैसे प्रान्त के लिए विशेष राज्य का दर्जा देने का सवाल, पिछले कुछ वर्षों से

केन्द्र द्वारा लगातार इसकी अनदेखी की जाती रही है। भारत में संघवाद की बुनियाद ही इसलिए डाली गई थी कि केन्द्र राज्यों को यथासंभव जो भी सहयोग होगा उसे करेगा और एक समावेशी जनतंत्र की प्रक्रिया को बल मिलेगा। कोई भी राज्य आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक न्याय को वास्तविक रूप में तभी लागू कर पाएंगे जब संघ उन्हें सामाजिक, आर्थिक न्याय देने की भावना से काम करे। केन्द्र के संघवाद की विभेदकारी असहयोग भावना की वजह से राज्य सरकारें लगातार परेशान रही हैं। अभी बिहार के कृषि मंत्री ने भी केन्द्र द्वारा बिहार की कृषि को मिलने वाली सब्सिडी सही मात्रा और समय पर नहीं मिलने के सवाल को उठाया है। इस तरह के सवाल भारत के विभिन्न राज्यों से उठते रहे हैं, लेकिन केन्द्र की यह अनसुनी मीडिया की सुर्खियां नहीं बन पाते।

भारत में राजनीतिक दल आज पूरी तरह विभाजित हैं। उनके बीच संवाद का कोई माहौल बनता हुआ नहीं दिखता। भाजपा ने इस तरह की खाई पैदा कर दी है कि सब-के-सब युद्ध कैम्प के समूह की तरह नजर आते हैं। विपक्ष और क्षेत्रीय पार्टियों को खत्म करने का उनका कुचक्र तो अपनी जगह तो कायम है ही।

केन्द्रवाद के भेदभाव का सबसे ज्यादा शिकार बिहार है। अभी हाल में ही बिहार के कृषि, ग्रामीण और वित्त मंत्रालय ने यह शिकायतें दर्ज की कि विभिन्न योजनाओं में केन्द्र अपना अंशदान देने में आनाकानी कर रहा है। प्रधानमंत्री द्वारा घोषित सवा लाख करोड़ रुपये के पैकेज का आज तक कोई हिसाब-किताब नहीं है। यहां यह गौरतलब है कि बिहार ऐतिहासिक रूप से पिछड़ा राज्य रहा है, लिहाजा कोई एकमुश्त पैकेज से इसकी समस्याओं का समाधान नहीं होने वाला है। इतिहास का तकाजा है कि उसकी सतत मदद की जाए और ठीक यहीं पर बिहार के विशेष राज्य के दर्जा की मांग उठती है। यह कोई राजनीतिक सवाल नहीं है बल्कि यह बिहार के साथ न्याय का सवाल है। दुर्भाग्य से केन्द्र की सभी सरकारें आज तक इसपर राजनीति ही करती रही हैं।

भाजपा एक देश, एक कानून, एक टैक्स, एक भाषा आदि के नाम पर देश की विविधता और क्षेत्रीय स्वायत्ता को खंडित करने करने का लगातार प्रयास कर रही है। राज्य की निहित शक्तियां कमजोर हो रही हैं और इसकी कीमत पर केन्द्र निरंकुश होता जा रहा है। बहुत पहले केन्द्र-राज्य संबंधों को लेकर गाडगिल फामूर्ला बना था, लेकिन आज इसकी पूरी तरह अनदेखी की जा रही है। प्रधानमंत्री के सारे नारों की तरह उनका सहकारी संघवाद का नारा भी छलावा ही साबित हो रहा है। यह तय है कि केन्द्र में क्षेत्रीय दलों की साझा सरकार ही मुकम्मल संघवाद की गारंटी कर सकती हैं।

अरुण आनंद

उप मुख्यमंत्री द्वारा राजद कोटे के सभी मंत्रियों से निम्नलिखित आग्रह का पालन करने की अपील

1. सरकार में राष्ट्रीय जनता दल के कोटे से बने मंत्री विभाग में अपने लिए कोई नई गाड़ी नहीं खरीदेंगे।
2. राष्ट्रीय जनता दल के मंत्री उम्र में उनसे बड़े कार्यकर्ता, शुभचिंतक, समर्थक या किसी भी अन्य व्यक्ति को पाँव नहीं छूने देंगे। शिष्टाचार और अभिवादन के लिए हाथ जोड़कर प्रणाम, नमस्ते व आदाब की परंपरा को ही बढ़ावा देंगे।
3. सभी मंत्रियों से आग्रह है कि उनका सभी के साथ सौम्य और शालीन व्यवहार हो तथा बातचीत सकारात्मक रहे। सादगी से पेश आते हुए सभी जाति/धर्म के गरीब एवं जरूरतमंद लोगों को अविलंब प्राथमिकता के आधार पर मदद करेंगे।
4. किसी से भेंट स्वरूप पुष्पगुच्छ/गुलदस्ता लेने-देने के स्थान पर किताब-कलम के आदान-प्रदान को बढ़ावा देंगे। और इस आशय का आग्रह लगातार करेंगे।
5. सभी विभागीय कार्यों में माननीय मुख्यमंत्री के नेतृत्व में ईमानदारी, पारदर्शिता, तत्परता और त्वरित क्रियान्वयन की कार्यशैली को बढ़ावा देंगे।
6. सभी माननीय मंत्रीगण आदरणीय मुख्यमंत्री जी, बिहार सरकार एवं अपने अधीनस्थ विभागों, कार्य योजनाओं और विकास कार्यों का सोशल मीडिया पर लगातार प्रचार-प्रसार करेंगे ताकि जनता को आपके हरेक पहलकदमी की सकारात्मक जानकारी प्राप्त हो सके।

राजद के अगला अंक में पढ़ें

- डॉ. राममनोहर लोहिया पर विशेष सामग्री।
- डॉ.लोहिया पर धर्मवीर भारती का दिलचस्प संस्मरण, अन्य मूल्यांकन परक लेख एवं उनके महत्वपूर्ण भाषण एवं लेख।
- मशहूर पत्रकार पी.साईनाथ के व्याख्यान गैर बराबरी का जनतंत्र।
- बी. सिवरामन का भारत में रोजगार संकट के विभिन्न पहलू।
- बड़े पैमाने पर सरकारी नौकरियों के मुद्दे पर तेजस्वी यादव के एजेंडों की विस्तृत विवेचना करता विशेष आलेख।
- क्रिस्तोफ जाफ्रलो का आर.एस.एस. भाजपा नीत प्रतिक्रांति।
- जितेंद्र कुमार का लेख सामाजिक न्याय को कैसे लागू करे बहुजन नेतृत्व।
- रामचन्द्र मांझी पर जितेन्द्र दोस्त का लेख।
- पठन-पाठन में नई किताबों एवं पत्रिकाओं पर केन्द्रित समीक्षाएं एवं और भी बहुत कुछ ।

आपसे आग्रह है कि देश, दुनिया से संदर्भित मौजूदा परिप्रेक्ष्य को विश्लेषित करता आलेख अगर है तो हमें जरूर भेजें।

हमारा पता है:

सम्पादक

राजद समाचार,

2 वीरचंद पटेल पथ, पटना-800001

पाठकीय अभिमत

प्रखर और विचारोत्तेजक

हाल ही में 'राजद समाचार' नाम से एक मासिक पत्रिका का अगस्त अंक मिला। थोड़ा आश्चर्य हुआ। पत्रिका के प्रकाशक के तौर पर जगदानंद सिंह का नाम दर्ज है जो बिहार में सत्तारूढ राष्ट्रीय जनता दल के बिहार अध्यक्ष हैं। पत्रिका के संपादक हैंः अरुण आनंद। पत्रिका का यह विशेष अंक हैः आजादी की 75 सालगिरह पर। आमतौर पर राष्ट्रीय जनता दल की राजनीतिक छवि पिछड़ों और अल्पसंख्यक समाज का प्रतिनिधित्व करने वाले एक ऐसे संगठन की रही है, जो बौद्धिकता और बुद्धिजीवियों को ज्यादा महत्व नहीं देता। हालांकि पिछले कुछ वर्षों से पार्टी ने प्रो मनोज झा और कुछ अन्य बौद्धिक शख्सियतों को अपने दल में महत्व के साथ शामिल किया है। पर उसकी पहले वाली छवि अभी भी उसके साथ चिपकी हुई है! 'राजद समाचार' जैसी अंतर्वस्तु के स्तर पर समृद्ध और संपादकीय रूप से प्रौढ़ पत्रिका पढ़कर इसीलिए मुझे आश्चर्य हुआ और कुछ खुशी भी। पत्रिका के कुछ आलेख बौद्धिक रूप से बहुत प्रखर और विचारोत्तेजक हैं। इनमें 'अमृतकाल में विष' शीर्षक प्रसन्न कुमार चौधरी का लेख खासतौर पर उल्लेखनीय है। प्रकाश चंद्रायन, प्रीति सिन्हा, कमलेश वर्मा, आनंद बिहारी, संजीव चंदन और मनोरमा के लेख पत्रिका के इस अंक को महत्वपूर्ण बनाते हैं।

'जश्ने आजादी के छुपे हीरे' स्तम्भ के अंतर्गत बद्री अहीर पर दुर्गेश कुमार, पीर अली पर उमर अशरफ, नक्षत्र मालाकार पर अरुण नारायण, बत्तख मियां पर डॉ आरिफ, केशरी राम पर अंगद किशोर, जुब्बा सहनी पर रामनरेश यादव, रामफल मंडल पर रामानंद मंडल, रामस्वरूप देवी पर प्रियंका प्रियदर्शिनी सहित सभी लेख शोधपरक हैं। यह बेहद महत्वपूर्ण सामग्री है। भविष्य के शोध कताओं के लिए यह लेख संग्रहणीय हैं। संपादक ने अपने आखिर के पृष्ठों का उपयोग बहुत सुंदर ढंग से किया है। आवरण के पीछे के हिस्से में एक तरफ नागार्जुन की एक महत्वपूर्ण कविता है और दूसरी तरफ मशहूर अफ्रीकी लेखक और विचारक चिनुआ अचीबी की यह अमर पंक्तियां उद्धत हैंः

'जब तक हिरन अपना इतिहास खुद नहीं लिखेंगे तब तक हिरणों के इतिहास में शिकारियों की बहादुरी के किस्से गाये जाते रहेंगे।'

देश और दुनिया भर के उत्पीड़ित समाजों के लिए यह बहुत बड़ा संदेश है। पत्रिका का यह प्रयास अच्छा है। सवाल स्तरीय कंटेंट के साथ इसके प्रकाशन की निरंतरता का है। संपादक और प्रकाशक, दोनों बधाई के पात्र हैं।

उर्मिलेश

(अपनी फेसबुक वाल पर) चर्चित पत्रकार, दिल्ली।

सारगर्भित अंक

राजद समाचार का 13वां अंक बेहद संतुलित और सारगर्भित है। तीन भागों में संकलित इस पत्रिका का पहला भाग 'जश्न ए आजादी का 75वां साल' बेहद महत्वपूर्ण है। प्रकाश चन्द्रायन, कमलेश वर्मा, प्रीति सिन्हा, राजू रंजन प्रसाद, आनंद बिहारी, संजीव चंदन, डॉ.सीमा, मनोरमा आदि लेखकों ने बिहार पर अपने तरीके से हस्तक्षेप किया है। इनके विचार बिहार के सामाजिक, राजनीतिक बदलावों को धारावाहिकता में सामने लाता है। 'जंग ए आजादी के छुपे हुए हीरे, ऐसे गुमनाम नायकों से हमारा परिचय करवाता है जिसकी कोई चर्चा इतिहासकारों ने अब तक नहीं की। यह खंड राजद समाचार का सबसे बेहतरीन और धारदार खंड है। बद्री अहीर, पीर अली, बत्तख मियां, केशरीराम चंद्रवंशी,जुब्बा साहनी,रामफल मंडल, बहुरिया रामस्वरूप देवी, नक्षत्र मालाकार, और सूरज नारायण सिंह सरीखे नायकों को बहुत करीने से उभारा गया है। राजद समाचार की यह पहल बहुत सार्थक, प्रभावी और मजबूत हस्तक्षेप है, जिसे हमेशा याद किया जाएगा।

पार्टी गतिविधियां खंड भी महत्वपूर्ण है। लेखक डॉ. दिनेश पाल ने महंगाई और साम्प्रदायिकता के खिलाफ महागठबंधन के प्रतिरोध मार्च पर अच्छी रिपोर्टिंग की है। राजद समाचार के इस संस्करण का अंतिम पन्ना जोतीराव फुले के हवाले से कहता है-'स्कूल की घंटी बजती है तो ये संदेश देती है कि हम तर्कपूर्ण ज्ञान और वैज्ञानिकता की ओर बढ़ रहे हैं।' राजद समाचार अपने इस अंक के साथ लगातार ज्ञान, वैज्ञानिकता और सामाजिक न्याय की ओर बढ़ता दिख रहा है। आने वाले अंक में पार्टी की गतिविधियों को और जगह दी जाए साथ ही सामाजिक न्याय और जनपक्षधरता रखने वाले विचारकों लेखकों का एक लिस्ट तैयार की जाए तो राजद की वैचारिकी को धार मिलेगी।

डॉ. रामानुज यादव

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, राजेन्द्र कॉलेज छपरा

संग्रहणीय अंक

यह अंक आजादी के मूल तत्व और लोकतांत्रिक मूल्यों को आम जनों के सामने रखने का काम करता है। 'जंग-ए-आजादी के छुपे हीरे' खंड में शामिल सभी आलेख पठनीय हैं। वे हमें इतिहास के अनछुए पहलुओं से रू-ब-रू कराते हैं। हमारे ही बीच के नायकों को प्रस्थापित करते हैं। जिसे आज तक हमसे छुपाया गया था। महंगाई और संप्रदायिकता के खिलाफ महागठबंधन के बिहार के विभिन्न जिलों में हुए प्रतिरोध मार्च पर डॉ दिनेश पाल की रिपोर्ट पठनीय है। यह 'पत्रिका' पत्रकारिता के संकीर्ण होते दायरे को एक विस्तार देने की पुरजोर कोशिश कर रही है। यह आम जनों की आवाज बनकर तेजी से उभर रही है। वर्तमान दौर में जिस तरह से पत्रकारिता के मूल्यों का ह्रास हुआ है उसे यह पाटने की भरपूर कोशिश कर रही है। इस पत्रिका ने एक बार फिर से देश के राष्ट्रीय पटल पर समाजवादी, साम्यवादी और मंडलवादी विचारधारा को पुनर्स्थापित करने का प्रयास करती दिख रही है। आम जनों को वैश्वीकरण, भूमंडलीकरण, लोकतांत्रिक मूल्यों के ह्रास, उभरती समांती प्रवृत्तियों ,उग्र हिंदू राष्ट्रवाद के दुष्प्रभाव की ओर भी आगाह करता है। साथ ही लोगों को भारत के समृद्ध लोकतांत्रिक प्रक्रिया, धर्मनिरपेक्षता, विश्व बंधुत्व, पंचशील, सर्वधर्म समभाव, वसुधैव कुटुंबकम की विचारधारा को अपनाने की सलाह देती है।

इस पत्रिका में हमें सिर्फ एक कमजोरी दिखाई दी वह यह है कि देश और राज्य में घटने वाली महत्वपूर्ण घटनाओं के एक माह का समरी का ना होना है। अगर इसे शामिल किया जाए तो वह इसके पाठकों के लिए गागर में सागर के समान होगा और इससे अधिक से अधिक पाठक वर्ग जुड़ते जाएंगे।

गोपेंद्र कुमार सिन्हा गौतम

ग्राम देवदत्तपुर पोस्ट एकौनी, थाना दाऊदनगर,
जिला औरंगाबाद-824113

रिपोर्ट

हमारा लक्ष्य है 2024: तेजस्वी

राजद राज्य परिषद की बैठक

राजद राज्य परिषद् की बैठक में मंचस्थ नेतागण

'आर.एस.एस, संघ परिवार और विश्व हिन्दू परिषद् देश का पुराना दुश्मन है। 2024 में इन्हें उखाड़ फेंकना है। एक बड़ी चुनौती सामाजिक न्याय की जो वर्तमान स्थिति है उसको बचाये रखने की भी है। देश की सभी क्षेत्रीय पार्टियों ने दंगाई पार्टी के साथ समझौता किया, लेकिन मैं नहीं झुका, न झुकनेवाला हूं। मैं झुक जाता तो शायद जेल नहीं जाना पड़ता। पूरे मजबूती के साथ हम अपनी आइडियोलॉजी पर कायम हैं।'

ये बातें राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद ने गत 21 सितम्बर को पार्टी की राज्य परिषद की बैठक में कही। पार्टी कार्यालय के कपूर्री-लोहिया सभागार में आयोजित इस बैठक में बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री भोला पासवान शास्त्री की फोटो पर माल्यार्पण किया गया। डॉ. तनवीर हसन ने पार्टी के सदस्यता अभियान के बारे में विस्तार से बातें रखीं। इस मौके पर उन्होंने बिहार में पार्टी सदस्यता के बढ़ रहे अभियान पर रौशनी डाली और इसे और तीव्र करने की जरूरत पर बल दिया। इस मौके पर पार्टी के निर्वाचित प्रदेश अध्यक्ष श्री जगदानंद सिंह को लालू जी द्वारा प्रमाण पत्र भेंट किया गया।

श्री **लालू प्रसाद** ने कहा कि जब मैं बिहार का मुख्यमंत्री था तो गांव-गांव, झोपड़ी-झोपड़ी घुमता था। भूख लगती थी तो सड़क के किनारे जो दलितों का गांव होता था, वहां गाड़ी रोक देता था। गांव के गरीब घरों में जाता था। महिलाओं से पूछता था कि खाना है? खाना पकाई है? वे मुझे मकई की रोटी और उसके साथ सब्जी खिलाती थीं। हमने यूं ही नहीं उनके बीच अपना प्रभाव पैदा किया। इसके लिये कठिन परिश्रम किया और उनकी चिंताओं को सरकार की चिंता बनाया। उन्होंने पार्टी कार्यकताओं का आह्वान किया कि यह काम आप लोग भी कीजिए। देखिये कि अल्पसंख्यक, दलित लोगों को कोई दबा तो नहीं रहा। उनके साथ खड़ा होइए। तभी वह आपके साथ आएंगे।

गृहमंत्री के सीमांचल दौरे की चर्चा करते हुए लालू जी ने कहा कि अभी किशनगंज में अमित शाह आ रहे हैं। उनका इरादा ठीक नहीं है। उनका उद्वेश्य लोगों का आपस में लड़ाना रहा है। उन्होंने कहा कि ये वही भाजपा है जो मस्जिद पर चढ़कर भगवा झंडे फहराती है। और मस्जिद के बाहर हनुमान चालीसा का पाठ करवाती है। वे ऐसा करके देश को कम्युनलाइज बना रहे हैं ताकि देश में जो बढ़ती हुई महंगाई और बेरोजगारी है उसकी ओर लोगों का ध्यान न जाए। अपने कार्यकताओं को उन्होंने इनसे सजग रहने को कहा। नीतीश कुमार की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि वे अच्छा काम कर रहे हैं। हमसे ऐसे मसलों पर राय लेते रहते हैं। सन 2024 के लिए वह भाजपा को छोड़कर विपक्ष को एकजुट करने में लगे हैं। हमलोग जल्द ही सोनिया जी से भी इस मसले पर बातचीत करेंगे। 2024 में भाजपा की हार निश्चित है।

राजद के नव निर्वाचित प्रांतीय अध्यक्ष जगदानंद सिंह को बधाई देते हुए लालू प्रसाद ने कहा कि उनके नेतृत्व में पार्टी सुव्यवस्थित तरीके से आगे बढ़ रही है। वह पूरी ईमानदारी से पार्टी को आगे बढ़ा रहे हैं। कोई भी कार्यक्रम होता है तो वह मंच पर नहीं जाते हैं फिल्ड से उसका

आप 12 करोड़ बिहारियों की आकांक्षा के प्रतीक हैं

जगदानंद सिंह

राजद राज्य परिषद के आप सदस्यों की बदौलत ही पार्टी की नीतियां सरजमीं पर उतरी हैं। आप बिहार के 12 करोड़ जनता की आकांक्षाओं के प्रतीक हैं। आपकी ताकत यहां बैठे हुए हमारे सभी सम्मानित विधायक हैं। आप कोई व्यक्ति नहीं हैं, करोड़ों-करोड़ लोगों की आशा के केंद्र हैं। और सब की आशाओं के केन्द्र हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू जी बैठे हैं। शून्य से सरकार बनाने की स्थिति तक पहुंचने के बाद जनादेश का जो भी अपमानन हुआ, आपने उसे धैर्यपूर्वक कबूल किया। आपकी मिहनत को हम प्रणाम करते हैं। आगे जो कुछ सुधार होना है उसके नियामक आप ही हैं। आज सरकार बनी है आपकी बदौलत।

मैं यह कहना चाहता हूं कि सरकार कोई निर्जीव चीज नहीं है। यदि हम सजीव हैं भी तो अपनी नीतियों और सिद्धांतों को छोड़कर नहीं। इसके लिये तपस्या की है हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष ने। कभी-कभी हम लोगों का मन बहुत दुखी हो जाता है काश! इस देश की सामंती और धार्मिक उन्माद फैलाने वाली ताकतों ने लालू जी को कैदखाने में नहीं डाला होता तो जयप्रकाश जी की सम्पूर्ण क्रांति और लोहिया जी की सप्तक्रांति आज साक्षात पूर्ण हो गई होती। तेजस्वी जी, हम सरकार में सहयोगी हैं जरूर, लेकिन कमजोर लोगों की आशाओं के केंद्र भी हैं। नीतियों को छोड़कर हम केवल एक मशीन की तरह सरकार के अंग नहीं बन सकते। जनता के बीच हमने घोषणा पत्र जारी किया था। घोषणा पत्र कोई साधारण चीज नहीं होती है। वह जनता के बीच में प्रतिज्ञा होती है और उनके प्रति वफादारी दिखानी ही पड़ती है। समय कोई भी हो हम उससे विचलित नहीं हो सकते। रास्ता लम्बा है उससे आगे निकलना है। सदियों की शोषित, वंचित जनता जिनकी आंखों में आंसू हैं, जिनके सर पर कभी छाया नहीं, शरीर पर वस्त्र नहीं उन्हें जागृत करने वाले, जिन्दगी बताने वाले यही वे लोग हैं जिन्हें जागृत करने का काम लालू प्रसाद ने किया था, समाजवादी आंदोलन के सभी हमारे मनीषियों ने किया था और आपका यह शब्द, आपकी वचनबद्धता राजद के लिए याद रख लेना सामाजिक न्याय के बाद अब आर्थिक न्याय करना है। बाबा साहब आंबेडकर ने कहा था कि भारत को आजादी मिल गई लेकिन समतामूलक समाज आज तक नहीं बना। जबतक सम्पन्नता में हिस्सेदारी जबतक वंचित लोगों को नहीं मिलेगी आजादी हमेशा खतरे में पड़ी रहेगी।

आज लोकतंत्र खतरे में है। संविधान समीक्षा की बात उठ रही है। समीक्षा क्या है गरीबों के हाथ से कैसे ताकत छिन लिया जाए। कुछ लोग आजादी के समय भी सभी को वोट का अधिकार देने के पक्ष में नहीं थे। उस समय भी यह विशेषाधिकार प्राप्त लोग गरीबों के पक्ष में नहीं थे। आज भी कमोबेश स्थितियां उसी तरह की हैं। आज बिहार के स्कूल बंद हैं, कॉलेज बंद हैं, यूनिवर्सिटी बंद है, वे कारखाने बंद हैं, जहां मनुष्य का भविष्य गढ़ा जाता है। लोहिया जी का नारा रानी हो या मेहतरानी सभी की शिक्षा एक समान की क्या यह वचनबद्धता हमलोगों के लिए अब खतम हो गई? आज हमारे बच्चों की प्रतिभा तलाशी जा रही है। एकलव्य का अंगूठा काटने वाले लोग आज करोड़ों लोगों की प्रतिभा से खेल रहे हैं।

लालू जी द्वारा प्रांतीय अध्यक्ष का प्रमाणपत्र ग्रहण करते श्री जगदानंद सिंह।

उनके बच्चे महंगी फीस वाले स्कूलों में पढ़ते हैं। हमारे लोगों में प्रतिभा की कमी नहीं है। लेकिन उन्हें मौका नहीं मिल रहा। गांव के लोगों की प्रतिभा को अगर उभार दिया जाए तो हम दुनिया के सबसे उन्नत मुल्कों में शुमार होंगे। सरकार केवल सचिवालय में नहीं होती। जिस समय सचिवालय की सरकार बदलती है गांव के चौक-चैराहों तक आपके लोगों की ताकत बढ़ती है। हमारी कामना है सरकार चलाते हुए भी हम संघर्ष कर सकें और गरीबों की आंसुओं को पोंछने की ताकत राजद के हर एक कार्यकताओं की ताकत बने यही सदिच्छा हमारी आपकी होनी चाहिए। भूलना मत। हम में से यहां कोई बड़ा आदमी नहीं है।

एकता बहुत जरूरी है, लेकिन व्यक्तियों की एकता नहीं। यदि समाज और राज्य की एकता नहीं बनी, झोंपड़ियों में रहने वाले लोगों की आशा के केंद्र आप नहीं बने तो वह शासन की एकता बनकर रह जाएगी। कभी-कभी मैं इन बातों को कहता रहता हूं नौजवान साथी अपने में से 10 को आगे बढ़ाओ, सभी बड़े बन जाओगे। आप अकेले बड़े नहीं बन सकते। चुनौतियां बड़ी हैं। हमेशा हमें जन आकांक्षाओं का केंद्र बनाकर रखना होगा। जिन लोगों ने लाठी खाकर, जेल जाकर और भूजा खाकर परिवर्तन लाया था, हम लोग उन्हीं की वर्तमान धरोहर हैं। सत्ता में हुए परिवर्तन को आपको झोपड़ियों तक ले जाना है। यदि आनेवाली पीढ़ी को हमने समाजवाद नहीं सौंपा तो हम इतिहास के ऐसे गर्भ में चले जाएंगे जिसकी आप कल्पना नहीं कर सकते। राजद विधान और संविधान से चले इसकी कोशिश हमारी रहती है। हम बहुत कमजोरियों के शिकार हैं। बिहार की कमजोरियां भविष्य की कमजोरियां हैं भाईजान! झोंपड़ियों में रहनेवाले लोगों का मान न टूट जाए बिहार में आपको इसका उदाहरण पेश करना है। तेजस्वी जी आप पर गुरुतर भार है। आपको इतिहास की विरासत भी संभालनी है और भविष्य के लिए आपको ताकत भी बनानी है। मैं जानता हूं कि गरीबों को आगे बढ़ाने की वफादारी और प्रेम भावना के साथ ही इच्छाशक्ति है आप में। आप लगे रहिये पूरी ताकत के साथ कहीं भी समझौता करने की जरूरत नहीं है।

(राजद के नवनिर्वाचित प्रांतीय अध्यक्ष द्वारा समारोह में दिये गए भाषण का सम्पादित अंश)

नेतृत्व करते नजर आते हैं ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग बोल पाएं। उन्होंने कहा कि इस बार दौरा हो तो जगदा भाई भी घुमें। पार्टी जिलाध्यक्षों और निर्वाचन अधिकारियों को भी लालू जी ने बधाई दी। शरद यादव की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि शरद जी और मैंने मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू करवा। इसके बारे में पूरे देशभर में गरीबों को बतलाया।

सभा को वरिष्ठ समावादी नेता **शरद यादव** ने भी संबोधित किया। कहा कि यह अच्छा अवसर है कि मैं भी इसमें शरीक हो गया। वर्तमान राजनीतिक सिनेरियों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि जब-जब देश में संकट आया है, हर संकट में बिहार आगे आया है। जेपी का बड़ा आंदोलन यहीं से हुआ। आज देश एक बार फिर से बिहार की तरफ देख रहा है। उन्होंने कहा कि राजद राज परिषद का यह सम्मेलन एक बार फिर से देश को संकट से उबारने का काम करेगा। उन्होंने कहा कि तेजस्वी यादव बिहार के भविष्य हैं।

बिहार विधान परिषद् के उप सभापति **रामचंद्र पूर्वे** ने कहा कि तेजस्वी जी एवं नीतीश कुमार के नेतृत्व में जो विपक्षी एकता कायम हुई है पूरे देश में उसकी सराहना हो रही है। हम आशान्वित है कि विपक्ष की इस एकजुटता से 2024 में भाजपा का सफाया हो जाएगा। श्री पूर्वे ने कहा कि जिस तरह 90 के दशक में कमंडल की रथ को लालू जी ने रोकने का काम किया था, तेजस्वी जी उसे आनेवाले समय में एक बार फिर से दुहराएंगे। उन्होंने लालू जी के दीघार्यु होने की कामना की।

वरिष्ठ राजद नेता **उदय नारायण चौधरी** ने कहा कि आज देश की राजनीति करवट ले रही है इसमें मुख्य भूमिका तेजस्वी प्रसाद यादव की है। इन्होंने ही महागठबंधन बनाया जिसका पूरे देशभर में एक सकारात्मक संदेश गया। इनकी यह पहल राष्ट्रीय राजनीति को अपने तरीके से प्रभावित करेगी। इस अवसर पर जगदा बाबू के अध्यक्ष बनने पर उन्होंने उन्हें बधाई दी और लालूजी एवं शरद जी का अभिनंदन किया।

माननीय उप मुख्यमंत्री **तेजस्वी प्रसाद यादव** ने कहा कि मैं भोला पासवान शास्त्री को नमन करता हूं और प्रदेश अध्यक्ष चुने जाने पर जगदा बाबू को शुभकामनाएं एवं बधाई देता हूं। उन्होंने कहा कि हिन्दू-मुस्लिम, पुरुष-स्त्री, अगड़े-दलित सबके लिए काम करना है, सबका ख्याल रखना है। अगर हम सब को साथ न लेकर चलें तो ये गलत मैसेज जाएगा। हमारी पार्टी पहली ऐसी पार्टी है जिसने अपने संगठन में आरक्षण देने का काम किया। अपने कार्यकताओं को उन्होंने आगाह किया कि जब तक गरीबों को, जो कमजोर वर्ग हैं आप सीने से नहीं लगाइएगा, मान-सम्मान नहीं दीजिएगा सेकुलरिजम, सामाजिक न्याय का क्या मतलब रह जाएगा?

तेजस्वी जी ने कहा कि हमारी पार्टी विपक्ष में इतने साल से रही। हमने कहा था कि पार्टी को सत्ता में लाकर रहेंगे और हमने इसको लाया। महागठबंधन सरकार की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि बिहार विधानसभा की स्थिति देखिएगा तो 7 पार्टियां एक साथ खड़ी हैं। एक पार्टी भाजपा बड़का झूठा पार्टी है, वह दूसरी तरफ है। उन्होंने माना कि महागठबंधन बनने से पूरे देश में एक सकारात्मक संदेश गया है। इसके पहले विपक्ष के कुछ लोगों को डराया गया। कुछ डरे थे, कुछ सहमे थे। क्या-क्या षड्यंत्र नहीं रचा जा रहा था। मायूसी छायी हुई थी। बिहार में जो कुछ हुआ उससे देश भर में माहौल बना। लालू जी साम्प्रदायिक शक्तियों ने न डरे, न झुके। जो डरेगा वह मरेगा और जो लड़ेगा वह जीतेगा। बिहार में हमलोगों ने यह कर दिखाया। नीतीश कुमार की चर्चा करते हुए तेजस्वी ने कहा कि हम धन्यवाद देते हैं बिहार के मुख्यमंत्री जी का भी कि उन्होंने सही समय पर सही निर्णय लिया। जहां बीजेपी सत्ता में नहीं है, वहां सरकार बना लेती है। हमलोगों ने उन्हें सत्ता से बाहर करने का काम किया। जिसको डराना है उनके पीछ भाजपा ईडी, सीबीआई और इनकम टैक्स को छोड़ देती है और जिनको खरीदना है उनके लिए इंतजाम करते हैं। उनके पास तो किसी चीज की कमी है नहीं, आज पूरे देश में यही हो रहा है।

लालू जी की चर्चा करते हुए तेजस्वी जी ने कहा कि लालू जी हैं तभी आज हम इस स्थिति में पहुंचे हैं। चाहे उनको कितना भी सताया गया हो। वे अगर शारीरिक रूप से कहीं नहीं जाते हों तो इसका यह मतलब नहीं है कि वे काम नहीं करते। उनको राज्य और देश की उतनी ही चिंता है। जब वे छात्र नेता रहे, आंदोलन में जेल गए। आज जब घोषित इमरजेंसी लागू है तो हम आप लोगों को कहेंगे कि भाई 2024 की अगर हमलोगों को तैयारी करना है तो अपने संगठन को मजबूत करना पड़ेगा।तेजस्वी ने संगठन निर्माण और उसमें अनुशासन कायम रखने को लेकर विस्तार से चर्चा की। कहा कि कल राजद के जितने मंत्री थे उन सब लोगों को हमने बुलाया। उनके मंत्री बने एक महीना चार दिन हो गये था। मिलना भी चाहिए, समीक्षा करनी चाहिए। हमने सभी मंत्रियों को कहा कि जिला स्तर पर संगठन को मजबूत कीजिए। मंत्री को भी यह निदेशित किया गया है राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा कि जिला में अगर कोई हेड होगा तो वह जिलाध्यक्ष होगा। मंत्री हों या विधायक हों उन्हें जिलाध्यक्ष के पीछे रहना पड़ेगा। संगठन नहीं रहेगा तो पार्टी नहीं चलेगी। मंत्री अगर जिलाध्यक्ष को सम्मान दे रहा है तो आप समझ लीजिए सब लोगों की नजर जाएगी, लोग इससे अनुशासन सीखेंगे। भाजपा के सांगठनिक स्वरूप की इशारे से चर्चा करते हुए तेजस्वी ने माना कि जिनसे आपकी लड़ाई है वहां जाकर देखिये। उनके यहां कोई प्रभारी भी आता है तो सारे केंद्र के मंत्री उसके पीछे-पीछे रहते हैं। तो हमें इनसे सीखना है। महत्व हमको संगठन को देना है। पार्टी का जो ढांचा है उसमें न मंत्री होता है न एम.एल.ए होता है। पार्टी के स्ट्रक्चर में विधायक मंत्री भी सदस्य हैं यह आपको समझना पड़ेगा। आज जो मंत्री, विधायक हैं, पहले कार्यकर्ता थे इसका तो किसी को बुरा लगना ही नहीं चाहिए।

तेजस्वी ने संगठन में गणेश परिक्रमा करने वाले तत्वों को टारगेट करते हुए बतलाया पहले भी कहा था कि जो काम करेंगे उसको आगे बढ़ाएंगे। अब गणेश परिक्रमा करनेवाले लोगों से हम आग्रह करेंगे कि अभी भी हमको नहीं समझ पाये हैं तो समझ लीजिये अभी भी वक्त है। हमारे कंधों पर जिम्मेवारी मिली है तो हमारा लक्ष्य 2024 है। 40 में से 40 महागठबंधन के लोगों को चुनाव जिताएं। जबतक आप अपनी शक्ति पार्टी कार्यकताओं और पदाधिकारियों को को नहीं देंगे, तबतक आप अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकते। इस दिशा में हमलोग लगातार काम कर रहे हैं।

माननीय उप मुख्यमंत्री ने मीडिया को भी निशाने पर लिया। कहा कि भाजपा माइंडसेट का मीडिया सोच रहा था कि हुड़दंग होगा, लोगों को तंग करेगा, लेकिन शांति से सब कुछ हो गया। भाजपा को तो अत्ते-पत्ते नहीं लगा कि क्या हो गया। उन्होंने अपने कोर कार्यकताओं को नसीहत दी कि आप सबसे आग्रह है कि उछल-कूद एकदम नहीं करना है। शांति से काम करना है और लोगों को जोड़ना है। लोग तभी हमसे जुड़ेंगे। किसे जोड़ना है, अति पिछड़ा समाज को, दलित समाज को, अंतिम पायदान पर खड़े गरीबों को हमलोगों को जोड़ने का काम करना

तीव्र होता राजद का सांगठनिक विस्तार

डॉ. तनवीर हसन

राष्ट्रीय निर्वाचन पदाधिकारी श्री उदय नारायण चौधरी द्वारा 12 फरवरी 2022 को मुझे सांगठनिक चुनाव वर्ष (2022-2025) के लिए राज्य निर्वाचन पदाधिकारी मनोनीत किया गया था। मेरे साथ सहयोग के लिए ई. अशोक यादव, देवकिशुन ठाकुर और श्रीमती सारिका पासवान को राज्य का सहायक निर्वाचन पदाधिकारी बनाया गया। राष्ट्रीय कार्यकारिणी द्वारा लिए गये निर्णय के अनुसार गत 12 फरवरी 2022 को राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री लालू प्रसाद यादव जी द्वारा सघन सदस्यता अभियान की शुरूआत की गई। सदस्यता अभियाना को सघन बनाने के लिए पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री जगदानंद सिंह जी के द्वारा पार्टी के वरिष्ठ साथियों को जिला की जिम्मेवारी दी गई। पार्टी द्वारा निर्धारित प्रत्येक बूथ पर कम-से-कम 4 क्रियाशील सदस्य बनाने की लक्ष्य प्राप्ति हेतु पार्टी के वरिष्ठ नेता प्रदेश अध्यक्ष श्री जगदानंद सिंह के मार्गदर्शन में पार्टी द्वारा चलाये गए सदस्यता अभियान को आंदोलन का रूप दिया गया, जिससे पार्टी नेताओं और कार्यकताओं का भरपूर सहयोग मिला।

पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री लालू प्रसाद जी के चमत्कारिक नेतृत्व और समाज के कमजोर वर्गों-खासकर दलितों, महादलितों, पिछड़ों-अति पिछड़ों और अल्पसंख्यकों के बीच इनकी लोकप्रियता और स्वीकार्यता के साथ उप मुख्यमंत्री युवा नेता श्री तेजस्वी प्रसाद यादव के प्रभावकारी नेतृत्व क्षमता से प्रभावित होकर बड़ी संख्या में युवाओं का रुझान राजद के सदस्य बनने में परिलक्षित हुआ। जिसकी वजह से पिछले सांगठनिक सत्र की तुलना में इस बार पार्टी द्वारा निर्धारित एक करोड़ पांच लाख से अधिक सदस्य बनाये गए। जिसमें से आधा से ज्यादा संख्या युवाओं की है। इस बार राजद के सदस्यता अभियान में बड़ी संख्या में महिलाओं ने राजद की सदस्यता ग्रहण की। जिन वर्गों एवं समुदायों की भागीदारी आमतौर पर कम होती थी उनके बीच भी राजद की लोकप्रियता देखने को मिली और बड़ी संख्या में उन लोगों ने भी उत्साह के साथ राजद की सदस्यता ग्रहण की। पार्टी संविधान में किये गए संशोधन के अनुसार इस बार प्रारंभिक कमिटी का गठन बुथ स्तर पर किया गया। पिछले सत्र में किये गए प्रयोग का सकारात्मक परिणाम देखते हुए इस बार के सांगठनिक चुनाव में प्रारंभिक सदस्यों एवं क्रियाशील सदस्यों की सूची बूथ, पंचायत एवं प्रखंडवार क्रमिक रूप से जिल्दबंद करना अनिवार्य कर दिया गया था। जिसकी वजह से निर्धारित प्रक्रिया में भले ही कुछ विलंब हुआ हो परंतु इससे बुथवार क्रियाशील एवं प्राथमिक सदस्यों की सूची संकलित हो चुकी है।

जिला स्तर तक का चुनाव कराने के लिए पार्टी के सभी 50 सांगठनिक इकाईयों के लिए जिला निवार्ची पदाधिकारी एवं सहायक जिला निर्वाचन पदाधिकारी का मनोनयन किया गया। इसमें आधी हिस्सेदारी महिलाओं को दी गई है। जिस जिला के निर्वाचन पदाधिकारी पुरुष थे वहां सहायक जिला निर्वाचन पदाधिकारी महिलाओं को बनाया गया। इसी प्रकार जिस जिला के निर्वाचन पदाधिकारी महिला साथी थीं, वहां सहायक जिला निर्वाचन पदाधिकारी के रूप में पुरुष साथी को मनोनीत किया गया। संगठन के इस चुनावी अभियान में महिला साथियों

की भूमिका काफी सराहनीय रहा। उन्होंने तत्परता के साथ अपनी जिम्मेवारियों का निर्वहन किया। चुनाव को पार्टी संविधान के अनुरूप पारदर्शी तरीके से सम्पन्न कराने हेतु जिला निर्वाचन पदाधिकारियों एवं सहायक जिला निर्वाचन पदाधिकारियों की दो बार बैठक आयोजित की गई जिसमें प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह, मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी उदय नारायण चौधरी एवं सहायक राष्ट्रीय मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी चितरंजन गगन द्वारा उन्हें चुनावी प्रक्रिया के संबंध में प्रशिक्षित किया गया।

पार्टी संविधान में किये गए प्रावधान के अनुरूप अनुसूचित जाति/जन जाति एवं अति पिछड़ा वर्ग के लिए क्रमशः 17 प्रतिशत एवं 28 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था का पूर्ववत अनुपालन किया गया। पूर्व घोषित कार्यक्रमों में राष्ट्रीय निर्वाचन पदाधिकारी द्वारा किये गए आंशिक संशोधन के उपरांत 16 सितम्बर 2022 तक प्रारंभिक इकाई (बूथ कमिटी) से लेकर जिला स्तर तक के चुनाव सम्पन्न करा लिया गया। जिला पंचायतों और प्रखंडों में निर्धारित लक्ष्य को पूरा नहीं करने के कारण चुनाव नहीं लिया गया। जिन पंचायतों और प्रखंडों में निर्धारित लक्ष्य के पूरा नहीं करने के कारण चुनाव नहीं हुए हैं वहां निर्धारित लक्ष्य प्राप्ति के बाद चुनाव कार्य कराये जाएंगे। निर्धारित तिथि के अनुसार राज्य के कुल 534 प्रखंडों में 508 प्रखंडों, 3320 वार्डों और 8410 पंचायतों में चुनाव कार्य सम्पन्न हो चुका है। सभी जिलों से राज्य परिषद के कुल 243 सदस्यों का चुनाव हो चुका है। जिला स्तर पर चुनाव हो जाने के बाद 17 सितम्बर 2022 को राज्य परिषद के सदस्यों की सूची का तदर्थ प्रकाशन किया गया। 18 सितम्बर 2022 को सदस्यता से संबंधित आपति प्राप्त करने के पश्चात उसका निराकरण करते हुए राज्य परिषद के सदस्यों की अंतिम सूची प्रकाशित कर दी गई। घोषित कार्यक्रम के आलोक में 19 सितम्बर 2022 को प्रदेश अध्यक्ष पद के लिए नामांकन लिया गया। इसके लिए पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री जगदानंद सिंह द्वारा नामांकन पत्र दाखिल किया गया। इस पद हेतु किसी और द्वारा नामांकन नहीं किया गया। 20 सितम्बर 2022 को उन्हें राजद के अध्यक्ष पद हेतु निर्वाचित करने संबंधी अधिसूचना जारी की गई। इसलिए राजद के प्रदेश अध्यक्ष के निर्वाचन हेतु आयोजित आज के नवगठित राज्य परिषद की इस बैठक में श्री जगदानंद सिंह को विधिवत रूप से राजद, बिहार का अध्यक्ष निर्वाचित घोषित किया जाता है और इन्हें प्रमाण पत्र प्रदान किया जाता है।

(राज्य निर्वाचन पदाधिकारी, राजद बिहार द्वारा समारोह में पढ़े गए पर्चे का अंश।)

राजद राज्य परिषद् की बैठक में शामिल नेतावृंद

है। मुसलमानों, दलितों में जितने लोग हैं सब लोगों को जोड़ना है, जुड़ेंगे कब जब आपका व्यवहार अच्छा होगा। जब आप कुर्सी छोड़कर उसको पहले बैठाएंगे तभी लोग आपसे जुड़ेंगे। हम सब लोगों का यही लक्ष्य है। आप लोग जाइए दलितों के टोले में लोगों को जोडिए। 90-95 वाली जो स्थिति थी, उस तरह का माहौल बनाइए। सबको जोड़िए। हम जानते हैं कमंडल के सामने मंडल आया, कहां फेंका गए लोग? तेजस्वी ने माना कि आज कहीं-न-कहीं से समाजवादी विचारधारा को खतम करने का भाजपा प्रयास कर रही है। बिहार के समाजवादियों ने लोगों के मन में एक उम्मीद पैदा की है कि भाजपा का कोई अगर इलाज है तो वह समाजवाद है, सामाजिक न्याय है। हम सब लोगों को मजबूती के साथ इस दिशा में काम करना पड़ेगा। हम सभी लोगों को यही कहेंगे कि हुड़दंग एकदम नहीं मचाइये, दबंगई एकदम नहीं दिखाइए। अपने व्यवहार में, जो शारीरिक भाषा और बॉडी लैग्वेज है उसमें भी अपनापन दिखाने की कोशिश कीजिए। आप अड़ कर खड़ा रहिएगा, झुकिएगा नहीं तो भाई कबीर की बात करते हैं न कितना भी बड़ा हो खजूर का पेड़ वह छाया नहीं देता है।

तेजस्वी ने स्पष्ट घोषणा की कि कबीर जी को याद कीजिए, रैदास जी को याद कीजिए, जो संतगुरु थे। उनके दोहे में सारी बातें हैं। आप सब के बीच प्रस्ताव रखना चाहते हैं आप सबसे अपील है हमलोग पार्टी के हर पोस्टर, बैनर में कबीर, रैदास का फोटो लगाएंगे। गांजी, आंबेडकर, लोहिया, कपूर्री जी का लगाते रहे हैं। हम लोगों का कहीं भी कार्यक्रम हो आगे से कबीर और रैदास का चित्र लगाने का काम करेंगे। इनका चेहरा सामने होगा तो आपको एहसास तो होगा कि आपको करना क्या है?

तेजस्वी जी ने बिहार में रोजगार दिये जाने के अपने वायदे का भी जिक्र किया। कहा कि अभी 40 ही दिन हुआ है 5 हसा हुआ है। रोजगार देने का हमारा जो कमिटमेंट था कल से हमने वह काम शुरू कर दी है। आज भी विभागवार समीक्षा हुई। जितने रिक्त पद हैं भरा जाएगा। अपने स्वास्थ्य विभाग में ही हम लगभग डेढ़ लाख जॉब देने का काम करेंगे। हर कैबिनेट में सबसे ज्यादा स्वास्थ्य विभाग का प्रपोजल आता है। इससे अस्पताल भी बेहतर होगा, लोगों को सुविधा भी होगी, इलाज भी होगा। सारी चीजें होंगी बिहार में यही तो है आर्थिक न्याय। नौकरी दिया जाएगा, रोजगार दिया जाएगा। भाजपा को टारगेट करते हुए तेजस्वी ने कहा कि उसको तो महंगाई नजर ही नहीं आती है। भाजपा कहती है महंगाई कहां है? बताओ प्याज की माला लेकर छाती पिटते रहे क्या-क्या बोलता था आज महंगाई पर बात नहीं करेंगे, नौकरी पर बात नहीं करेंगे बिहार को विशेष राज्य का दर्जा नहीं देंगे। होम मिनस्टिर आएंगे, कहीं भी जाएंगे। आइए आपका स्वागत है, लेकिन बिहार की 12-13 करोड़ जनता को बताइए भैया बिहार को विशेष राज का दर्जा कब मिलेगा? जो प्रधानमंत्री ने घोषणा की वह काम कब करोगे। उन लोगों का मन काम में लगता ही नहीं है। बेकार की चीजों में लगे रहते हैं, झंझट पैदा करने में लगे रहते हैं, समाज में जहर बोने में लगे रहते हैं। समाज को तोड़ने का प्रयास किया जाता है।

बिहार में हाल ही घटित घटना की चर्चा करते हुए तेजस्वी ने कहा कि ये क्या हुआ भाई बेगूसराय में? क्या प्रयास किया जा रहा था दिखाने का? रात भर में भाजपा के जाते ही कौन-सा फामुर्ला है भाई? क्या हालत है तो उसमें हम सब देखिये भाई आप सब लोग सावधानी भी रखना और वैसे लोगों को प्रोटेक्ट भी करना। आपके कंधों पर भारी जिम्मेवारी है। हम कह दे रहे हैं समाज में अगर कोई तनाव पैदा करना चाहेगा तो यह आप लोगों की जिम्मेवारी है, समाज में तो तरह-तरह के लोग रहते ही हैं, वह तो चाहेगा ही कि कुछ उधर से गड़बड़ हो ताकि उन्हें मौका मिले कुछ करने का। सावधान रहिये, तैनात रहिये और कहीं भी शांति का वातावरण पैदा करने में अपना योगदान दीजिए। विपक्षी एकता की चर्चा करते हुए तेजस्वी जी ने अपने कार्यकताओं का आह्वान किया कि 9-10 को दिल्ली चलना है तालकटोरा में बड़ा अधिवेशन है। पार्टी ने निर्णय किया है कि इस बार हमारा अधिवेशन दिल्ली में होगा। वहां से ललकारा जाएगा। जो सक्षम लोग हैं वे लोग भी व्यवस्था करा लें। चलिये 10 को तालकटोरा में ताल ठोका जाए, सभी पक्ष के लोगों को संदेश दिया जाए कि भाई एकजुट होकर फिरकापरस्त शक्तियों को बाहर कीजिए। हमको संविधान चाहिए, हमको लोकतंत्र चाहिए। तेजस्वी जी ने कहा कि 2024 में हमलोगों को जीतना है। यह जंग जीत गए तो सब कुछ ठीक हो जाएगा। परेशान किसान, मजदूर और किसानों को राहत मिलेगी।

समारोह का मंच संचालन चितरंजन गगन ने किया और धन्यवाद ज्ञापन देवकिशुन ठाकुर ने किया। समारोह को शिवानंद तिवारी ने भी संबोधित किया। इस मौके पर देवेंद्र प्रसाद यादव, अब्दुल बारी सिद्दिकी, कांति सिंह, शिवचंद्र राम, समीर कुमार महासेठ, आदि नेताओं सहित पार्टी के तमाम विधायक और विधान पार्षद उपस्थित रहे।

बिहार विधानसभा में सरकार के विश्वास मत पर उप मुख्यमंत्री का भाषण

बिहार में लोकतंत्र को भाजपा के कदमों पर कुचलने नहीं देंगे

उपाध्यक्ष महोदय, आपको सबसे पहले धन्यवाद देते हैं कि आज माननीय मुख्यमंत्री जी के प्रस्ताव पर आपने मुझे बोलने का मौका दिया और माननीय नीतीश कुमार जी, जो सदन के नेता हैं, ने जो प्रस्ताव रखा है उसके हम समर्थन में हैं। आज सब लोग चर्चा कर रहे हैं, विश्वास मत की, आखिर आवश्यकता क्यों पड़ी, इसको समझने के लिए भाजपा का जो कुचक्र है, उसका जो अविश्वास है उसको समझने की जरूरत है। पूरे देश में जो माहौल है, वह क्या है? हर राज्य चले जाइए, जहां विपक्ष की सरकार है या जहां-जहां बीजेपी हारती है या बीजेपी जिससे-जिससे डरती है वहां ये सी.बी.आई., ई.डी और इनकम टैक्स को आगे कर देते हैं। अब यह बात तो साबित हो गया कि आदरणीय नीतीश कुमार जी ने जो ऐतिहासिक और एक निडर निर्णय लिया है वह देशहित में है, बिहार के हित में है, लोकतंत्र को बचाने के लिए है, संविधान को बचाने के लिए है। आज के माहौल में शायद ही ऐसा हिम्मत और दिलेरी कोई दिखाता है? और हम तो अपने राष्ट्रीय अध्यक्ष आदरणीय लालू जी, जो कि हमारे पिता हैं, को धन्यवाद देते हैं कि दोनों नेताओं ने समय के मुताबिक लोगों की मांग पर कि जितने देशभर में समाजवादी लोग हैं उनको अब एक होना पड़ेगा और लालू जी को तो आप लोग सबलोग जानते हैं कितना भी दबाया गया, झुकाने का प्रयास किया गया, डराने का प्रयास किया गया, वे कभी भी साम्प्रदायिक शक्तियों के आगे घुटना नहीं टेके।

अब वाद-विवाद चल रहा है। अभी हमको सूचना मिली कि कुछ गोदी पत्रकार मीडिया जो कि दिन-रात टी.टी.एम. का काम करती है, एक पार्टी के लिए उसमें चलाया गया कि तेजस्वी का मॉल है, गुरुग्राम में सेक्टर-71 में है, बड़ी अच्छी बात है खूब छापा मारिये, मॉल से हिलिये ही मत, कहीं मत जाइए, दिन-रात वहीं सोइए, लेकिन कम-से-कम देश की जो सबसे बड़ी जांच एजेंसी है, दुर्भाग्य देख लीजिए कैसे जांच कर रही है, जो मेरा है ही नहीं जबरन जो है मेरा नाम लिया जा रहा है। उस मॉल का नाम क्या है, अर्बन क्यूब प्रोजेक्ट उसका नाम है। अर्बन क्यूब, हम पता करवाये कि कंपनी का डिटेल निकालो, उस मॉल का डिटेल निकालो, तो जब डिटेल निकला तो पता चला कि एक डायरेक्टर है इसमें कृष्ण कुमार करके जो कि आपके भिवानी हरियाणा के रहने वाले हैं, ये उसमें डायरेक्टर हैं और हम तो बाकायदा पूरी कंपनियों का कागज लेकर आये हैं डिटेल लेकर आये हैं, अब सी.बी.आई. अच्छा है कि वहां पहुंच गई है छापे मार रही है, हमको जो जानकारी मिली है कि इस मॉल का उद्घाटन या कंपनी का शुभारंभ जो है एक भाजपा के सांसद ने ही किया है, अच्छी बात है तो ये एक नैरेटिव पेश किया जा रहा है, एक एजेंडा पेश किया जा रहा है। मतलब मेरे ट्वीटर हैंडिल पर भी देखिएगा मतलब आप भाजपा के साथ रहिएगा हाथ मिला लीजिएगा तो राजा हरिश्चन्द्र बन जाओगे और हाथ नहीं मिलाइएगा तो भ्रष्टाचारी, क्रिमिनल, रेपिस्ट और पीछे

ई.डी.,सी.बी.आई., इनकम टैक्स को लगा दिया जाएगा। अब आप बताइए कि पूरे तरीके से बेबुनियाद आरोप हमलोगों पर लगाया गया, कैरेक्टर हमलोगों का खराब किया गया।

2017 में भी हम पर मुकदमा हुआ, वह तब की बात है जब मेरी मूंछ नहीं थी, उस मुकदमें में क्या हुआ, क्या निकला कुछ तो बताइये और एक नयी चीज आप फिर लेकर आ गये हैं। अब ये आई.आर.सी.टी.सी. का मामला, नौकरी-जमीन का मामला आपलोग भूल गये क्या। देश के पहले रेल मंत्री लालू जी हैं जिन्होंने घाटे के रेल को मुनाफे के रेल में बदलने का काम किया, 90 हजार करोड़ का मुनाफा लालू जी ने दिया। हार्वर्ड से लेकर एन.सी.आर. तक यूनिवर्सिटी के लोग जो प्रमुख यूनिवर्सिटी हैं उनके छात्र लोग आये और लालू जी को मैनेजमेंट गुरु के नाम से जाना गया। आज देखिये क्या हो रहा है देश में, कितना न्याय कर रहे हैं ये लोग कि जो घाटे के रेलवे को मुनाफे में देगा उस पर मुकदमा हो रहा है और जो रेलवे को बेच देगा, देश की संपत्ति को बेच देगा उसका कुछ नहीं होगा। देखिये हम पर लुक आउट नोटिस लगता है, जब हम विदेश हनीमून पर जाते हैं तो लुक आउट नोटिस लगा हुआ था, लेकिन ललित मोदी जी, नीरव मोदी जी, विजय माल्या, मेहूल चैकसी, नीरव मोदी पर कोई लुक आउट नहीं था जो लाखों-हजारों करोड़ रुपये लेकर भाग गये। आज कोई नाम क्यों नहीं लेता मेहूल चैकसी का, नीरव मोदी का, कहां गये ये लोग? मतलब जितने चोर और बेईमान हैं और जितनी देश भर की संपत्ति है वह तेजस्वी की है, यही कहना चाह रहे हैं?

क्या बात है, अगर ऐसी बात है तो सबको बराबर-बराबर लैंड डिस्ट्रीब्यूट कर दीजिये पूरे देश की जनता को, दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा मतलब कहां जो है, हमलोग लेकर के जा रहे हैं। एक बात को आप लोगों को समझना पड़ेगा क्या हुआ 10 लाख करोड़ रुपया इनके मित्र, पूंजीपतियों का लोन माफ कर दिया जाता है, कर्जा माफ कर दिया जाता है और देश के आम लोगों पर जी.एस.टी. 5 परसेंट लगाकर फूड पर बोझ बढ़ा दिया जाता है, किसानों का कर्ज माफ नहीं करते हैं तो वे लोग कहां हैं, किसका माफ हुआ, कौन किया इस पर जांच होनी चाहिये कि नहीं होनी चाहिये। खैर ये सारी बातें अलग हैं ये तो सब लोग जानते हैं कि समाज में समानता, बराबरी, शांति, भाईचारा और सौहार्द बनाने की कीमत मेरा परिवार, मेरे रिश्तेदार, मेरी बहनें, हम खुद और मेरे पिता भुगत रहे हैं। लेकिन आप एक बात समझ लीजिये, हमलोग समाजवादी लोग हैं। समाजवादी राजनीति के अंश और वंश हैं, हमलोग डरने वाले लोग नहीं हैं कि आपलोग डराइएगा और हमलोग डर जाएंगे। हमलोग बिहार के लोग हैं, दिल्ली में बैठे हुए लोगों को बिहार समझ में नहीं आ रहा है। हमलोगों को अगर डरा कर धमकाने की कोशिश की जाएगी तो समझ जाइये कि बिहारी जो है डरने वाला नहीं है। लोग सवाल पूछते थे...(व्यवधान)।

महोदय, पत्रकार लोग हमसे सवाल पूछते थे कि ये कैसे हुआ तो हमने पत्रकार भाइयों को बोला कान पकड़ के, हाथ जोड़ करके जैसे महाराष्ट्र में खेला हुआ वैसे बिहार में नहीं हुआ। जो झारखंड में देखा, अन्य राज्यों में देखा, मध्य प्रदेश में देखा, क्या देखा हमलोगों ने? मतलब एक ही फार्मूला है भाजपा का कि जो डरेगा उसको डराओ, जो नहीं डरेगा उसको खरीदो। हम तो धन्यवाद देना चाहते हैं आप समझिये कि महाराष्ट्र में जितने पॉलिटिकल लोग हैं...(व्यवधान)...उपाध्यक्ष महोदय, यहां इस सदन में ज्यादातर लोग गरीब परिवार से चुन कर आते हैं। कोई किसान का बेटा यहां चुनकर आया है, कोई मजदूर का बेटा यहां चुन करके आया है, कोई पशुपालक का बेटा चुन करके आया है...(व्यवधान) कोई पिछड़ा परिवार का, कोई अति पिछड़ा परिवार का, जिसकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है...

उपाध्यक्ष महोदय, हम धन्यवाद देना चाहते हैं-सभी सदस्यों को कि कितना भी यहां कोशिश करने का प्रयास किया गया हो, हम लोग देख रहे थे न कि आपके राष्ट्रीय अध्यक्ष लोकतंत्र की जननी में आकर के क्या बयान दे रहे थे कि रीजनल्स पार्टी को खत्म कर देंगे, अपोजिशन को खत्म कर देंगे। इसका मतलब क्या है रीजनल्स पार्टी कौन है और यहां आदरणीय नीतीश कुमार जी को किस तरह से तंग किया जा रहा था, जनता दल यूनाइटेड को तोड़ने का क्या-क्या प्रयास किया जा रहा था, समाजवादी राजनीति को किस प्रकार से खत्म करने की साजिश की जा रही थी तो हमलोगों के पास उपाय क्या था? हमलोगों के पास उपाय था कि देश को हमलोग मिटने नहीं देंगे, टूटने नहीं देंगे, समाजवादी राजनीति को खत्म नहीं होने देंगे और हम लोगों के पुरखे, हम लोग समाजवादी लोग हैं, एक ही परिवार के लोग हैं- हमलोग जो खेत जोते हैं उसमें आप लोग फसल उगाने का काम कीजिएगा, जो समाजवादी विरासत है, जो हमारे पुरखों की विरासत है वह हमारे पास ही रहेगी और किसी के पास नहीं जाने वाली। यह एक बात समझ जाइये।(व्यवधान)...

उपाध्यक्ष महोदय, यह बिहार है यहां धमकाने से काम नहीं चलेगा, जो विभाजनकारी लोग हैं उनको रोकने के लिये जो देश में गंगा, यमुना तहजीब, भाईचारा जो बिगाड़ना चाहते थे, आप लोग जो सामाजिक, धार्मिक तनाव बढ़ाना चाहते थे उसको देखते हुए हम लोगों ने सभी प्री-पोल महागठबंधन के अलायंस के सभी पार्टनर चाहे सी.पी.आई. हो, सी.पी.एम. हो, माले के लोग हों, कांग्रेस के लोग हों और हम आर.जे.डी. के सभी लोगों ने नीतीश कुमार जी के निर्णय की सराहना ही नहीं बल्कि हम यह कह देना चाहते हैं कि हम लोग मजबूती के साथ इनके साथ खड़े हैं। क्या कह रहे थे तारकिशोर जी, बोल रहे थे कि रन आउट, रन आउट आप तो खेले नहीं हम तो कई बार खेलकर अपना पैर भी तोड़वा लिये। मेरा जो लिगामेंट है ऐंकल का वह टूटा है। एक बार कोई आउट होता है तब न कोई दूसरा इनिंग खेलता है, लेकिन एक बात अच्छे से समझ जाइये कि हमलोग क्रिकेटर हैं और ये जोड़ी जो है न ये धमाल मचाने वाली है। आप यह भी सुने होंगे...(व्यवधान) बैठ जाइये, बैठिये न। ये इनिंग जो होगी न नेवर एंडिंग इनिंग खेला जाएगा, सबसे ऐतिहासिक। मतलब एक रिकॉर्ड बनेगा लंबे इनिंग का, हम लोगों का जो पार्टनरशिप होगा बिहार के हित में, देश के हित में ये इनिंग लंबा होगा। अब कोई रन आउट होने वाला नहीं है, ये एक बात समझ जाइये। लेकिन आप लोग क्या कर रहे थे, इतना बढ़िया तरीके से हमारे अभिभावक विजय चौधरी जी ने आप लोगों को समझाया अगर अभी भी आप लोगों को समझ नहीं आ रहा है तो इसमें कोई क्या कर सकता है और आप लोगों को तो आत्ममंथन करने की जरूरत है अभी क्या-क्या आप लोग आरोप लगा रहे थे...(व्यवधान)...

यहां बाराती लेकर आ गये, दूल्हा है ही नहीं, अभी तक तय ही नहीं है, गजब है। आप लोगों को एक बात हम कह दें हमको सत्ता पाने का कोई मोह नहीं है। बात सुनिये, हम दो बार उप मुख्यमंत्री बने और एक बार नेता प्रतिपक्ष 5 साल के लिए बने और पूरे देश में शायद ही ऐसा कोई भाग्यशाली होगा जिसके माता-पिता मुख्यमंत्री भी रहे और नेता विरोधी दल भी रहे। एक बात समझ जाइये कि जो संदेश बिहार की जनता ने, माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी ने पूरे देश के अपोजिशन को देने का काम किया है, देश के लोगों को एक उम्मीद देने का काम किया है। आदरणीय लालू जी ने जो साथ दिया और हम कह सकते हैं कि उन लोगों के लिए एक बात है कि भैया जो लोग डरेगा वह लोग मरेगा और जो लोग लड़ेगा

वह जीतेगा। हम लोगों का क्या काम है, हम लोगों की तो यही चाहत है कि बिहार आगे बढ़े, तरक्की करे, देश आगे बढ़े, प्रगति करे, लेकिन आप लोगों की डिजाइन तो सब लोग जानते हैं क्या-क्या आप लोग रणनीति बनाते रहते हैं, हर जगह कब्जा करना है, सौहार्द को बिगाड़ना है, आपसी भाईचारे को भंग करना है। हम सब लोग एक ही परिवार के लोग हैं, सामाजिक न्याय, धर्मनिरपेक्षता, हमारी विचारधारा है।

आप लोग एक बात समझ जाइये कि बिहार के लोकतंत्र का जो ढांचा है न उसको भाजपा के कदमों पर कुचलने नहीं देंगे। इसको बचाने के लिए हम लोग एक हुए हैं इसलिए आप लोग घबराइये मत और आप लोग क्या-क्या टिप्पणी कर रहे थे, चलिये छोड़िये। हम आपके नेता यानी देश के जो प्रधानमंत्री हैं वे तो हमारे भी प्रधानमंत्री हैं उन्होंने क्या बोला था कि आदरणीय नीतीश कुमार जी सच्चे समाजवादी नेता हैं...(व्यवधान) आप प्रधानमंत्री जी की बात को मानो न, मेरी क्यों सुनते हो। प्रधानमंत्री जी यहां आये थे...उन्होंने इस विधानसभा के प्रांगण में क्या कहा था कि कितना बिहार का काम करते हैं, माननीय मुख्यमंत्री जी दिन-रात काम करते हैं। आप लोगों को समझना चाहिए, जानना चाहिए। हम तो उन्हीं की बात को बताने का काम कर रहे हैं, तो आज जब हम सब लोग एक हुए हैं तो आप लोगों को पीड़ा क्यों हो रही है? असल में आप लोगों को जो पीड़ा हो रही है, आप डर चुके हैं। (व्यवधान) इनकी असली पीड़ा जो है वह डर है वर्ष 2024 का। असल में ये लोग डरते हैं कि अगर हम सब लोग एकजुट हो जाएंगे तो बिहार से जो संघी लोग हैं, जो भाजपा के लोग हैं उनका सफाया हो जाएगा...(व्यवधान) उपाध्यक्ष महोदय, हां, यह बात सच है कि हमने इन पर आरोप लगाया है, इन्होंने हम पर आरोप लगाया है, लेकिन जब आरोप लगा रहे थे तो इसी हाउस में...आप सब लोग गवाह हैं माननीय मुख्यमंत्री जी ने हमको क्या कहा था, बाबू बैठ जाओ...बाबू बैठ जाओ में अपनापन दिखा, रिश्ता दिखा, अधिकार दिखा और इनकी बात को आदेश समझकर के हम चुपचाप बैठ भी गए थे तो यह तो हम लोगों का पुराना रिश्ता है। एक बार इन्होंने कहा कि हमारे भाई समान दोस्त का बेटा है यानी उसमें रिश्ता भी था, अपनापन भी था। ये रिश्ता जो हम लोगों का है यह किसी से छिपा नहीं है...

(व्यवधान) उपाध्यक्ष महोदय, असल में ये लोग काम तो कुछ किये नहीं केन्द्र में आठ साल। केन्द्र में इन्होंने कोई काम नहीं किया, बिहार के साथ पक्षपात किया। आप जानते हैं जब काम नहीं किया, 2 करोड़ रोजगार देंगे, 15 लाख देंगे, स्मार्ट सिटी बनाएंगे, वो करेंगे। मंहगाई की मार तो व्यक्ति पर पड़ गई तो जो रियल इशुज हैं, जो मेन एजेंडा है उससे ये लोग ध्यान भटकाना चाहते हैं। हम मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देना चाहते हैं कि एक ऐतिहासिक जगह से एक ऐतिहासिक घोषणा नहीं बल्कि मुहर लगाने का काम किया। इन्होंने कहा कि दस लाख नौकरियां देंगे, रोजगार की अलग से व्यवस्था करेंगे इसके लिए माननीय मुख्यमंत्री जी को हम धन्यवाद देना चाहते हैं...(व्यवधान) हम दो चीज जानना चाहते हैं इन बीजेपी के लोगों से, संघियों से पहली कि ऐसा कौन-सा तिलिस्म है, इनके पास कि ये सरकार में रहते हैं तो मंगलराज होता है, आउट होते हैं तो जंगलराज होता है। कौन-सा तिलिस्म है दो-तीन दिन में जंगलराज और...(व्यवधान) बैठिये न आपके नेता बोलेंगे न, आप क्यों व्याकुल हैं, आप लोग सब बेचैन रहते हैं, सबको नेता प्रतिपक्ष ही बनना है, अलग-अलग खंड में बंटे हुए हैं, हमको साफ-साफ दिख रहा है, एगो फलना जी का ग्रुप है, एगो चिलना जी का ग्रुप है, यही हो रहा है, लड़ते रहिये।

उपाध्यक्ष महोदय, ये लोग जब जंगलराज- जंगलराज कहते हैं तो ये बिहार की आत्मा को गाली देने का काम करते हैं क्या जंगल राज है? (व्यवधान) हम किसी का नाम लिये, किसी पर आरोप लगाये हों या अपशब्द बोले हों तो बताइये। उपाध्यक्ष महोदय, युवाओं को 10 लाख नौकरी मिलेगी तो वह जंगल राज है महोदय। क्या समाज के अंतिम पायदान पर खड़ा जो व्यक्ति है उसके लिए काम करेंगे तो वह जंगल राज है क्या, वंचितों को न्याय दिलाना जंगल राज है? क्या सबको शिक्षा, सबको सम्मान दिलाना यह जंगल राज है? क्या हर घर नल-जल पहुंचे, हर नल से जल पहुंचे, हर खेत में पानी पहुंचे, हर गांव-टोला में सड़क का निर्माण हो, यह जंगल राज है? क्या हर घर बिजली लगातार मिले, यह जंगल राज है? क्या महिलाओं को सम्मानजनक हिस्सेदारी दिलाना यह जंगल राज है? क्या उनकी सुरक्षा के बारे में चिंता करना, सुरक्षा देना जंगल राज है? महोदय, बुद्ध, कबीर से लेकर रविदास, नानक, फुले, पेरियार, आम्बेडकर, गांधी, लोहिया और कपूर्री जी ने ही तो लोक राज्य की कामना की थी, जिसको ये संघी लोग जंगल राज बोलकर बिहार के लोगों को जानवर कहते हैं, बिहार के लोगों को गाली दे रहे हैं। मतलब हम और आप जानवर हैं। क्या बात करते हैं आप। (व्यवधान) बिहार के 13 करोड़ लोग जानवर हैं। आप क्या कहना चाहते हैं, यह गाली किसको दे रहे हैं तो एक नैरेटिव मत पेश कीजिए। आइये, स्वस्थ राजनीति करते हैं, मेरी कोई दुश्मनी न आप लोगों में से किसी से पर्सनल है, न नरेंद्र मोदी जी से है, न अमित शाह जी से है, हमलोग तो मुद्दे की लड़ाई लड़ना चाहते हैं। आदरणीय नीतीश कुमार जी का क्या सपना है? भाई, बिहार के पटना यूनिवर्सिटी को सेंट्रल यूनिवर्सिटी का दर्जा आप लोग नहीं दिलवा पाये, ये मांगते रह गये, आप लोग कहां थे, बताइये कहां थे, तब मुंह नहीं खुल रहा था और आप लोग यहां पर चपर-चपर कर रहे हैं। (व्यवधान)...

उपाध्यक्ष महोदय, हमलोग चाहते हैं कि बिहार को विशेष पैकेज मिले, काम हो, लेकिन कोई काम नहीं महोदय। ये लोग बता दें कि बिहार के लिए एक भी काम किया हो, केवल तंग किया है और हरेक योजनाओं में कटौती की है। एक बात तो चौधरी जी ने ठीक ही कहा न कि अब इनका कौन साथी बचा है, पूरा सफाया हो गया है, अब एन.डी.ए. कहां रह गई। यही होता है ज्यादा घमंड में रहिएगा तो यही घमंड टूटता है, चकनाचूर होगा। हम बता देना चाहते हैं कि यह टूट की शुरूआत है। अटल बिहारी जी भले अलग विचारधारा रखते थे, उनकी अलग पार्टी थी, लेकिन आप देखिए उस समय की राजनीति जब अटल जी बीमार हुए, जब किडनी खराब था तो राजीव गांधीजी उनका इलाज करवाये, विदेश भिजवाकर। यह अटल जी ने खुद विडियो में बोला है कि राजीव जी का फोन आया था और जब अटल बिहारी जी थे तो हमारे पिता जी से भी उनका बहुत मधुर संबंध था। कभी ऐसा नहीं होता था जो देश में आज हो रहा है। ये तो बताएंगे, मुख्यमंत्री जी सब बात बताएंगे, सब चीज जानते हैं। (व्यवधान)... मुख्यमंत्री जी एक-एक चीज बताएंगे कि कैसे इनकी ही पार्टी को समाजवादी पार्टी को आप लोग तोड़ने का प्रयास कर रहे थे, अपने जो सहयोगी हैं उनके खिलाफ आप लोग जो हैं...(व्यवधान)।

आप लोग जान रहे हैं, इसी सदन में इनके एक विधायक चिल्ला कर बोलते हैं कि मुसलमानों से वोटिंग का अधिकार छीन लिया जाए। किसी माई के लाल में दम है कि नीतीश कुमार जी के रहते और लालू जी के रहते मुसलमानों से आपलोग वोटिंग का अधिकार छीन लीजिएगा।

असंभव है, हो ही नहीं सकता। भाई, हम तो बिहार के लोगों से यही प्रार्थना करेंगे, चाहे नौजवान हों, बुजुर्ग हों, चाहे किसी वर्ग, समाज से आयें, हम लोग ए टू जेड की बात करते हैं, ऊपर से लेकर नीचे तक सबकी बात करते हैं। समाज के सभी लोगों को साथ लेकर चलने का काम करेंगे, कहीं किसी को तकलीफ नहीं होने देंगे। महोदय, तो एक बात स्पष्ट है कि हम लोगों को काम करना है, हम लोग काम तो करेंगे ही महोदय, लेकिन हमारे पास, हम इतना कह सकते हैं कि आज हम राज्य और देश के इतिहास के एक ऐसे समय में हैं जहां हमारे पास दो ही ऑप्शन है। पहला ऑप्शन क्या है आपका, पहला विकल्प यह है कि या तो सामाजिक तनाव बढ़ते हुए देश को विनाश की ओर जाते देखें या फिर एक-दूसरे का हाथ पकड़कर गांधी, लोहिया, जेपी और बाबा साहब के देश को इस नफरत से बचा लें तो हम तो अपने पुरखों का जो मुकाम था, उसको चुनने का काम किया और हम लोग इसके लिए प्रतिबद्ध हैं। कहीं भी कुछ भी होगा, लेकिन इस देश में अगर अशांति बढ़ाने की कोशिश की जाएगी तो किसी दंगाई को हमलोग छोड़ने का काम नहीं करेंगे, एक-एक चीज पर नजर है।...(व्यवधान) यह महागठबंधन की सरकार है। उपाध्यक्ष महोदय, हम तो भगवान से यह भी प्रार्थना करते हैं कि हे भगवान, इन भाजपाइयों को सद्बुद्धि दिला दें। अरे, बुद्धि आ जाएगी तो चलिये न, पक्ष और विपक्ष मिलकर के एक नया भारत का निर्माण करते हैं, एक नया बिहार का निर्माण करते हैं, जहां नफरत न हो, प्यार हो, एकता हो, एक संकल्प हो, जहां बिहार को आगे बढ़ाएं। ये तो प्रधानमंत्री जी खुद ही कहते हैं कि जब तक बिहार आगे नहीं बढ़ेगा तो देश आगे नहीं बढ़ेगा, यानी अब तक तो देश आगे बढ़ा ही नहीं, क्योंकि आपका कोई सहयोग बिहार को आगे बढ़ाने में रहा नहीं, आपने हमेशा सौतेला व्यवहार बिहार के लोगों के साथ किया। बताइये, 10 लाख करोड़ पूंजीपतियों को यों ही मुफ्त में, उपाध्यक्ष महोदय, मुफ्त में और बिहार का पैकेज घटा, बिहार को ठगा गया। मुख्यमंत्री जी को ठगने का, तोड़ने का प्रयास किया जा रहा था, पूरे क्षेत्रीय दलों को तोड़ने का प्रयास किया जा रहा था, ये तो नड्डा जी ने साफ कर ही दिया। कहां-कहां, क्या-क्या साजिश चल रही थी। अच्छा, अब हम अपनी बात खत्म कर रहे हैं। उपाध्यक्ष महोदय, हमें पता है कि आगे ये लोग क्या-क्या दुष्कर्म करेंगे, क्या-क्या होने वाला है, सबको पता है। आज स्थिति ऐसी हो गई है कि बिहार के बच्चों से पूछिएगा कि सी.बी.आई., ई.डी. और इनकम टैक्स तो बच्चा-बच्चा बोलेगा बिहार का...(व्यवधान)... उपाध्यक्ष महोदय, बिहार का बच्चा-बच्चा बोलेगा कि यह बीजेपी के प्रकोष्ठ के लोग हैं, बीजेपी जब-जब हारती है, जब-जब इनको डर लगता है तो इन तीनों को आगे करती है, यह बच्चा-बच्चा जानता है। आगे क्या-क्या ये लोग करेंगे यह सबको पता है। (व्यवधान)... हमारा एक साथी, हमारा एक वर्कर, समाजवादी विचारधारा को मानने वाला एक-एक बिहार का नागरिक कभी भी इनके मनसूबों को पूरा नहीं होने देगा महोदय। (व्यवधान)... अरे, बोलने तो दीजिए। हम समाप्त कर रहे हैं।...(व्यवधान)...उपाध्यक्ष महोदय, हम यहां अपने सभी माननीय सदस्यों से यह उम्मीद, आशा और आकांक्षा रखते हैं और यह मुझे पूरा विश्वास है कि माननीय मुख्यमंत्री जी, सदन के नेता ने जो प्रस्ताव रखा है वो सब प्रस्ताव के पक्ष में रहेंगे और जीत निश्चित है, देश के लिए कुछ भी करना पड़े, हम-सब लोग आगे बढ़कर इस देश की सेवा, बिहार की सेवा में लगाएंगे। जय हिन्द-जय बिहार।

(महागठबंधन सरकार के विश्वास मत पर बिहार विधानसभा में माननीय उप मुख्यमंत्री द्वारा दिये गए भाषण का सम्पादित अंश।)

पंकज कुमार

आलोचक चौथीराम को मिला दूसरा सत्राची सम्मान

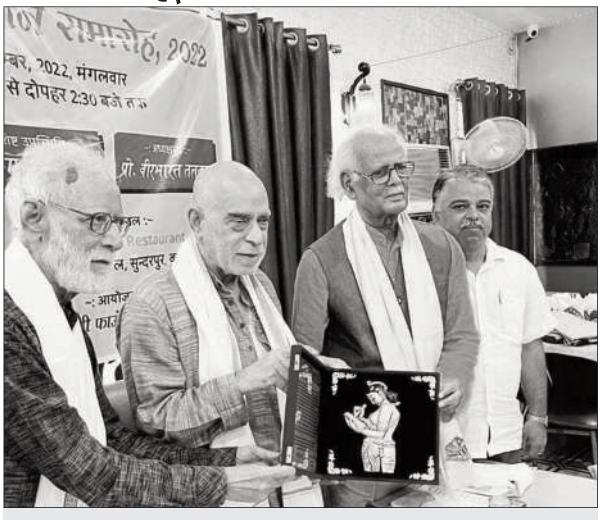

चौथीराम यादव समकालीन हिन्दी आलोचना के सुविख्यात लोकधर्मी मुक्तिकामी आलोचक हैं। उन्होंने अपनी आलोचना में वर्चस्व की परम्परा को चुनौती देते हुए दूसरी परम्परा के चिंतन को विस्तार दिया है। उनकी आलोचना के केन्द्र में लोक है, लोक की यह परम्परा चार्वाक, लोकायत, सरहपा, मध्यकालीन क्रांतिकारी संत कबीर से होते हुए विकसित होती है। चौथीराम यादव ने उस समृद्ध एवं गतिशील परम्परा को हिन्दी आलोचना में प्रतिस्थापित किया। पूरी हिन्दी आलोचना को उत्पीड़ित वर्गों की आंखों से देखते हुए एक नई दिशा दी।

चौथीराम यादव ने राजेन्द्र यादव के हाशिए के विमर्श के लेखकीय जन अभियान को अपने प्रतिबद्ध लेखन एवं अभिभाषणों से आगे बढ़ाया। अपनी आलोचकीय क्षमता से हिन्दी साहित्य का अंग बनाया। चौथीराम यादव ने अपनी आलोचना को किसी दायरे में बंधने नहीं दिया, उन्होंने दायरे का लगातार अतिक्रमण किया। जिस निष्ठा के साथ उन्होंने दलित आदिवासी साहित्य की आलोचना लिखी, उसी लेखकीय निष्ठा के साथ स्त्री साहित्य पर भी लिखा। प्रेमचंद, नागार्जुन, काशीनाथ सिंह पर भी लिखा। चौथीराम यादव ने साहित्य और समाज में व्याप्त वर्चस्ववादी विचारों को जिस ताकत के साथ चुनौती दी, उसी साहस के साथ पूंजीवादी समाज व्यवस्था में शोषण के शिकार हो रहे आमजन के प्रति भी अपनी प्रतिबद्धता जाहिर की।

चौथीराम यादव को इन्हीं आलोचकीय प्रतिबद्धता को देखते हुए उन्हें दूसरा सत्राची सम्मान से सम्मानित किया गया। यह सम्मान समारोह कार्यक्रम सुंदरपुर, वाराणसी में आयोजित था। मुख्य अतिथि के रूप में प्रसिद्ध कथाकार काशीनाथ सिंह उपस्थित

शेष भाग पेज 24 पर पढ़ें

उदय नारायण चौधरी

बढ़ते फासीवाद पर नकेल कसना सबसे बड़ी चुनौती

भारतीय समाज आज एक विकट आपातकाल के दौर से गुजर रहा है। इतना बुरा दौर यहां की संसदीय राजनीति में इससे पहले कभी नहीं आया था। अपने लंबे शासनकाल में कांग्रेस ने कई तरह की गड़बड़ियां कीं, जिसके परिणामस्वरूप उसे 1977 और फिर 1990 में केंद्र की सत्ता से बेदखल होना पड़ा। लेकिन भाजपा जिस तरह से काम कर रही है, वह न सिर्फ देश के लिए अपितु नागरिक समाज के लिए भी अत्यंत बर्बरतापूर्ण है। हिन्दू-मुस्लिम की तोड़क विभेदपूर्ण नीति और विभिन्न राज्यों में विरोधी दल की सरकारों को सरकारी मशनरी के इशारे पर दुष्प्रचारित कर जेल डालने और सम्पूर्ण विकास की प्रक्रिया को ही अवरुद्ध करने का जो षड्यंत्र वह खेलती रही है, वह लोकतांत्रिक राष्ट्र की पूरी परिकल्पना को ही प्रश्नांकित करने वाली है। सी.बी.आई नामक संस्था जिस तरह से सत्तारूढ भाजपा के द्वारा भारत की क्षेत्रीय पार्टियों के विरूद्ध काम करती रही है उससे उसकी विश्वसनीयता घटी है। दिल्ली, बंगाल, बिहार, झारखंड, महाराष्ट्र और तेलांगना आदि कोई ऐसे राज्य नहीं बचे हैं, जिसे भाजपा द्वारा अपने संघीय अधिकार के दुरुपयोग से नहीं रौंदा गया हो। अभी वह जिस तरह से राष्ट्रीय जनता दल के नेताओं के पीछे पड़ी है उससे उसकी बौखलाहट समझी जा सकती है।

लालू प्रसाद और तेजस्वी यादव के विरूद्ध भाजपा का यह दुष्प्रचार अभियान बहुत लंबे समय से जारी है। राजद को हर तरह से बदनाम करने का उनका यह कुचक्र इसलिए ज्यादा तल्ख रहा है, क्योंकि यही एकमात्र क्षेत्रीय पार्टी है जो लगातार उसके लिए चुनौती पेश करती रही है। भाजपा जिस उग्र हिन्दुत्व और राष्ट्रवाद के नाम पर भारत की बहुसंख्यक जनता को मुसलमानों, और ईसाइयों के नाम पर गोलबंदी करती रही है, राजद उनकी इस गोलबंदी को हिन्दू राष्ट्र में निहित उसके उसी जातिवादी, ब्राहणवादी स्वरूप को टारगेट कर अलग-अलग जातियों में बंटी बहुजन दावेदारी के सवाल को प्रमुखता से उठाती रही है। इस परिप्रेक्ष्य में केंद्र की सरकार हर हाल में राजद को उसके सामाजिक न्याय और अल्पसंख्यक सम्बन्धी कोर एजेंडे से हटने का लगातार दबाव बनाती रही है, लेकिन लालू प्रसाद भारत के इकलौते ऐसे नेता रहे हैं जिन्होंने जेल जाना कबूल किया, लेकिन अपने एजेंडे से कभी समझौता नहीं किया।

अभी हाल ही में सी.बी.आई. ने राजद नेता भोला यादव और फिर सुनील कुमार सिंह और सुबोध कुमार के घर छापे मारे। उन्हें क्या मिला, क्या नहीं मिला-इसपर न मीडिया बोलती है न हिन्दी क्षेत्र की एकेडमिया। इस संदर्भ में सभी की मंशा राजद को 'जंगलराज' के रूप में प्रस्थापित करना ही होता है। जब से बिहार में महागठबंधन की सरकार आई है हमारी मीडिया और समाज का एक बड़ा हिस्सा बिहार में हर तरह की बदहाली के लिए जवाबदेह राजद को ठहराने के अभियान में पिल पड़ा है। कहना न होगा कि समाज का एक बड़ा हिस्सा इस अफवाह में आज भी गुमराह हो जाता रहा है। इससे निकलने का एकमात्र मार्ग यही है कि हम इन अफवाहों के पीछे काम कर रही शक्तियों की शिनाख्त करें और उसे एक्सपोज करें। केंद्र शासित भाजपा सरकार लगातार सी.बी.आई और अन्य एजेंसियों को विरोधी सरकारों को गिराने में करती आई है। इससे इन संस्थाओं की विश्वसनीयता लगातार प्रश्नांकित हुई है। वर्तमान सरकार के इस कुकृत्य से संघीय ढांचा लगातार बदनाम होता आया है। सी.बी.आई, ईडी और इनकम टैक्स के माध्यम से केंद्र सरकार भारत की विपक्षी पार्टियों को हर तरह से तबाह कर रही है। किसी गड़बड़ी की स्थिति में चीफ जस्टिस केंद्र सरकार को विशेष जिम्मेवारी दे सकते हैं। राज्य सरकार से वह आग्रह करे तभी राज्यों में हस्तक्षेप होगा, लेकिन यहां उल्टा हो रहा है।

भाजपा आज अगर इस फासीवादी स्वरूप में आई है तो उसके इस फैलाव को गैर कांग्रेसवाद के नाम पर पहले लोहिया, जेपी सरीखे समाजवादी नेताओं ने स्पेस मुहैया कराया और नब्बे के मंडल उभार के बाद राजद को छोड़कर इन्ही क्षेत्रीय पार्टियों का दामन पकड़कर वह इस विनाशकारी रूप में उभरी। जिस दौर में साम्प्रदायिकता को रोकने की सबसे ज्यादा जरूरत थी, ये क्षेत्रीय पार्टियां उनका माउथपीस बनी हुई थीं। इस सम्पूर्ण दौर में राजद ही एक ऐसी क्षेत्रीय पार्टी रही, जिसने कभी भी साम्प्रदायिकता से समझौता नहीं किया। लालकृष्ण आडवाणी की रथयात्रा का प्रसंग हो या नीतीश कुमार का भाजपा द्वारा लगातार तबाह किये जाने का हालिया प्रसंग- यह लालू प्रसाद और तेजस्वी ही हैं, जिन्होंने हर तरह की जोखिम लेते हुए भाजपा के लिए एक कड़ी चुनौती पेश की। तेजस्वी यादव द्वारा मुख्यमंत्री का पद छोड़कर नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री मानने में जो त्याग छुपा है, वह सवर्ण डौमिनेटेड मीडिया को नजर नहीं आया, लेकिन बेगूसराय में भाजपा के इशारे पर दिनदहाड़े लोगों को गोलियां मारने वाले शख्स की प्रायोजित हिंसा में 'जंगलराज' दिखने लगा। दरअसल यह हमारी वह मानसिकता है जो हर बदलाव को नजरंदाज कर बहुजन सरकार की वैचारिकी को ही दूषित कर देना चाहती है ताकि हर तरह का यथास्थितिवाद बनाये रखकर कुछ लोगों का वर्चस्व कायम रहे। नई सरकार के सामने कई तरह की चुनौतियां हैं। एनडीए सरकार ने अपने लंबे शासन में बिहार में शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि और रोजगार का जो हाल बना रखा है, वह एक दिन में ठीक होने वाला नहीं है इसके लिए कठिन संघर्ष करना पड़ेगी। यह आसान काम नहीं है। बिहार में गठबंधन सरकार के गठन के बाद पूरे देश में एक उम्मीद की किरण जगी है कि देश को एक मजबूत विपक्ष मिलेगा और देश तोड़क भाजपा हाशिये पर जाएगी। हमें उम्मीद है नई सरकार आरक्षित वर्गों को हिस्सेदारी दिलाएगी और अल्पसंख्यकों को उनका वाजिब हक हासिल होगा।

(लेखक राजद के प्रांतीय अध्यक्ष, मंत्री और बिहार विधानसभा अध्यक्ष रह चुके हैं। संप्रति पार्टी में राजकीय निर्वाचन पदाधिकारी हैं।)

सिद्धार्थ रामू

कौन हैं नारायण गुरु, जिन्हें कर्नाटक की भाजपा सरकार ने पाठ्यक्रम से निकाल दिया

यह है एक आदर्श निवास,
रहते हैं जहां मनुष्य बंधुवत
मुक्त हो धार्मिक द्वेषभाव और
जातिगत संकीर्णताओं से

-श्री नारायण गुरु

आज से करीब सौ वर्ष से अधिक पहले श्री नारायण गुरु स्वामी ने धर्म और जाति की संकीर्णता से मुक्त एक आदर्श निवास की चाहत प्रकट की थी और वे उसके लिए आजीवन कार्य भी करते रहे। भले ही उनके आदर्श समाज की कसौटी पर आज का केरल पूरी तरह खरा न उतरता हो, लेकिन वह काफी हद तक उनके आदर्श के करीब है।

इस तथ्य से कोई इंकार नहीं कर सकता है कि केरल भारत का एक ऐसा प्रदेश है, जिसका काफी हद तक आधुनिकीकरण हुआ है और वहां एक आधुनिक नागरिक समाज का निर्माण हुआ है। वहीं यह भी सच है कि वर्ण-जाति व्यवस्था एवं पितृसत्ता के बहुत सारे अवशेष आज भी शेष भारत की तरह केरल में भी अपनी उपस्थिति बनाए हुए हैं। इसके बावजूद भी केरल भारत का सबसे आधुनिकीकृत प्रदेश है और शीर्ष आधुनिक देशों से बहुत सारे मामलों में बराबरी करता है।

क्या केरल हमेशा से ऐसा ही रहा है? क्या केरल भारत को एक बीमार समाज बनाने वाली वर्ण-जाति, पितृसत्ता और धार्मिक घृणा (सांप्रदायिकता) की बीमारी से ग्रसित नहीं रहा है? अगर ग्रसित रहा तो वह उनसे मुक्त कैसे हुआ? वे कौन थे जिन्होंने आगे बढ़कर वर्ण-जाति, पितृसत्ता एवं धार्मिक घृणा की घातक बीमारियों से केरल को मुक्त किया और आधुनिक केरल की नींव डाली?

ऐसे व्यक्तियों में पहला नाम श्री नाराणय गुरु स्वामी का है। वे इजावा समुदाय से थे। उनके व्यक्तित्व और आधुनिक केरल के निर्माण में उनकी भूमिका को जी. अलोसिएस (2005-16) इन शब्दों में रेखांकित करते हैं- 'केरल के सबसे निर्णायक ऐतिहासिक काल में एक सक्रिय सामाजिक-राजनीतिक और धार्मिक सुधारक के रूप में उन्होंने करीब चार दशकों तक अपनी भूमिका निभाई। किसी भी अन्य व्यक्ति की तुलना में, अपने व्यक्तित्व एवं कार्यों से एक नृजातीय समूह (मलयाली) को आधुनिक समूह में रूपान्तरित करने वाले व्यक्ति के श्री नारायण गुरु स्वामी मूर्त प्रतीक हैं। राष्ट्रवादी इतिहासकारों द्वारा उन्हें एक जाति विशेष के क्षेत्रीय नेता के रूप में प्रस्तुत किया गया तो दूसरी ओर 'निम्न जातीय' लेखकों द्वारा उन्हें एक इजावा धार्मिक सुधारक के रूप में प्रस्तुत किया गया। दोनों धारणाएं गंभीर रूप से त्रुटिपूर्ण हैं। पहली और सबसे प्रमुख बात यह है कि वे आधुनिक केरल के पहले वास्तुकार थे। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। एक उन्नत बुद्धिजीवी और योग्य संगठनकर्ता थे। एक

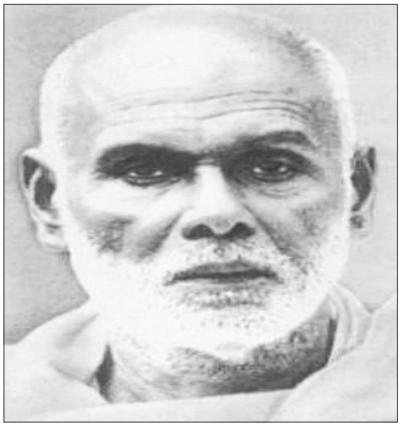

सुगठित समाज के रूप में केरल की सचेतन दावेदारी और उसके निर्माण में नारायण गुरु की अथक गतिविधियों और बहुत सारी संस्थाओं के निर्माण ने अहम भूमिका निभाई। इसने केरल के बहुस्तरीय विकास एवं राजनीतिकरण की जमीन तैयार की।'

श्री नाराणय गुरु के जन्म के समय केरल भी उसी तरह आकंठ जातिवाद के जहर में डूबा हुआ था, जैसा कि शेष भारत। पूरा समाज ब्राह्मण और गैर-ब्राह्मण की अल्लंघ दीवार से बंटा हुआ था। गैर-ब्राह्मणों के बीच भी बहुस्तरीय श्रेणीगत बंटवारा था। पवित्र-अपवित्र और सछूत-अछूत की ऐसी रेखाएं खींची हुई थीं, जिन्हें कोई पार नहीं कर सकता था। सारे अधिकार एवं कर्तव्य इन्हीं रेखाओं से तय होते थे, जो कि इन रेखाओं का उल्लंघन करने की कोशिश करता, शंबूक की तरह उसका वध कर दिया जाता। करीब 1803-04 में इजावा समुदाय के कुछ लोगों ने वायकम मंदिर में प्रवेश करने की कोशिश की। लेकिन उनका निर्ममता से वध कर दिया गया और मंदिर के उत्तर पूर्वी कोने में एक तालाब में दफना दिया गया। इस तालाब को आज 'दलवा कुलम' के नाम से जाना जाता है और दफनाये गए लोगों को आधुनिक नागरिक समाज के निर्माण के पहले शहीद एवं संस्थापक के रूप में कृतज्ञतापूर्वक याद किया जाता है।

ब्राह्मणों और गैर-ब्राह्मणों के शीर्ष पर विराजमान और सब कुछ तय करने वाले नंबूदरी ब्राह्मणों ने यह भी तय कर रखा था कि किस गैर-ब्राह्मण को उनसे कितनी फीट की दूरी पर रहना है। इजावा लोगों को नंबूदरी ब्राह्मणों से कम-से-कम 20 से 36 फीट की दूरी पर, चेरूमन और पुलाया लोगों को 64 फीट की दूरी पर और नायडी लोगों को 72 फीट की दूरी पर रहना था। इससे कम दूरी होने पर नंबूदरी अपवित्र हो जाते थे। कुछ जनजातियां ऐसी थीं, जिनके देखने मात्र से नंबूदरी ब्राह्मण अपवित्र हो जाते थे। सिर्फ नायर ऐसे गैर-ब्राह्मण थे, जिनके छूने पर ही ब्राह्मण अपवित्र होते थे।

केरल में गैर-ब्राह्मणों के बड़े हिस्से के लिए छाता, जूता, सोने के आभूषण आदि के इस्तेमाल की सख्त मनाही थी। इसका उल्लंघन करने

वालों को सख्त आर्थिक एवं शारीरिक दंड दिया जाता था। गैर-ब्राह्मणों का घर एक मंजिल से अधिक ऊंचा नहीं हो सकता था, वे गाय का दूध नहीं पी सकते थे, महिलाएं स्तन नहीं ढंक सकती थीं, वे ऊंची जाति की महिलाओं की तरह अपने सिर पर पानी का घड़ा नहीं रख सकती थीं। अधिकांश गैर-ब्राह्मणों को सरकारी नौकरियों में प्रवेश की इजाजत नहीं थी। मंदिरों में प्रवेश की मनाही थी। दलित-आदिवासियों की कौन कहे, शूद्र कही जाने वाली जाति इजावा भी मंदिर में प्रवेश नहीं कर सकती थी, ऐसा करने की कोशिश करने वालों का वध कर दिया जाता था(अलोसिएस 2005:9)।

इस प्रकार गैर-ब्राह्मणों का एक बड़ा हिस्सा बहुत सारी सार्वजनिक जगहों का इस्तेमाल नहीं कर सकता था, इसमें मुख्य रास्ते भी शामिल थे, जिन पर गैर-ब्राह्मणों का एक बड़ा हिस्सा नहीं चल सकता था। यहां तक कि गैर-ब्राह्मणों की पत्नियों यों को पहली रात नंबूदरियों के साथ बिताने का प्रावधान भी था।

केरल में चार वर्णों-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र-का आदर्श घोषित रूप से लागू नहीं था। वहां पूरे समाज का बंटवारा ब्राह्मण-गैर-ब्राह्मण में था। नंबूदरी ब्राह्मणों के पास जमीन का मालिकाना हक था और वे मंदिर एवं मदिरों की संपत्ति के भी मालिक थे। राज्य और राजाओं पर उनका कड़ा शिंकजा था। वे महाराष्ट्र के चितपावन ब्राह्मणों की तरह ही थे। नायर काश्तकार कहे जाते थे और सैन्य भूमिका का भी निर्वाह करते थे। लेकिन वर्ण-व्यवस्था के अनुसार वे शूद्र ही थे। वे खेतों के मालिक थे, लेकिन वे उत्तर भारत के ऊंची जाति के लोगों की ही तरह खेतों में काम नहीं करते थे। उनके खेतों में सारा काम अन्य गैर-ब्राह्मण-विशेषकर दलित करते थे। बीच का एक स्तर था, जिसमें इजावा भी शामिल थे, जिन्हें एक निश्चित समय के लिए लगान पर खेती करने को मिलती थी, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति थोड़ी बेहतर थी। कुछ दलित और आदिवासी इससे भी वंचित थे, जिन्हें अछूतों में भी अछूत का दर्जा प्राप्त था। इन दलितों को कुरावा, पुलाया और परिया आदि के रूप में जाना जाता था। इसके साथ आदिवासी भी थे, जिन्हें दलितों से भी बदतर दर्जा नंबूदरी ब्राह्मणों ने दे रखा था।

उत्तर भारत के विपरीत केरल में ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य तीनों तथाकथित उच्च वर्णों का विशेषाधिकार नंबूदरी ब्राह्मणों ने अपने हाथ में ले रखा था। फिर भी समझने की आसानी के लिए कहा जा सकता है कि विभिन्न समुदायों द्वारा संपन्न किए जाने वाले कार्यों और आर्थिक हैसियत के आधार पर देखें तो नायरों की स्थिति उत्तर भारत के क्षत्रियों जैसी थी, लेकिन शास्त्रीय एवं सामाजिक हैसियत शूद्र जैसी। इजावा जाति को आर्थिक हैसियत और सामाजिक बंटवारे के श्रेणीक्रम के आधार पर उत्तर भारत के अन्य पिछड़ी वर्ग या ओबीसी की तरह देख सकते हैं, लेकिन बहुत सारे मामलों में उनकी हैसियत भी दलितों के जैसी थी, जैसे मंदिर प्रवेश एवं सरकारी नौकरी में निषेध आदि। ब्राह्मण और गैर-ब्राह्मण के बंटवारे के हिसाब से ही सारे अधिकार एवं कर्तव्य निर्धारित होते थे। इस तरह केरल में अपने शास्त्रीय आदर्श (मनु संहिता) के अनुरूप ब्राह्मण ही भू-देवता था।

इस पूरी स्थिति को बदलने और मानवीय समता, न्याय एवं बंधुता आधारित समाज बनाने के लिए श्री नारायण गुरु स्वामी ने खुद को समर्पित कर दिया। इसके लिए उन्होंने ईश्वर एवं धर्म का भी सहारा लिया, क्योंकि मुट्ठी भर नंबूदरी ब्राह्मणों ने बहुसंख्य गैर-ब्राह्मणों पर वर्चस्व कायम करने के लिए धर्म की वैचारिकी का ही इस्तेमाल किया था।

श्री नारायण गुरू ने 'ओरु जाति, ओरु मद, ओरु दैव मनुष्य' का नारा दिया, जिसका अर्थ है-'एक जाति, एक धर्म और एक ईश्वर मनुष्यन्।' यह नारा ईश्वर और धर्म को नंबूदरी ब्राह्मणों के चंगुल से निकालने का नारा बना। इसने केरल के पूरे समाज को एक सूत्र में जोड़ने की जमीन तैयार की। इसे स्वामी जी ने सर्वप्रथम 1914 में अपनी रचना 'जातिनिर्णय' में शामिल किया और बाद में 1920 में गुरु ने इसे अपने जन्मदिन के संदेश के रूप में घोषित किया। यहां जाति शब्द का अलग अर्थ है। यहां इसका मतलब हिंदू धर्म की जाति व्यवस्था नहीं, बल्कि संसार के सारे मनुष्यों को बिना किसी भेदभाव के एक प्रजाति के रूप में देखने की बात है। इस नारे का दूसरा हिस्सा भी है जो मनु संहिता पर आधारित वर्ण-जाति व्यवस्था को ही चुनौती देता है। 'ओरु योनि, ओरु आकार ओरु भेदावु इल्ला इति' यानि सारे इंसान योनि (कोख) से पैदा होते हैं, मनुष्य के आकार भी एक समान है, इसमें कोई भी भेद नहीं है। तो फिर जाति के आधार पर भेद क्यों?

आधुनिक केरल के निर्माण के संगठित आंदोलन की शुरूआत 1903 में श्री नारायण गुरु स्वामी ने 'श्री नारायण धर्म प्रतिपालन योग' (एस.एन.डी.पी.) की स्थापना के साथ की। इस कार्य में महाकवि कुमारन आशान और डॉ. पाल्पू की भी अहम भूमिका थी। एक तरह से आधुनिक केरल की बुनियाद रखने वाली यही त्रयी थी।

श्री नारायण गुरु स्वामी के बचपन का नाम नाणु था। उनके पिता मदन अशान उनके पहले शिक्षक थे। उनके पिता मलयालम और तमिल के साथ पाली भाषा के अच्छे ज्ञाता थे। ये तीनों भाषाएं नाणु को विरासत में मिली थीं। बाद में श्रीनारायण गुरु संस्कृत एवं अंग्रेजी में भी महारत हासिल की। बचपन से नाणु के भीतर प्रखर जिज्ञासा भाव और गहरी संवेदनशीलता थी। प्रकृति के विविध रूप उन्हें अपनी ओर खींचते थे। जीवन के करीब 35 वर्ष उन्होंने प्रकृति के सान्निध्य में घने जंगलों, नदियों और समुद्र के किनारे विचरण करते हुए बिताए। उन्होंने बुद्ध की तरह ज्ञान की साधना भी की। धर्म का आध्यात्मिक तत्व उनमें गहरे पैठा हुआ था। वे किसी भी ऐसे धर्म और ईश्वर को स्वीकार करने को तैयार नहीं थे जो मानव के बीच भेद करता हो और उनमें बंधुता का भाव न भरता हो। मंदिर उनके लिए प्रेम, बंधुता, करुणा और सामाजिक भाईचारा विकसित करने के केंद्र थे। वे अक्सर कहा करते थे कि भगवान और इंसान दोनों उनके गुरु हैं। वे विभिन्न धर्मों की वैश्विक एकता में विश्वास करते थे। वे पूरी मानव जाति को एक मानते थे। उन्होंने 1921 में विश्व भाईचारा सम्मेलन आयोजित किया। इसके लिए उन्होंने जो संदेश लिखा उसका निहितार्थ यह था कि मनुष्यों में संप्रदाय, पहनावा, भाषा आदि के अंतर के बाद भी वे सब एक ही सृष्टि के हैं। सबका सबके साथ खान-पान और वैवाहिक संबंध होने चाहिए। उनका कहना था कि मनुष्य की एक जाति है, और वह है-मानव जाति।श्री नारायण गुरु स्वामी ने मानव जाति को मानवता के सूत्र में बांधने के लिए जीवन भर प्रयास किया। वे भले ही पूरी मानव जाति को बंधुता के सूत्र में न बांध पाएं हों, लेकिन वे आधुनिक केरल के पहले व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने बंधुता आधारित आधुनिक केरल की नींव डाली, जिसे बहुत सारे अन्य व्यक्तित्वों, संगठनों एवं सामाजिक आंदोलनों ने भी आगे बढ़ाया।

(लेखक हिन्दी के महत्वपूर्ण बहुजन विमर्शकार हैं। सावित्री बाई फुले की लिखी इनकी जीवनी काफी पॉपुलर रही है।)

ओमप्रकाश कश्यप

सामाजिक परिवर्तन के यात्री : पेरियार ई.वी. रामासामी

धर्म का आधार अंधविश्वास है। विज्ञान में धर्मों का कोई स्थान नहीं है। इसलिए, बुद्धिवाद धर्म से भिन्न है। सभी धर्मावलंबी कहते हैं कि किसी को भी धर्म पर संदेह अथवा सवाल नहीं करना चाहिए। इसने मूर्खों को धर्म के नाम पर कुछ भी कहने की छूट दे दी है। धर्म एवं ईश्वर के नाम पर मूर्खतापूर्ण आचरण सनातन प्रवृत्ति है- पेरियार

पेरियार इरोड वेंकटप्पा रामास्वामी, जिन्हें लोग प्यार से 'पेरियार' भी कहते हैं, का जन्म तमिलनाडु के इरोड नाम कस्बे में 17 सितंबर, 1879 को हुआ था। जन्म के समय पेरियार के परिवार की आर्थिक स्थिति सामान्य थी। फिर उनके पिता वेंकटप्पा ने व्यापार में हाथ आजमाना आरंभ किया। कुछ ही वर्षों में उनकी गिनती भारत के धनवान व्यक्तियों में होने लगी। पेरियार की शिक्षा की शुरूआत घर से हुई। दो साल के अक्षर ज्ञान के बाद उनका दाखिला स्थानीय पाठशाला में करा दिया गया। स्कूल का वातावरण पूरी तरह जातिवादी था। पानी जैसी मानवीय आवश्यकता के लिए भी विद्यार्थियों को भेदभाव का सामना करना पड़ता था। कदम-कदम पर जातीय भेदभाव और उत्पीड़न था। उस माहौल में पेरियार जैसी विद्रोही चेतना का निबाह संभव न था। दो साल के अंतराल के बाद ही उनके व्यापारी पिता ने उन्हें स्कूल से निकाल लिया। 12 वर्ष की उम्र से वे पिता के व्यापार को देखने लगे। कुछ ही वर्षों में उन्होंने पैतृक व्यवसाय को भली-भांति संभाल लिया।

उनकी दुकान पर साधु-संत अकसर आते रहते थे। धर्म और ब्राह्मणों के प्रति आलोचनात्मक दृष्टि उनके मन में किशोरावस्था से ही विकसित होने लगी थी। दुकान पर आए साधुओं से वे उलझाने वाले सवाल करते। उत्तर प्रायः निराशा भरा होता था। 19 वर्ष की उम्र में उनका विवाह नगम्मई से कर दिया गया। नगम्मई साधारण स्त्री थीं, मगर बहुत जल्दी पेरियार ने उन्हें अपने विचारों के अनुसार ढाल लिया। आगे चलकर नगम्मई और पेरियार की बहन कनम्मल ने कई आंदोलनों का साहसपूर्वक संचालन किया।

मानसिक परिवर्तन का स्रोत काशी यात्रा

पेरियार का परिवार और व्यापार दोनों ठीक-ठाक चल रहे थे, लेकिन वे न तो गृहस्थी जमाने के लिए बने थे, न सिर्फ व्यापार में दो और दो चार करने के लिए। एक बार परिवार में मनमुटाव जैसा कुछ हुआ। परिजनों से नाराज पेरियार ने सब-कुछ छोड़ दिया। वह 1904 का वर्ष था। संन्यास लेने के इरादे के साथ वे घर से निकल पड़े। उनके साथ दो ब्राह्मण मित्र भी थे। काशी पहुंचकर उन्होंने आश्रमों में शरण लेने की कोशिश की। ब्राह्मण होने के कारण उनके साथियों को तो एक आश्रम में जाते ही प्रवेश मिल गया। लेकिन पेरियार को वहां से निकाल दिया गया। एक आश्रम में उन्होंने पहचान छिपाकर प्रवेश पाने की कोशिश की। लेकिन मूंछों के कारण वहां भी पहचान लिए गए। भूख से व्याकुल होकर वे काशी की सड़कों पर भटकते रहे। जेब में जितने रुपये थे, वे रास्ते में ही समाप्त हो चुके थे। भूख ने विवश किया तो उन्हें सड़क किनारे पड़े उच्छिष्ट को ही भोजन मानना पड़ा। काशी में उन्होंने देखा कि ब्राह्मण ताड़ी और भांग के नशे में चूर रहते हैं। मांस का सेवन करते हैं तथा उस

कथित पवित्र नगरी में भी वेश्यावृत्ति फलता-फूलता व्यसन है। वापस, आकर उन्होंने फिर अपना व्यापार संभाल लिया। उससे धन-समृद्धि और वैभव बढ़ा, साथ में प्रतिष्ठा भी। समय के साथ वे समाज सेवा में जुट गए। सरकार ने उनकी प्रतिभा, लगन और निःस्वार्थ वृत्ति को पहचाना, उसका सम्मान करते हुए उन्हें सार्वजानिक जिम्मेदारियां सौंपी जाने लगीं। गांधी ने सत्याग्रह आंदोलन शुरू किया तो राजगोपालाचारी के आग्रह पर युवा पेरियार कांग्रेस से जुड़ गए। स्वदेशी आंदोलन, नशा मुक्ति अभियान में वे सक्रिय रूप से शामिल हुए और जेल गए। 1921 में उन्होंने ताड़ी की दुकानों के आगे धरना-प्रदर्शन किया जिसमें उनकी पत्नी और बहन भी शामिल थीं। ताड़ी उत्पादन को रोकने के लिए पेरियार ने, अपने नारियल और खजूर के एक हजार से अधिक पेड़ों को कटवा दिया।

ऐतिहासिक वायकम सत्याग्रह

1924-25 की घटना है। पेरियार को वायकम आंदोलन का नेतृत्व करने के लिए बुलाया गया था। आंदोलन सार्वजनिक मार्गों पर चलने की आजादी को लेकर था। आंदोलन आगे बढ़ा तो बाकी नेताओं की तरह पेरियार को भी जेल में ठूंस दिया गया। संघर्ष की जिम्मेदारी पेरियार की पत्नी और बहन ने संभाल ली। जेल से बाहर आये तो सरकार के निर्देश की परवाह न करते हुए फिर आंदोलन में जुट गए। दूसरी बार जेल गए तो पंडितों ने शत्रु संहार यज्ञ किया। उससे पेरियार का तो कुछ न बिगड़ा पर जैसे ही यज्ञ पूरा हुआ, त्रावणकोर का राजा चल बसा। रानी डर गई। उसने तुरंत रास्तों से प्रतिबंध हटा लिया। जनता ने उन्हें 'वायकम का हीरो' की उपाधि दी थी। पेरियार की मांग थी कि जनप्रतिनिधि संस्थाओं में ब्राह्मणों, गैर-ब्राह्मणों तथा तथाकथित दलित (अछूत) वर्गों को उनकी जनसंख्या के अनुपात में प्रतिनिधित्व प्राप्त होना चाहिए। कांग्रेस जनों की कथनी और करनी के अंतर को तिरुनेल्वेली की घटना से भी समझा जा सकता है। पेरियार की पहल पर वहां अस्पृश्यता को लेकर एक सभा का आयोजन किया गया था। सभी नेताओं ने जोरदार भाषण दिया। भोजन का समय आया तो पार्टी के ब्राह्मण नेताओं ने कांग्रेस के एक गैर-ब्राह्मण नेता विरुदूनगर के गोविंदसामी नाडार से दूर बैठकर भोजन करने को कहा। इस अपमान से वे इतने आहत हुए कि उन्होंने उसी समय सड़क पर आकर अपने खादी के कपड़ों को आग के हवाले कर दिया। कांग्रेस में रहते हुए पेरियार को ऐसे अनेक अनुभव हुए जिससे उनके नेताओं का जातिवादी चेहरा उनके सामने आता गया। उनमें से एक गुरुकुलम का

मामला था, जिसमें गैर ब्राह्मण विद्यार्थियों के साथ अपमानजनक व्यवहार किया जाता था। पेरियार तक मामला पहुंचा तो उन्होंने कांग्रेस की ओर से दी जाने वाली मदद पर रोक लगा दी। मगर ब्राह्मण नेताओं की मदद से गुरुकुलम के प्रबंधक सहायता राशि हासिल करने में कामयाब हो गए। पेरियार को यह अपमानजनक लगा। यह फैसला आने वाले दिनों में, न केवल तमिलनाडु, अपितु पूरे दक्षिण भारत की राजनीति में बड़े बदलावों का कारण बना। 2 मई 1925 को उन्होंने 'कुदी अरासु'(गणतंत्र) की स्थापना की जो आगे चलकर स्वः सम्मान आंदोलन का मुखपत्र बना। कांग्रेस के भीतर व्याप्त जातिवाद को गांधी का समर्थन प्राप्त था। 'नवजीवन' के 12 सिंतबर, 1927 के अंक में 'वर्णाश्रमधर्म' का बचाव करते हुए गांधी ने लिखा था-

'वर्ण' का अभिप्राय, मनुष्य की उसके पेशे संबंधी पसंद का प्रारब्धीकरण है...वर्णव्यवस्था ऐसी चीज नहीं है जो हिंदुओं पर ऊपर से थोप दी गई हो...यह मनुष्य का आविष्कार न होकर प्रकृति का अपरिवत्र्य नियम है...जिस तरह गुरुत्वाकर्षण बल न्यूटन की खोज से पहले भी काम करता था, इसी तरह वर्ण-सिद्धांत भी नैसर्गिक है। इसकी खोज का श्रेय हिंदुओं को जाता है... इस सम्मोहक और अप्रतिरोध्य प्रवृत्ति के माध्यम से हिंदुओं ने आध्यात्मिक क्षेत्र में जैसी उन्नति की है, वैसा दूसरा कोई राष्ट्र नहीं कर पाया है।

लगभग पांच वर्ष तक कांग्रेस में बिताने के बाद पेरियार समझ चुके थे कि वहां उनके लिए और अधिक निभा पाना संभव नहीं है। फिर आगे का रास्ता क्या हो?1926 में उन्हें जस्टिस पार्टी की एक सभा में शिरकत करने का अवसर मिला। तय हुआ कि लोगों को सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र की विसंगतियों से जागरूक करने के लिए एक संगठन बनाया जाए ।

स्वःसम्मान (Self-Respect) आंदोलन की स्थापना

1926 में पेरियार के कांग्रेस छोड़ने के लगभग एक वर्ष बाद, 'स्वःसम्मान आंदोलन' का जन्म हुआ। उसका पहला उद्देश्य था, सभी प्रकार के सामाजिक-सांस्कृतिक समारोहों से ब्राह्मण पुरोहितों का संपूर्ण बहिष्कार। उसका नारा था-'न ईश्वर, न धर्म, न गांधी, न कांग्रेस और न ही ब्राह्मण।' आंदोलन की सैद्धांतिकी, जातिवाद और ब्राह्मणवाद विरोधी विचार प्राचीन तमिल कवियों, सिद्धों से अनुप्रेरित थी। पेरियार का मानना था कि संगम काल और उससे पहले तक तमिल समाज में कोई जातीय विभाजन नहीं था। ब्राह्मणों ने आने के बाद उन्होंने तमिलों को जातियों के नाम पर छोटे-छोटे गुटों में बांटा और खुद शिखर पर विराजमान हो गए। पेरियार की सीधी-बेलाग भाषण शैली के फलस्वरूप स्वःसम्मान आंदोलन तेजी से लोगों के दिलों में जगह बनाने लगा। उसकी पहली वार्षिक बैठक 28 नवंबर, 1927 को तिरुनेलवेलि में हुई। उसमें जो नियम बने उनमें मंदिरों को चंदा न देना, घरेलू संस्कारों में ब्राह्मण पुरोहित का निषेध जैसे नियम शामिल थे। मात्र एक वर्ष के भीतर 'स्वःसम्मान आंदोलन' का असर दिखने लगा था। उससे पहले तमिल में बच्चों के नामकरण हेतु उत्तर भारत के देवताओं और महापुरुषों के नाम को आधार बनाया जाता था। पेरियार ने अपने समर्थकों से आग्रह किया कि वे तमिल गौरव की याद दिलाने वाले नाम रखें। वे खुद इस काम में सक्रिय थे। नवजात शिशुओं को गौतम बुद्ध की परंपरा से जोड़ते हुए, वे आमतौर पर 'सिद्धार्थ' या 'गौतम' जैसे नाम दिया करते थे। स्वःसम्मान आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए धन की आवश्यकता थी। उसके लिए पेरियार ने नई प्रथा की शुरूआत की। 'गौतम' या 'सिद्धार्थ' जैसा नाम देने के लिए वे एक रुपये का चंदा लेने लगे। पेरियार के मंतव्य को पहचानकर लोग खुशी-खुशी चंदा देते। राजगोपालाचारी की मृत्यु के बाद कामराज तमिलनाडु के मुख्यमंत्री बने तो 'कामराज' नाम देने के लिए चंदे की राशि बढ़ाकर दो रुपये कर दी गई। स्वःसम्मान आंदोलन की वैवाहिक पद्धति के अनुसार पहला विवाह राम्नाड जिले के, अरुपकोट्टई ताल्लुक के सुकलीनाथम गांव में संपन्न हुआ था। उसमें दो लड़कियों का विवाह कराया गया था। आंदोलन के आरंभिक दिनों में आंदोलन की पहली प्रांतीय बैठक बहुत महत्वपूर्ण थी। 17-18 फरवरी, 1929 को संपन्न उस बैठक में लगभग 15,000 लोगों की भागीदारी थी। बैठक का उद्घाटन करते हुए तमिल सरकार के स्वतंत्र प्रभार युक्त मंत्री-प्रमुख पी। सुब्रहण्यम ने कहा था कि हिंदू धर्म के हमें स्वार्थी बनाया है। अज्ञानी पुरोहित हमें केवल अपने भले और मुक्ति के लिए कहते हैं। न कि हमारे आसपास के लोगों के बारे में। सम्मेलन में कहा गया कि ब्राह्मण मंदिरों के चढ़ावे पर अपना अधिकार रखते हैं। यही उनकी उच्च सामाजिक-आर्थिक हैसियत का कारण है। जाति और धर्म के नाम पर उत्पीड़न का शिकार रहे लोगों पर आंदोलन कितना असरकारी था, इसका अनुमान इससे भी लगाया जा सकता है कि कुछ ही वर्षों में 'स्वःसम्मान आंदोलन' से प्रभावित 1,50,000 लोग, अपने नाम के आगे जाति-सूचक चिह्न लगाना छोड़ चुके थे। 1930 में उन्हें श्रंगेरी मठ के शंकराचार्य का आमंत्रण मिला। जिसे उन्होंने 2 मार्च 1930 के 'कुदी अरासु' के अंक में प्रकाशित किया था। यह सोचकर कि शंकराचार्य से मुलाकात का कोई सार्थक परिणाम निकलने वाला नहीं है, उस आमंत्रण को उन्होंने बट्टे खाते में डाल दिया।

अंतरराष्ट्रीय यात्राएं

13 दिसंबर 1931 को उनकी यात्रा आरंभ हुई। यात्रा के दौरान वे सोवियत संघ, जर्मनी, इंग्लेंड, फ्रांस, स्पेन तथा मध्य यूरोप के अनेक देशों में पहुंचे। वहां उन्होंने अपने विचारों का प्रचार किया। जर्मनी में उन्होंने एस. रामानाथन के साथ 'न्यूडिस्ट सोसाइटी' के नग्न प्रदर्शन में हिस्सा भी लिया। जर्मनी, फ्रांस, स्पेन, मध्य यूरोप के बुद्धिवादी संगठनों ने भी उसपर असर डाला था, जो आगे चलकर 'कुदी अरासु' तथा 'रिवोल्ट' के संपादन में देखने को मिला। सबसे प्रभावशाली यात्रा सोवियत संघ की थी, जिसने उन्हें स्वःसम्मान आंदोलन के कार्यक्रम में बदलाव को प्रेरित किया था।

हिन्दी की अनिवार्यता विरोधी आंदोलन का नेतृत्व

1918 में गांधी ने पूरे देश के लिए एक भाषा को अपनाने की सलाह दी थी। दक्षिण में हिंदी के प्रसार के लिए उन्होंने 'दक्षिण भारतीय हिन्दी प्रचार सभा' का गठन किया था। उससे दक्षिण वालों को कोई आपत्ति नहीं थी। हजारों हिन्दी कार्यकर्ता वहां हिन्दी के प्रचार में लगे थे। कार्यकताओं के प्रशिक्षण हेतु स्कूल की शुरूआत पेरियार ने अपने खर्च पर, अपने ही आवासीय परिसर में की थी। पेरियार की मुख्य चिंता तमिल की उपेक्षा को लेकर थी। 247 अक्षरों वाली भारी-भरकम लिपि के कारण तमिल सीखना गैर तमिलभाषियों के लिए कठिन था। इसके लिए पेरियार ने तमिल लिपि का सरलीकरण और अनावश्यक अक्षरों को हटा देने का सुझाव भी दिया था। तमिल अक्षरों में संशोधन करते हुए उन्होंने जो नए अक्षर-संकेत प्रस्तावित किए थे उन्हें, उनकी मृत्यु के बाद लगभग ज्यों-का-त्यों अपना लिया गया।

1937 में मंत्री-प्रमुख बनने के साथ ही राजगोपालाचारी ने माध्यमिक स्तर तक हिंदी के अनिवार्य अध्ययन को घोषणा कर दी। उस समय तक प्रदेश के स्कूलों में तमिल का अध्ययन अनिवार्य नहीं था। लोगों ने उसे ब्राह्मणवाद की वापसी की संज्ञा दी। 1938 में जस्टिस पार्टी के सर ए,

टी. पन्नीरसेवलम के साथ मिलकर पेरियार ने 'हिंदी की अनिवार्यता विरोधी आंदोलन' का नेतृत्व किया था। उनमें महिलाएं भी शामिल थीं। 1938 में महिलाओं द्वारा बुलाए गए एक सम्मेलन में ही ई.वी. रामासामी को पेरियार (महान) कहकर संबोधित किया था। आंदोलन के दौरान पेरियार और उनके साथियों को गिरफ्तार कर लिया गया। अदालत ने उन पर दो हजार रुपये का जुमार्ना और दो मुकदमों में कुल एक साल की सजा सुनाई थी।

उस समय पेरियार की ख्याति चरम पर थी। वे तमिल जनता की आवाज बन चुके थे। ऐसे में नेतृत्व का अभाव झेल रही जस्टिस पार्टी ने पेरियार को, जो उस समय जेल में थे, अपना नेता चुन लिया। इस बीच दूसरे विश्व युद्ध की घोषणा हुई। भारत को उसमे झोंक दिया। 1938 में राजगोपालाचारी के नेतृत्व में बनी मंत्री परिषद द्वारा इस्तीफा देने के बाद सारी शक्तियां गवर्नर के हाथों में आ गईं। पेरियार उन दिनों जस्टिस पार्टी के नेता थे। गवर्नर ने उन्हें मंत्री परिषद के गठन का निमंत्रण दिया। लेकिन पार्टी नेताओं के साथ परामर्श के बाद पेरियार ने प्रस्ताव नामंजूर कर दिया। फरवरी 1940 में सरकार ने हिंदी के अनिवार्य अध्ययन संबंधी आदेश को वापस ले लिया।

द्रविड़ियार कझगम की स्थापना

1944 तक भारत को अपनी आजादी करीब दिखने लगी थी। इस बीच आंतरिक उथल-पुथल के बीच जस्टिस पार्टी के महासचिव की जिम्मेदारी अन्नादुरई के कंधों पर आ गई। अन्नादुरई कुशल वक्ता, महत्वाकांक्षी और दूरदर्शी नेता थे। जनता पर उनकी पकड़ थी। वे पेरियार के करीबी और भरोसेमंद नेताओं में से थे। पेरियार के सहमति से अन्नादुरई ने 27 अगस्त, 1944 को जस्टिस पार्टी के 16वें वार्षिक अधिवेशन के लिए एक प्रस्ताव तैयार किया। उसमें पार्टी को भंग कर, गैर-राजनीतिक संगठन 'द्रविड़ियार कझगम' में बदलने की अनुशंसा की गई थी। लंबी बहस और कुछ नेताओं की नाराजगी के बावजूद पेरियार उस प्रस्ताव को स्वीकृत कराने में सफल रहे।

मणिअम्मई से विवाह

10 मार्च 1917 को जन्मी मणिअम्मई युवावस्था से ही सामाजिक कार्यक्रमों में सक्रिय थीं। पिता की मृत्यु के तुरंत बाद वे 'द्रविड़ियार कझगम' में शामिल हो गईं। वे पेरियार के भाषणों को इकट्ठा करती, उन्हें पुस्तिकाओं के रूप में प्रकाशित कर सभाओं में वितरित करातीं और पेरियार की सामान्य जरूरतों का ख्याल रखती थीं। ऐसे में जब 'द्रविड़ियार कझगम' के बड़े नेताओं में राजनीतिक महत्वाकांक्षाएं पनपने लगी थीं, मणिअम्मई पूरी तरह से आंदोलन को समर्पित थीं। 'द्रविड़ियार कझगम' के प्रति मणिअम्मई का समर्पण देख पेरियार ने उन्हें अपना उत्तराधिकारी बनाने का फैसला किया। इस काम में आ रही कानूनी अड़चन के कारण पेरियार ने अंततः मणिअम्मई से विवाह करने का फैसला किया। उस समय मणिअम्मई उम्र के 32वें वर्ष में थीं, जबकि पेरियार 70वें वर्ष में चल रहे थे। मणिअम्मई से विवाह प्रकारांतर में 'द्रविड़ियार कझगम' में फूट का कारण बना। लोगों की प्रतिक्रियाएँ पेरियार से छिपी न थीं। संस्था के मुखपत्र 'विदुथलाई' में उन्होंने लिखा भी था-

'यह कौन नहीं जानता कि यदि इस उम्र में भी मेरा जीवन सुकून-भरा है, तो उसके पीछे इस महिला का बड़ा योगदान है। यही वह स्त्री है जो मुझे ठीक समय पर उपयुक्त भोजन और कपड़े उपलब्ध कराती है। जिन लोगों में मेरा विरोध करने की हिम्मत नहीं है, वही उस महिला में दोष निकालते हैं।'

मणिअम्मई आजीवन 'द्रविड़ियार कझगम' को समर्पित रहीं। पेरियार की मृत्यु के पश्चात वे 'द्रविड़ियार कझगम' की अध्यक्ष बनीं। समय आने पर उन्होंने खुद को पेरियार का वैचारिक उत्तराधिकारी भी सिद्ध किया।

सामाजिक क्रांति को समर्पित अनथक योद्धा

'स्वःसम्मान आंदोलन' के मुख्य कार्यक्रम पेरियार के अपने जीवनानुभवों की देन थे। अंतरजातीय विवाह का मुद्दा स्त्री-मुक्ति से जुड़ा था। उसकी प्रेरणा उन्हें अपनी युवावस्था की घटनाओं से मिली थी। वलेला जाति का एक युवक पेरियार की दुकान पर नौकरी करता था। एक दिन उसकी मां ने पेरियार से संपर्क कर, उसका विवाह कराने की प्रार्थना की। पेरियार ने उसके लिए नायडू परिवार की लड़की को चुना। लड़की अवैध नायडू संतान थी। वह शादी स्थानीय नेताओं और सरकारी कर्मचारियों की उपस्थिति में बड़ी धूमधाम से संपन्न हुई। उसकी खूब चर्चा हुई। 'स्त्री-मुक्ति' के क्षेत्र में दूसरा कार्यक्रम विधवा विवाह को प्रोत्साहन देना था। इस योजना के तहत कई विधवाओं के पुनर्विवाह कराए गए जिनमें से एक पेरियार की अपनी भतीजी भी थी।

स्त्री-समानता पर उनके विचार आधुनिकता से भरपूर थे। उनका मानना था कि स्त्री-पुरुष का विवाह स्वर्ग में बनी जोड़ियां नहीं हैं। दांपत्य सुख के लिए किया गया समझौता है, जिसमें लड़का और लड़की दोनों बराबर के सहभागी होते हैं। पेरियार ने मुक्त कंठ से स्त्री समानता और स्वतंत्रता का समर्थन किया। कहा कि समाज में स्त्री को वे सभी अधिकार और अवसर प्राप्त होने चाहिए जो पुरुष को प्राप्त हैं। मातृत्व स्त्री का चयन होना चाहिए, कर्तव्य नहीं। यदि कोई स्त्री संतान नहीं चाहती, तो उसे संतानोत्पत्ति के लिए बाध्य नहीं किया जाना चाहिए। 1930 में मद्रास में देवदासी प्रथा के विरोध में बिल लाया गया। पेरियार ने उसका जोरदार तरीके से समर्थन किया।

पेरियार का पूरा जीवन संघर्ष को समर्पित रहा। एक दर्जन से ज्यादा बार वे जेल गए। उनके दफ्तरों और अखबारों पर सरकार ने दबीश दी। कुर्की के आदेश निकाले। जुमार्ने किए। मगर कोई भी दबाव सरकार का पेरियार के इरादों को कमजोर न कर सका। देश आजाद हुआ तो तमिलनाडु की कमान एक बार फिर राजगोपालाचारी के हाथों में आ गई। सत्ता में आते ही उनके भीतर मौजूद वर्णवाद एक बार फिर सिर उठाने लगा। उन्होंने स्कूली शिक्षा से संबंधित नया आदेश निकाला, जिसमें व्यवस्था की गई थी कि कामगार परिवारों से आने वाले विद्यार्थी आधे दिन स्कूलों में शिक्षा ग्रहण करेंगे। बाकी समय वे अपने पैत्रिक व्यवसाय का घर पर रहकर प्रशिक्षण लेंगे। निस्संदेह वह जातिवाद को संरक्षण देने की चाल थी। पेरियार ने नई शिक्षा-नीति का कड़ा विरोध किया था। प्रतिक्रिया इतनी तीव्र थी कि राजगोपालाचारी को मुख्यमंत्री की कुर्सी गंवानी पड़ी। उनके स्थान पर कामराज को मुख्यमंत्री बनाया गया। उन्होंने उस पक्षपात पूर्ण आदेश को वापस ले लिया।

न्यायालय की आड़ में जातीय आरक्षण को वापस लेने की कांग्रेस की चाल को भी पेरियार की सजगता के कारण नाकाम होना पड़ा। आजादी के बाद जैसे ही संविधान लागू हुआ, ब्राह्मणों ने तमिलनाडु में दशकों से चले आ रहे आरक्षण कानून के विरुद्ध मद्रास हाई कोर्ट में वाद दायर कर दिया। उसका संज्ञान लेते हुए उच्च न्यायालय ने लगभग तीन दशक पुराने अध्यादेश को रद्द कर दिया। पेरियार उस समय लगभग 75 वर्ष के थे। जिस जातीय आरक्षण को उन्होंने लंबे संघर्ष के बाद प्राप्त किया था, जिसके लिए सैकड़ों लोगों ने बलिदान दिया था, उसे वे छीने जाते हुए चुपचाप नहीं देख सकते थे। सो वह बूढा शेर एक बार फिर दहाड़ उठा। उनके आवाहन पर जनता सड़कों पर उतर आई। चौतरफा

दबाव के बीच सरकार को समझौते के लिए आगे आना पड़ा। परिणति 1951 में पहले संविधान संशोधन के रूप में हुई।

पेरियार नास्तिक थे। उनके पास आस्थावादियों के 'धर्म नहीं तो क्या?' जैसे प्रश्नों का भी उत्तर था। धर्म के विकल्प के रूप में वे बुद्धिवाद को स्थापित करना चाहते थे। इस संबंध में उनके कई आलेख स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए थे। 'बुद्धिवाद' के प्रचार के लिए उन्होंने देश-भर की यात्राएं की थीं। जगह-जगह जाकर हिंदू धर्म में व्याप्त रूढ़ियों, अंधविश्वासों, ऊंच-नीच के खिलाफ जनता को सावधान भी किया था। अंग्रेजी की पत्रिका 'दि मॉडर्न रेशनलिस्ट' की शुरूआत भी इसी उद्देश्य के लिए की गई। उनका कहना था कि समाज की स्थापना धर्म अथवा संस्कृति जैसी प्राचीन अवधारणाओं के बजाय, आधुनिकता और बुद्धिवाद के आधार पर होनी चाहिए। 1971 में एक सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा था :

'हमें ईश्वर पर आश्रित कुछ भी नहीं चाहिए। न ईश्वर की संतान, न धर्म, न शास्त्र, न पूजा-पाठ और न किसी प्रकार का कर्मकांड। हम उन्हीं चीजों तक सीमित रहेंगे जो विवेक-सम्मत होते हुए तर्क की कसौटी पर खरी उतरती हों। हम जो कह रहे हैं, उसपर विश्वास करने से पहले उसके प्रत्येक शब्द पर सोचिए, समझिए और भली-भांति विवेक-सम्मत सिद्ध होने पर ही उसे अपनाइए।'

जातीय दंभ के शिकार तमिल ब्राह्मण स्वयं को आर्य मूल का मानते थे। पिछड़े समूहों को उनके वर्चस्व से बाहर निकालने के लिए प्राचीन सांस्कृतिक स्थापनाओं को चुनौती देना आवश्यक था। पेरियार ने धर्म को सीधी चुनौती दी। कहा कि धर्म के अंधेरे में भटकने बजाय लोगों को चाहिए कि वे अपने विवेक का इस्तेमाल करें। देवी-देवताओं, अवतार पुरुषों, महाकाव्यों, पुराणों, ईश्वर, धर्म आदि को उन्होंने कपोल कल्पित माना। उन्हें गैर-ब्राह्मणों के विरुद्ध ब्राह्मणों के षड्यंत्र की संज्ञा दी। समाज को मूर्तिपूजा और तत्संबंधी अन्यान्य आंडबरों से दूर रखने के लिए आंदोलन चलाए। वर्ण-व्यवस्था का समर्थन करने वाले ग्रंथों 'रामायण' और 'मनुस्मृति' की प्रतियां जलाई गईं। 1955 में सार्वजनिक स्थल पर राम के चित्रों का दहन करते हुए उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। देश-भर में उनकी व्यापक आलोचना हुई, किंतु वे डटे रहे।

'कुदी अरासु' नए मूल्यों को समर्पित साप्ताहिक था। इसी पत्र में उन्होंने 1935 में भगत सिंह के चर्चित लेख 'मैं नास्तिक क्यों बना' का तमिल अनुवाद प्रकाशित किया था। भगत सिंह की फांसी पर गांधी की चुप्पी की आलोचना करते हुए पेरियार ने इस पत्रिका के 29 मार्च 1931 के अंक में लिखा थाः

'देश-भर में ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं है, जिसने भगत सिंह की फांसी की निंदा न की हो। कहीं कोई भी नहीं है जिसने इस घटना के लिए सरकार को कोसा न हो। दूसरी ओर हम देख रहे हैं कि देश-भर में ऐसे अनेक देश-भक्त, और राष्ट्र-नेता हैं जो गांधी को इस घटना के लिए दोषी मानते हैं।'

दक्षिण भारत के इतिहास में 1927 से 1934 तक का समय सर्वाधिक परिवर्तनकामी था। उस समय तक पेरियार द्वारा चलाया गया 'स्वःसम्मान आंदोलन' जनमानस में गहरी पैठ बना चुका था। उससे पूर्ववर्ती आंदोलनों पर किसी-न-किसी रूप में धर्म की छाया थी। जबकि स्वःसम्मान आंदोलन की नींव धर्मनिरपेक्षता और किसी भी प्रकार के आडंबरवाद से मुक्त थी। जनमानस में 'स्वःसम्मान आंदोलन' की पैठ का अनुमान इससे भी लगाया जा सकता है कि न केवल सामाजिक संगठन, बल्कि दक्षिण भारत के सैन्य बल भी उसके समर्थन में थे। 'जस्टिस पार्टी' के वरिष्ठ नेता और दक्षिण भारत में 'निर्ब्राह्मणीकरण आंदोलन' के सक्रिय कार्यकर्ता आर्कट रामासामी मुदलियार ने पेरियार द्वारा चलाये गए 'स्वःसम्मान आंदोलन' के लिए उनकी तुलना महान दार्शनिक रूसो के साथ की हैः

'उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में फ्रांसीसी विचारक रूसो ने अपने देशवासियों के तर्क-सामर्थ्य को संदीप्त किया। जिससे वहां फ्रांसिसी समाज बड़ी क्रांति के लिए तैयार हुआ। मैं यह कहूंगा कि पेरियार के कारण ही हम तमिलवासियों ने तर्क करना सीखा। जिसने आगे चलकर हमारे भी आत्मसम्मान की चेतना जाग्रत की। इस आधार पर पेरियार तमिलनाडु के रूसो हैं।'

अपने जीवन में पेरियार ने कई पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया। लेकिन उनका विश्वास जनता के साथ सीधे संवाद में था। यह सक्रियता जीवन के अंतिम वर्षों में भी कायम थी। 85 वर्ष में जब अधिकांश व्यक्ति सार्वजनिक जीवन से संन्यास ले लेते हैं, पेरियार लगातार आंदोलन चला रहे थे। उनकी सक्रियता का आकलन इससे भी किया जा सकता है कि अपने जीवन के आखिरी 5 वर्षों में उन्होंने लगभग 900 बैठकों में हिस्सा लिया था जिनमें 1965-1966 के आंकड़े शामिल नहीं हैं। इन सभी बैठकों में उन्होंने 45 मिनट से लेकर 90 मिनट तक भाषण दिया था। जनसंवाद के मामले में वे 'एकोऽहम द्वितीयोनास्ति' किस्म के नेता थे। 24 दिसंबर 1973 को उनका निधन हुआ। उससे पहले 19 दिसंबर को अपने अंतिम भाषण में उन्होंने कहा था-

'महानतम लक्ष्य जो मेरे जीवन से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है, वह है शूद्रों को बनियों और ब्राह्मणों के चंगुल से मुक्त कराना... अमेरिका के गोरे लोगों के राज में कालों की जो हालत थी, हमारी स्थिति भी उससे भिन्न नहीं है। अब वहां काले लोग बराबरी के स्तर को प्राप्त कर चुके हैं। भारत में ब्राह्मण आज भी खुद को ऊंची जाति का मानते हैं... मैं सभी धर्मों का बैरी हूं। चाहता हूं कि उन्हें खत्म हो जाना चाहिए। मेरा एकमात्र लक्ष्य यह देखना था कि द्रविड़ आत्म सम्मान का जीवन जिएं। इसके लिए मैं हमेशा काम करूंगा।'

वे मुखर वक्ता, निर्भीक और मानव-मूल्यों से प्रतिबद्ध नेता थे। उन्होंने श्रमिक आंदोलनों का नेतृत्व किया। विरोधियों ने उनपर हमले करवाये। मगर एक भी घटना उनके हौसले को कम न कर सकी। 1970 में पेरियार के योगदान को सम्मानित करते हुए यूनेस्को ने उन्हें 'दक्षिण-पूर्वी एशिया का सुकरात' का दर्जा दिया था। यूनेस्को की ओर दिए गए सम्मानपत्र में लिखा था-

महान नास्तिक
नए युग के मसीहा
दक्षिण-पूर्वी एशिया के सुकरात
समाज सुधार आंदोलन के पितामह
अंधविश्वास, अज्ञानता, निरर्थक रीति-रिवाजों तथा
हेय शिष्टाचार के कट्टर दुश्मन पेरियार के नाम

मगर इससे भी बड़ा, सच्चा सम्मान तो जनता की ओर से मिला था, जो उन्हें 'पेरियार' मानती थी।

(लेखक की अभी हाल ही में 'पेरियार ईवी रामासामीः भारत के वाल्टेयर' नामक जीवनी आई है। संप्रति पेरियार रचनावली पर काम कर रहे हैं।)

वीरेन्द्र यादव

पेरियार ललई सिंह : देशज आधुनिकता के सबाल्टर्न प्रहरी

उत्तर भारत के हिंदी क्षेत्र को लेकर यह धारणा बनी हुई है कि जहां हिंदी पट्टी ने स्वाधीनता आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभाई, वहीं सांस्कृतिक पुनर्जागरण में इसका अपेक्षित योगदान लगभग नगण्य रहा। कबीर और रविदास ने भक्ति-आंदोलन के दौरान श्रमशील समाज के जीवानानुभवों, संघर्षों, सहज ज्ञान व तर्क से जिस सामाजिक चेतना की आधारशिला रखी थी, उसे तुलसी की भक्तिमार्गी वर्णाश्रमी धारा ने अधिगृहीत कर काफी कुछ निष्प्रभावी बना दिया था। उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में ज्योतीराव फुले, सावित्रीबाई फुले, पेरियार ई.वी. रामासामी और बाबा साहब डॉ. अंबेडकर के वैचारिक व सामाजिक हस्तक्षेप द्वारा गैर हिन्दी क्षेत्रों के हाशिए के समाज की इस वैचारिकी को जो पुनर्जीवन मिला, उससे हिंदीभाषी क्षेत्र भी अछूते नहीं रहे।

उत्तर प्रदेश (तत्कालीन संयुक्त प्रांत) में स्वामी अछूतानंद (1879-1933) और रामचरन (1888-1939) के 'आदि हिंदू' आंदोलन के माध्यम से हशिए के मेहनतकश और निम्न कही जानी वाली जातियों में नई चेतना का संचार किया। सामाजिक न्याय और समता के आदर्शों से प्रेरित इनकी वैचारिकी ब्राह्मणवादी शोषण की व्यवस्था के विरुद्ध सशक्त उद्घोष थी। इसी दौर में रामचरन, चंद्रिका प्रसाद जिज्ञासु, संतराम बी.ए., रामस्वरूप वर्मा आदि के साथ पेरियार ललई सिंह एक प्रमुख नाम थे। इन सभी के मानवीय और समतामूलक समाज निर्माण को हिंदी समाज की वर्चस्वशाली सामाजिक और सांस्कृतिक चिंतनधारा से सायास अनुपस्थित और अचर्चित रखा गया। ये सभी मूलतः शूद्र समुदाय से सम्बंधित और पहली शिक्षित पीढ़ी से थे। ललई सिंह (1911-1993) मुख्यतः पेरियार ईवी रामास्वामी की वैचारिकी से प्रेरित थे। पेरियार से प्रेरित होने के कारण ही उन्हें 'उत्तर भारत का पेरियार' कहा जाने लगा। वे स्वाभिमानी और विद्रोही स्वभाव के थे। जो चेतना पेरियार के 'आत्म सम्मान' (Self-Respect) आंदोलन से निकली थी। वे हाई-कमांडर थे, ग्वालियर नेशनल आर्मी में। आर्मी में सेवा करते हुए भी, उन्होंने 'सिपाही की तबाही' शीर्षक से एकांकी लिखा, सिपाहियों को संगठित कर आंदोलन किया और जेल गए। जेल में भी उन्होंने 'कैदी महासभा' का गठन किया। उन्होंने 1946 में देश की आजादी के साथ देशी रियासतों की गुलामी से भी आजादी की मांग तेज की।

पेरियार ललई सिंह को अपने जमीनी अनुभवों के चलते इस बात का अहसास था कि देश की राजनीतिक आजादी तब तक पूर्ण नहीं होगी जब तक उसे सामाजिक और आर्थिक गुलामी से मुक्ति नहीं मिलेगी। पेरियार के नेतृत्व में दक्षिण भारत का 'आत्मसम्मान आंदोलन' इस दिशा में उनकी मूल प्रेरणा बना। पेरियार के जन्मदिन (17 सितम्बर) के अवसर पर 1960 में उन्होने 'सस्ता प्रेस' की शुरूआत की जहां से उन्होंने छोटी-छोटी पुस्तिकाओं के माध्यम से दलित व पिछड़े समाजों के मेहनतकश वर्गों में ईश्वर, धर्म और हिंदू मिथकों देवी-देवताओं की जकड़बंदी के विरुद्ध नवजागरण अभियान छेड़ा। इतना ही नहीं अपने गुरु पेरियार को 12-13 अक्टूबर, 1968 ईस्वी को चंद्रिका प्रसाद जिज्ञासु और छेदीलाल साथी के साथ मिलकर कानपुर और लखनऊ में

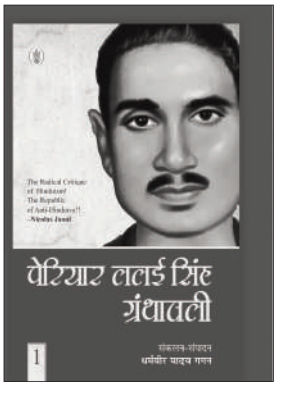

भाषण देने के लिए बुलाया।

इस जन-जागरण अभियान के अंतर्गत पेरियार ललई सिंह ने 'वीर संत माया बलिदान', 'शम्बूक वध', 'एकलव्य', 'नाग यज्ञ' और 'अंगुलिमाल' सरीखे नाटक लिखकर धर्म की वर्चस्वशाली परंपरा का प्रतिविमर्श रचकर हाशिये के बहुजन समाज को चेतना सम्पन्न बनाने की पहलकदमी की। इन नाटकों के लिखे जाने के मंतव्य का खुलासा करते हुए उन्होंने 'शम्बूक वध' नाटक की भूमिका में लिखा कि 'नाटक के छापे जाने की पहली मंशा है अधिकार वंचित शूद्र व महाशूद्र अपने अधिकार समझें। मांगें! छीनें! इसी स्थिति के कारण मैं बार-बार कहता हूं कि-'अधिकार मांगें नहीं छीने जाते हैं।' और 'सामाजिक अपमान गरीबी से अधिक खटकता है।' दूसरी मंशा, इस देश के सवर्ण हिंदू शूद्रों व महाशूद्रों को उनका मानवीय अधिकार सौंप दें। तीसरी मंशा, सरकार के लिए कड़ी चेतावनी है कि उसने यदि उन्हें प्रत्येक प्रकार के मानवीय अधिकार न दिलाए तो इस देश में गृह युद्ध का संकट सदैव बना रहेगा।'

पेरियार ललई सिंह की इस चेतावनी में बाबा साहब डॉ. आंबेडकर द्वारा संविधान सभा में 25 नवम्बर, 1949 को दिए गए उस भाषण की अनुगूंज थी जिसमें उन्होंने कहा था कि 'इस संविधान द्वारा आज हम एक व्यक्ति एक मत के सिद्धांत को स्वीकार कर राजनीतिक जनतंत्र में प्रवेश कर रहे हैं, लेकिन यदि यह राजनीतिक जनतंत्र सामाजिक जनतंत्र व आर्थिक जनतंत्र का रूप न ले सका तो राजनीतिक जनतंत्र भी खतरे में पड़ जाएगा।' इसी क्रम में पेरियार ललई सिंह ने 'आर्यों का नैतिक पोल प्रकाश', 'आदिवासियों की पहचान', 'सच्ची रामायण', 'सच्ची रामायण की चाभी' सरीखी पुस्तकों की भी रचना की थी। इन रचनाओं द्वारा वे उस जन-बुद्धिजीवी की भूमिका का निर्वहन कर रहे थे, जो तर्क, ज्ञान और वैज्ञानिक चेतना के माध्यम से अंधविश्वास, हिंदू मिथ्या धार्मिक चेतना और ब्राह्मणवादी कर्मकांड के विरुद्ध तर्कशील आधुनिक सोच को आंदोलन का रूप दे रहे थे। कहना न होगा कि पेरियार ललई सिंह भाषा और अभिव्यक्ति के स्तर पर किताबी बौद्धिक का मुहावरा न अपनाकर उस जमीनी श्रमशील समाज की भाषा में संवाद कर रहे थे, जो सर्वाधिक प्रभावी व कारगर था। वे सैद्धांतिक रूप से भी हिंदी के जनभाषी स्वरूप के ही पक्षधर थे, उसके संस्कृतनिष्ठ तत्समीकृत रूप के नहीं। 'हिंदी, हिंदू, हिंदुस्तानी' के नारे को नकारते हुए उन्होंने शासक वर्ग के उस सवर्ण पाखंड का खुलासा किया था, जिसमें वे अपनी संतानों को अंग्रेजी शिक्षा देते थे और मेहनतकश वर्गों को इससे वंचित रखना चाहते थे। देश के अन्य भूभाग के निम्न वर्गों (सबाल्टर्न) के जन-बुद्धिजीवियों की तरह वे सामाजिक न्याय व समता के आदर्शों

से प्रेरित होकर वैदिक ब्राह्मणवाद की श्रेष्ठतावादी विभेदकारी वर्ण और जाति-संस्कृति के विरुद्ध जमीनी चेतना का प्रचार-प्रसार कर रहे थे। वे वर्चस्ववादी सत्ता-संरचना को चुनौती देते हुए, आमूलचूल उन्मूलन के लिए प्रतिबद्ध बौद्धिक और आंदोलनकारी पहल कर रहे थे लेकिन समाज की मुख्यधारा में उनकी स्वीकृति इसलिए नहीं बन सकी क्योंकि उनके सुधारवादी मुहावरे में प्रभुत्ववादी संस्कृति के प्रति समन्वय का भाव न होकर स्पष्ट रूप से तार्किक, नकार व अधिकार की हुंकार थी। स्वाधीनता पूर्व और बाद के वर्षों में प्रभुत्वकारी राजनीतिक व सामाजिक दृष्टिकोण के समन्वयकारी रूप और जमीनी सामाजिक यथार्थ में रची बसी तार्किक सोच के बीच इस विलगाव के चलते देशज आधुनिकता का विकास अवरुद्ध हुआ।

स्वीकार किया जाना चाहिए कि राजनीतिक स्वाधीनता और सामाजिक स्वाधीनता के सहमेल के न चलते भारतीय राष्ट्र-राज्य को समतावादी आधुनिक जनतंत्र बनाने की परियोजना आधी-अधूरी रही। वर्णाश्रमी जाति-व्यवस्था की सोपानीकृत व्यवस्था में उच्च पदस्थ लोगों द्वारा अपने विशेषाधिकारों से मुक्ति की उम्मीद वांछनीय तो थी, लेकिन व्यावहारिक नहीं। ऐसे में पेरियार के आमूलचूल परिवर्तनकारी सामाजिक आंदोलन से ललई सिंह सरीखे सामाजिक कार्यकताओं का प्रेरित होना स्वाभाविक था। उत्तर भारत की धर्मभीरु जनता को धर्म, अंधविश्वास और परंपरा की जकड़न से मुक्ति के लिए जहां उन्होंने 'आर्यों का नैतिक पोल प्रकाश' व 'आदिनिवासियों की पहचान' सरीखी पुस्तकें लिखकर आर्यों की आमद, प्रभुत्व व विस्तार का लोकग्राही वृत्तांत लिखा तो वहीं यहां के मूल निवासियों की अस्मिता का अहसास कराया। यह सब उच्च सवर्ण चिंतन का प्रति-विमर्श होने के चलते ब्राह्मणवादी सवर्ण बौद्धिकों को तो अस्वीकार्य था ही, मुख्यधारा के परिवर्तनकामी बौद्धिक भी धर्म और मिथक की इस जनोन्मुखी व्याख्या को लेकर सहज नहीं थे। यह अकारण नहीं है कि पेरियार ललई सिंह की वैचारिक व साहित्यिक पुस्तिकाओं की संस्तुति चंद्रिका प्रसाद 'जिज्ञासु' व संतराम बी.ए., छेदीलाल साथी सरीखे सहधर्मी सामाजिक आंदोलनकारियों ने तो की, लेकिन उच्च सवर्ण पृष्ठभूमि के बौद्धिकों ने नहीं। यह लक्षित किया जाना चाहिए कि प्रगतिशील मार्क्सवादी सांस्कृतिक आंदोलन में भी इन सबाल्टर्न बौद्धिकों का कोई उल्लेख नहीं है। कारण यह कि सोवियत क्रांति के प्रभाव व प्रेरणा के चलते मार्क्सवादी आंदोलन समता, समानता के समाजवादी मूल्यों का तो पक्षधर होकर वर्गहीन समाज की स्थापना के लिए प्रतिश्रुत था, लेकिन वर्णगत और जातिगत विभाजन के विरुद्ध प्रभावी संघर्ष उसके एजेंडे में शामिल नहीं था। यही कारण था कि चंद्रिका प्रसाद जिज्ञासु, पेरियार ललई सिंह, रामस्वरूप वर्मा आदि सरीखे सबाल्टर्न बौद्धिकों की वामपंथी आंदोलन से निकटता नहीं स्थापित हो पाई।

हिंदी में साहित्यिक और वैचारिक लेखन के बावजूद 'हिंदी साहित्य के इतिहास' के पवित्र आंगन में तो इन निम्नवर्गीय (सबाल्टर्न) जन-बौद्धिकों का प्रवेश वर्ज्य था ही, स्वाधीन भारत में साहित्य अकादमी सरीखी स्वायत्त संस्थाओं द्वारा प्रकाशित 'ए हिस्ट्री ऑफ इंडियन लिट्रेचर' में भी इन्हें दर्ज नहीं किया गया। इसी कारण इस ग्रंथ के संकलनकर्ता धर्मवीर यादव गगन को संपूर्ण भारत में घूम-घूम कर साधारण लोगों के बीच से पेरियार ललई सिंह की किताबें, साक्षात्कार, पत्र, भाषण, संस्मरण आदि एकत्रित करना पड़ा। देश के विश्वविद्यालयों के शोध-प्रबंधों के दायरे से तो इन्हें पूर्णतः वंचित ही रहना था। पेरियार ललई सिंह के ही शब्दों में 'आज जितनी भी पुस्तकें स्कूलों, कालेजों, विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती हैं, सब आर्यों द्वारा आर्यों के वर्चस्व की मानसिकता से लिखी गई हैं...हमारे मूलनिवासी आदिनिवासियों का इतिहास किसी भी संस्था में नहीं दिया जाता है। न ही मूल निवासियों की सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना से लिखी गई कोई पुस्तक कहीं भी पढ़ाई जाती है...हमारी सारी महान विभूतियों को निगल लिया ब्राह्मण-पुरोहितों, वर्चस्ववादी संस्कृति ने...इनकी पुस्तकों को खोज-खोज कर जलाया, नष्ट किया। इसे आप आदिनिवासियों और बौद्ध साहित्य, दर्शन को नष्ट किए जाने वाले आर्यों के अभियान से समझ सकते हैं।' इस समूची प्रक्रिया और षड्यंत्र का पदार्फाश पेरियार ललई सिंह ने अपनी पुस्तिकाओं 'आर्यों का नैतिक पोल प्रकाश', और 'आदिनिवासियों की पहचान' में किया है। इन पुस्तकों के साथ-साथ उनके अन्य लेखन का प्रकाशन साहित्य व समाज-विज्ञान की बड़ी रिक्ति की बहुप्रतीक्षित भरपाई है। उनके चिंतन पर हिंदी साहित्य के साथ हिंदू मिथक, धर्म, दर्शन, समाज विज्ञान, निम्नवर्गीय अध्ययन (सबाल्टर्न स्टडीज) आदि में पूर्ण अध्ययन हो सकता है।

पेरियार ललई सिंह भारतीय समाज में वर्ण और जाति आधारित शोषण का निदान उत्पीड़क जातियों के विरुद्ध उत्पीड़ित जातियों की गोलबंदी तक सीमित न करके वर्ण-जाति- उन्मूलन के लक्ष्य में तलाशते थे। वे वर्ण जातिभेद को उच्च जातियों तक सीमित न करके निचले स्तर की जातियों में भी इसके दुष्प्रभावों को निशानदेही करते थे। उनका कहना था कि 'ब्राह्मणवादी ऊंच-नीच की भावना अछूतों में भी है-चमार, भंगी को नीच और अपने को ऊंच समझते हैं। अहीर चमार से अपने आपको ऊंचा समझते हैं। अतः अछूतों को चाहिए कि वे किसी को भी नीच-ऊंच न समझें।' उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि स्कूलों, कालेजों की पाठ्य-पुस्तकों में जाति-पांति के विरुद्ध पाठ निर्धारित किए जाएं और भारत सरकार व राज्य सरकारें जाति-पांति के विरुद्ध छोटी-छोटी पुस्तिकाएं विभिन्न भाषाओं में लिखवा और छपवा कर बहुत बड़ी संख्या में मुफ्त बांटे। उनका सुझाव था कि 'जाति तोड़कर विवाह करने वाले जोड़ों और उनकी संतान को सरकारी नौकरियों में प्राथमिकता दी जाए। ऐसे विवाहों में एक वर्ग (अर्थात पुरुष या स्त्री) अछूत जरूर हों।' उनका यह भी सुझाव था कि जाति नामधारी शैक्षणिक संस्थाओं को न तो सरकारी अनुदान दिया जाए और न इनको शिक्षा विभाग स्वीकृति ही दें। और यह भी कि 'अदालती कागजों और स्कूलों तथा कॉलेजों के रजिस्ट्रों से जाति का खाना निकाल दिया जाए और किसी से उसकी जाति पूछना, उसकी आमदनी पूछने की तरह खराब समझी जाए।'

यह जानना दिलचस्प और जरूरी है कि जिन पेरियार ईवी रामासामी के भौतिकतावादी तर्कशील चिंतन ने दक्षिण भारत की राजनीति व वैचारिकी को आमूलचूल परिवर्तनकारी दिशा प्रदान की, जिस पर आज भी दक्षिण भारत की राजनीति और समाज टिका हुआ है, चल रहा है उसे ही जब ललई सिंह ने उत्तर भारत में प्रचारित-प्रसारित करने का संकल्प लिया तब उ.प्र. सरकार ने पूरी तरह अवरोध पैदा किए। ललई सिंह ने पेरियार द्वारा लिखित बहुचर्चित पुस्तक 'दि रामायनाः ए ट्रू रीडिंग' का रामअधार कृत हिंदी अनुवाद 'सच्ची रामायण' का प्रकाशन 1968 में झींझक, कानपुर के अपने 'अशोक पुस्तकालय' प्रकाशन और 'सस्ता प्रेस' मुद्रण से किया। इसके पहले ही संस्करण की एक हजार प्रतियां छापी गईं। रामायण के वर्णाश्रमी वर्चस्व के मूल्यों को चुनौती देने वाली इस पुस्तक की लोकप्रियता से सशंकित होकर उत्तर प्रदेश सरकार ने एक वर्ष के अंदर ही इस पर प्रतिबंध लगा दिया। इस जब्ती को हाईकोर्ट में पेरियार ललई सिंह द्वारा चुनौती दिए जाने पर इलाहाबाद हाईकोर्ट ने इसे निरस्त कर दिया उत्तर प्रदेश सरकार पर जुमार्ना ठोक दिया। इसके खर्च आदि की भरपाई का आदेश भी दिया। इसके विरुद्ध उ.प्र. सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में अपील दायर की, वहां भी प्रदेश सरकार की हार हुई और अंततः 16 सितम्बर, 1976 को सुप्रीम कोर्ट के आदेश से पुस्तक पर प्रतिबंध हटा और कोर्ट ने जब्त प्रतियां पेरियार ललई सिंह को वापस करने का आदेश

दिया। इसके बावजूद उ. प्र. सरकार की वक्रदृष्टि पेरियार ललई सिंह के साहित्य और चिंतन पर बरकरार रही। इसी कारण उनकी अन्य लगभग सभी किताबों पर मुकदमें सरकार करती रही। एक किताब तो प्रतिबंधित ही करवा दिया। इन बाधाओं के होते हुए भी 1976 से 1990 तक लगभग हर वर्ष इस पुस्तक के नये संस्करण प्रकाशित होते रहे। बहुजन समाज के बीच इसे उपलब्ध काराने के लिए मेलों और विभिन्न सामाजिक अवसरों पर पेरियार ललई सिंह स्वयं इस पुस्तक को साइकिल पर रखकर बेचा करते थे। यह तथ्य उल्लेखनीय है कि 'सच्ची रामायण' की बुक-स्टाल पर खुली बिक्री तभी सुनिश्चित हो सकी जब कांशीराम की पहलकदमी पर 1995 में बहुजन सामाज पार्टी की पहली बार सरकार बनी। पेरियार ललई सिंह के अथक प्रयासों और संघर्षों के परिणामस्वरूप हिंदी में 'सच्ची रामायण' की पहली बार उपलब्धता तो सुनिश्ति हुई, लेकिन बसपा सरकार के प्रयासों के बावजूद पेरियार ईवी रामासामी की प्रतिमा लखनऊ के आंबेडकर स्मारक में या उत्तर प्रदेश में कहीं भी हिंदुत्ववादियों के प्रबल विरोध के चलते आज तक न स्थापित हो सकी। 'सच्ची रामायण' के अतिरिक्त पेरियार ललई सिंह की जिन अन्य पुस्तकों को सरकारी कोपभाजन का समय-समय पर शिकार होना पड़ा, उनमें 'सिपाही की तबाही' तो ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रतिबंधित हुई। 'ईश्वर, आत्मा एवं वेदों आदि में विश्वास अधर्म है' 'हिंदू संस्कृति में वर्ण-व्यवस्था और जातिभेद', 'आर्यों का नैतिक पोल प्रकाश' आदि शामिल हैं। ये सभी पुस्तकें बहुसंख्यक समुदाय के मुखर वर्चस्वशाली लोगों की भावनाओं के आहत होने के आधार पर प्रतिबंधित की गई थीं। दरअसल आहत भावनाओं का यह तर्क भारतीय राष्ट्र-राज्य के वर्णवादी ब्राह्मणवाद के प्रति सहृदयता का परिणाम अधिक था, आहत भावनाओं का कम, जो आजतक सतत जारी है। इन प्रतिबंधों से यह तथ्य भी सुस्पष्ट है कि भारतीय संविधान की वैज्ञानिक व तर्कवादी अवधारणा के बावजूद तर्क, ज्ञान व वैज्ञानिक दृष्टि के प्रचार-प्रसार में पेरियार ललई सिंह सरीखे जमीनी बौद्धिकों को कितना संघर्ष करना पड़ा था। सच तो यह है कि ललई सिंह हिंदी क्षेत्र में आजीवन पेरियार के विचारों के अकेले सेनानी रहे और सहज सरल भाषा में लिखित उनकी पुस्तकें तर्कशील वैज्ञानिक विचारों की वाहक रहीं लेकिन परिवर्तनकामी सशक्त सामाजिक आंदोलन के अभाव में ये प्रयास दूरगामी लक्ष्यों को न प्राप्त कर सके। उनके जीवन और विचारों में कोई द्वैत नहीं था। वे विचार और आचरण से पूरी तरह नास्तिक थे। वे 14 अक्टूबर, 1956 को बाबा साहब डॉ. भीमराव आंबेडकर के बौद्ध धम्म दीक्षा ग्रहण, नागपुर में जाकर बौद्ध धर्म ग्रहण करना चाहते थे किंतु क्षय रोग से उन्हें खून की उल्टी हो रही थी। इस कारण बाद में बाबा साहब डॉ. आंबेडकर से प्रेरित होकर उन्होंने 21 जुलाई, 1967 को उन्हीं महाथेरा ऊ चंद्रमणि स्थवीर से, जिनसे बाबा साहब ने बौद्ध धम्म ग्रहण किया था, कुशीनगर में बौद्ध धर्म ग्रहण किया। वे बुद्ध के भौतिकतावादी सोच और सिद्धांत को मानते थे। इस दीक्षा ग्रहण के बाद अपने नाम से कुंवर, चौधरी, यादव हटा दिया। और सिर्फ ललई सिंह लिखने लगे। उसके बाद उन्होंने स्पष्ट घोषणा की कि एक बौद्धिष्ट की वर्ण और जाति नहीं होती वो मनुष्य होता है। यदि वो वर्ण और जाति को मानता है तो वह सनातनी हिंदू है। 12 अक्टूबर 1968 ईस्वी को पेरियार को जिज्ञासु, ललई सिंह और छेदीलाल साथी लखनऊ 'अल्प संख्यक एवं पिछड़े वर्ग' के सम्मेलन में भाषण के लिए बुलाये गये थे। इसके बाद ललई सिंह ने 14 अक्टूबर, 1968 ईस्वी को नानाराव पार्क कानपुर में बौद्ध धम्म दीक्षा ग्रहण का आयोजन किया था। जिसमें हिंदू धर्म के वर्णवाद, श्रेष्ठता और नीचता की मानसिकता पर करारा प्रहार करते हुए, उसकी धज्जियां उड़ा रहे थे, सामने खड़ी दस हजार जनता से बौद्ध धर्म ग्रहण करने की सार्वजनिक गुहार लगाई और सबको बौद्ध धर्म ग्रहण करवाया। इस भिक्षु निगुर्णानंद ने कहा ललई सिंह तो उत्तर भारत के पेरियार हैं। तब से इनके शुभ चिंतकों ने पेरियार ललई सिंह संबोधन प्रारंभ कर दिया। 1968 ई. में 'सच्ची रामायण' के प्रकाशन और पेरियार की सोच से उत्तर भारत में धूम मचाने के कारण भी इनके शुभचिंतकों ने इन्हें 'उत्तर भारत का पेरियार' की उपमा दिया और इन्हें, पेरियार ललई सिंह के रूप में पुकारने लगे, तब से ये अपना नाम 'पेरियार ललई सिंह' लिखने लगे।

यह स्वीकार करना चाहिए कि हिंदी क्षेत्र में हिंदू मानस के मौजूदा वर्चस्व के पीछे उच्चवर्णी सेकुलर हिंदू बौद्धिकों का वह अवचेतन रहा है जो लम्बे समय तक धर्म व वर्ण-जाति के प्रश्नों को अनुपस्थित मानकर सर्वधर्म समभाव की कथित गंगा-जमुनी संस्कृति के भ्रमजाल का भेदन न कर सका। कोई आश्चर्य नहीं कि उस दौर में जाति-भेद के मुद्दे को लेकर उच्च सवर्णों का यह अंधत्व वर्तमान समय में अल्पसंख्यक व दलित समुदायों के प्रति दुराव व भेदभाव का आग्रही नहीं तो उसके विरुद्ध उदासीन अवश्य है। अपने समय में पेरियार और आंबेडकर के चिंतन का अनुगमन करके ललई सिंह ने अपनी आर्मी की और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी की पेंशन, इकहत्तर बीघा जमीन और बाग आदि बेचकर अपने सीमित सामर्थ्य में बहुजन वैचारिकी द्वारा इसका प्रतिविमर्श तो रचा, लेकिन वे इसे जनांदोलन का स्वरूप न दे पाये। नब्बे के दशक में जब सामाजिक न्याय की शक्तियों का राजनीतिक उभार हुआ तब उनका दायित्व था कि सामाजिक न्याय की राजनीति का रिश्ता पेरियार ललई सिंह और रामस्वरूप वर्मा सरीखे सबाल्टर्न बौद्धिकों की वैचारिकी के साथ जुड़ता, लेकिन आमूलचूल सामाजिक परिवर्तन की इच्छाशक्ति के अभाव और तात्कालिक राजनीतिक लाभ तक सीमित रहने के चलते यह सम्भव न हो सका। हिंदुत्ववादी उभार के इस समय में बहुजन समाज को इस वैचरिक रिक्ति की मंहगी कीमत चुकानी पड़ रही है।

कहना न होगा कि धार्मिक कट्टरता, अंधविश्वास, नफरत के इस समय में तर्क, वैज्ञानिक सोच व मानवीय सद्भाव की बहुजन वैचारिकी के चिंतकों, विचारकों और सामाजिक कार्यकताओं के अवदान को संजोने और पुनर्संदर्भित करने की जरूरत है। पेरियार ललई सिंह की ग्रंथावली का प्रकाशन इस दिशा में एक स्वागतयोग्य कदम है। दिल्ली विश्वविद्यालय के युवा अध्येता डॉ. धर्मवीर यादव गगन ने जिस लगन और समर्पण भाव से इसे सम्भव किया है, वह उनकी खोजी और अध्ययनशील वृत्ति के बिना संभव नहीं था। उत्तर भारत से लेकर दक्षिण भारत तक बिखरी सामग्री को जुटाकर संदर्भ प्रदान करना व ग्रंथावली का रूप देना एक दुष्कर व श्रमसाध्य कार्य था। उल्लेखनीय यह भी है कि इस महती कार्य को उन्होने बिना किसी सांस्थानिक मदद के अपने व्यक्तिगत सीमित साधनों और सामर्थ्य से सम्भव किया। इस दूरगामी महत्व के ऐतिहासिक कार्य के लिए उन्हें बधाई और साधुवाद। उम्मीद की जानी चाहिए कि बहुजन समाज के अन्य जन-बौद्धिकों के अवदान को संरक्षित व सुरक्षित करने के प्रयासों को भी इससे प्रेरणा मिलेगी। उनके चिंतन और साहित्य का अध्ययन करने के लिए राजकमल प्रकाशन समूह, नई दिल्ली से प्रकाशित पेरियार ललई सिंह ग्रंथावली एक महत्वपूर्ण पहल है।

(लेखक हिन्दी के महत्वपूर्ण मार्क्सवादी आलोचक हैं। संप्रति लखनऊ में रहते हैं।)

कमलेश वर्मा

पेरियार के जीवन, सरोकार पर विहंगम दृष्टि

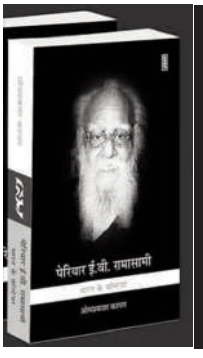

किताबः पेरियार ई. वी. रामासामीः भारत के वॉल्टेयर
लेखकः ओमप्रकाश कश्यप
प्रकाशकः सेतु प्रकाशन, नोएडा, 2022
पृष्ठ-606, मूल्य-रु. 595
पटना सम्पर्कः लक्ष्मी पुस्तकालय भवन
खुदाबख्श लाइब्रेरी के सामने
अशोक राजपथ, पटना- 800004
मोबाइलः 6207592583

बड़े साइज के 606 पृष्ठों की यह किताब पेरियार के संघर्ष और योगदान पर विस्तार से बात करती है। अब तक हिंदी में पेरियार के भाषण और लेखन का बड़ा हिस्सा प्रकाशित हो चुका है, मगर उनके ऐतिहासिक विश्लेषण का ऐसा सुंदर प्रयास मेरे जानते नहीं हुआ है। भारत के द्रविड़ संदर्भों को व्याख्यायित करते हुए यह किताब मानवता का पक्ष लेते हुए लिखी गयी है। इसे पढ़ते हुए ऐसा नहीं लगता कि किसी दुराग्रह को लेकर यह किताब चल रही हो। बहुजन संघर्षों का पक्ष लेते हुए संयमित और तार्किक भाषा में किस तरह से लिखना चाहिए- यह इस किताब की भाषा-शैली से सीखा जा सकता है।

सामाजिक विमर्श की भाषा में सत्य का आग्रह अवश्य होना चाहिए, अन्याय को उजागर करने का संकल्प होना चाहिए; मगर भाषा ऐसी होनी चाहिए कि प्रतिपक्ष के लोग भी सोचने के लिए प्रेरित हों। ओमप्रकाश कश्यप ने यही तरीका अपनाया है। उनकी कलम बहुजन लेखन के लिए मॉडल हो सकती है। इस किताब में जगह-जगह पेरियार के लेखन-भाषण का उपयोग किया गया है, मगर उनकी ऐतिहासिक परिस्थितियों के विस्तृत विवरण के साथ। यह सब पढ़कर कश्यप जी की इतिहास-दृष्टि और इतिहास-संबंधी जानकारी का मुरीद होना पड़ता है। मुझे लगता है कि इधर के दशकों में हिंदी में जो बहुजन संघर्षों से संबंधित लेखन हुआ है उसकी गुणवत्ता को बढ़ाने में इस किताब का महत्त्वपूर्ण योगदान है। ओमप्रकाश कश्यप ने पेरियार के संघर्षों को क्रम से रखा है और ध्यान दिलाया है कि ऐतिहासिक रूप से वे क्यों महत्त्वपूर्ण थे और अपने समकालीनों से वे किस रूप में बेहतर थे!

यह किताब स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास के बहुजन पाठ में कुछ जोड़ती है। कहने की जरूरत नहीं कि राष्ट्रीय आंदोलन के भीतरी संघर्षों को समझने में ऐसे पाठ सहायक होते हैं। इतिहास सपाट नहीं होता! उसे तैयार करते समय 'जैकारा' और 'चीख'- दोनों को सुनना पड़ेगा! उत्तर भारत में पेरियार जैसा प्रभावशाली व्यक्तित्व नहीं मिलता। यहां उभरनेवाले बहुजन आंदोलनों के व्यक्तित्व इतनी प्रतिबद्ध लंबी पारी नहीं खेल पाए। 'जाति के प्रश्नों' पर जो दृढ़ता पेरियार में दिखती है वैसी यहां नहीं दिखी। पेरियार का कद गांधी जी के कद से कमतर नहीं है, मगर भारतीय इतिहास की धारा में कमजोर वर्गों के लिए संघर्ष करनेवाले को राष्ट्रीय व्यक्तित्व मानने की परंपरा अभी स्थापित नहीं हो पायी है। इस पुस्तक में 11 अध्याय हैं। इन अध्यायों को लिखते हुए लेखक ने कहीं भी संक्षेप में निपटा देने की कोशिश नहीं की है। उठाए गए विषयों और सन्दर्भों के बारे में विस्तार से तथ्य देने और विश्लेषण करने की पद्धति के कारण यह किताब ज्ञान-संपन्न और विश्वसनीय है। 11 अध्यायों के नाम से भी इस पुस्तक के विषय-विस्तार को महसूस किया जा सकता है 'पेरियार ई.वी.रामासामीः भारत के वॉल्टेयर', 'आत्मसम्मान आन्दोलन', 'आत्मसम्मान आन्दोलन का विस्तार', 'भाषाई अस्मिता का उभार', 'द्रविड़ संचेतना का निर्माण', 'सामाजिक समानता हेतु अनथक संघर्ष', 'स्त्री-मुक्ति के संघर्ष में पेरियार का योगदान', 'पेरियार का दर्शन-चिंतन और आधुनिकताबोध', 'जातिवाद और छुआछूत से जंग', 'पेरियार की बुद्धिवादी चेतना', 'पेरियार और बुद्ध'।

ओमप्रकाश कश्यप ने पेरियार के जीवन, लेखन, कार्यक्रम, कार्य-प्रणाली, आन्दोलन, अखबार, संस्था आदि की सूक्ष्म से सूक्ष्म जानकारियां रोचक तरीके से पेश की है। सामाजिक न्याय, स्त्री-मुक्ति, आधुनिकता आदि से जुड़े विवरणों को पढ़ते हुए हम यह भी जान पाते हैं कि पेरियार अपने पूर्ववर्ती और समकालीन नायकों से किन अर्थों में भिन्न और समान थे। बुद्ध-कबीर-फुले-पेरियार-आम्बेडकर की परंपरा को खूब मथकर यह किताब अपनी वैचारिकी के स्तम्भों को सुदृढ़ करने में सफल हुई है।

बुद्ध और पेरियार के बीच वैचारिक सम्बन्ध को जोड़ते हुए ओमप्रकाश कश्यप की एक टिप्पणी को यहां देखा जा सकता हैः

'बुद्ध के अलावा वे जिस प्राचीन संत की प्रशंसा करते थे, वे थे तमिल संत तिरुवलुव्वर। बुद्ध के दर्शन को तो वे धर्म मानने को तैयार ही नहीं थे। वे बुद्ध को बुद्धि से जोड़ते थे। बुद्धि यानी मेधा, मनुष्य की चिंतन शक्ति। जो उसे प्राणियों के बीच विशिष्ट बनाती है। जो उसे पहले संदेह करना सिखाती है, फिर सत्य तक ले जाती है। उनका कहना था कि बुद्ध अपनी ओर से कुछ भी थोपते नहीं हैं। बल्कि मनुष्य के विवेक पर छोड़ देते हैं। पेरियार ने लंबी उम्र पायी थी। वे आजीवन हिन्दू देवी-देवताओं और मिथकों की आलोचना करते रहे। वे हमारे समय के अकेले तर्कवादी नेता थे, जिन्होंने लोकप्रियता के तमाम खतरे उठाकर धर्म और ईश्वर के विचार को चुनौती दी थी। लेकिन अपनी ओर से कभी कुछ थोपा नहीं।' (पृष्ठ संख्या-557)

इसी तरह की भाषा-शैली में पूरी किताब लिखी गयी है, जिसमें प्रतिपक्ष की आलोचना करते हुए धैर्य और शालीनता का परिचय दिया गया है। इसका अर्थ यह नहीं है कि आलोचना करते हुए किसी तरह का समझौतावादी रास्ता अपनाया गया है। लेखक ने बुद्ध और पेरियार की तुलना करते हुए महज दार्शनिक बहस नहीं की है, बल्कि ठीक से समझ में आ सकनेवाले मुद्दों को आधार बनाकर सुलझा हुआ विश्लेषण प्रस्तुत किया है। बुद्ध पर बात करने वाले कई लेखक दार्शनिक प्रश्नों पर अंतहीन बहस में उलझ जाते हैं। ओमप्रकाश कश्यप जी ने बहुत सावधानी से बुद्ध या अन्य सन्दर्भों को उठाया है और ऐसी भाषा में सब कुछ रचा है कि पुस्तक के मूल उद्देश्य को समझने के विविध आयामों को खुलते हुए देखा जा सके! आशा है यह किताब गम्भीरतापूर्वक पढ़ी जाएगी और भावी पीढ़ी के सामाजिक व्यक्तित्वान्तरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

(लेखक हिन्दी के गंभीर शोधकर्ता हैं। 'प्रसाद काव्य कोश', 'निराला काव्य कोश' और 'छायावादी काव्य कोश' इनकी महत्वपूर्ण पुस्तक है।)

पत्रिका प्रकाशन

पक्षधर का ग्राम्शी विशेषांक

सौरभ राय

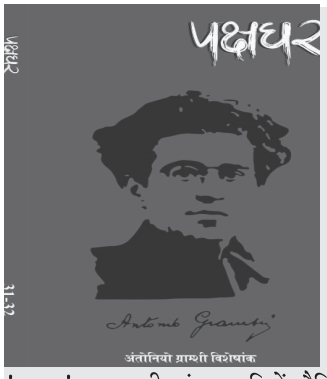

पत्रिकाः पक्षधर
सम्पादकः विनोद तिवारी
अतिथि सम्पादकः विजय झा
पृष्ठः 376
कीमतः 200 रुपये
पताः सी-4/504 ओलिभ कंट्री, सेक्टर-5, वसुंधरा, गाजियाबाद-201012
मोबाइल 7836833283

'पक्षधर' का ग्राम्शी अंक इन दिनों बौद्धिक हल्के में चर्चा का विषय है। सबाल्टर्न चिंतन के प्रतिनिधि विचारक ग्राम्शी पर केंद्रित इस अंक के चार हिस्से चिह्नित किये जा सकते हैं। इसके पहले हिस्से में ग्राम्शी की जीवनी संबंधी सामग्री है। पहले दो लेख इस विशेषांक के अतिथि संपादक द्वारा ग्राम्शी की लिखी जा रही जीवनी से लिए गए हैं। तीसरा लेख ग्राम्शी के पोते के व्याख्यान का अनुवाद है। हिन्दी संसार को इस मार्क्सवादी चिंतक से परिचय कराने का यह बहुत बडा उद्यम है जिसकी जितनी भी प्रशंसा की जाए वह कम ही होगी। पत्रिका के दूसरे हिस्से में विचार-दृष्टि के अंतर्गत आठ लेख/शोध-पत्र रखे गए हैं। पहले दो अनुवाद हैं। उनमें से एक रामकिर्ति शुक्ल द्वारा हिंदी में संपादित किताब एरिक हाब्सबाम से लिया गया है। हाब्सबाम के इस लेख का फोकस ग्राम्शी का राजनीतिक चिंतन है। उनके मुताबिक ग्राम्शी का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योगदान यह है कि उन्होंने राजनीति की मार्क्सवादी सैद्धांतिकी का सूत्रपात किया। एजाज अहमद का लेख आलोचना में छपा था। उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं शायद यही सोचते हुए उसे यहां पुनर्प्रकाशित किया गया है। मनोज कुमार और संजय कुमार ने अपने शोध-पत्रों में ग्राम्शी के शिक्षा संबंधी विचारों को केंद्र में रखा है। रवि श्रीवास्तव ने अपने लेख में ग्राम्शी के जीवन और विचारों का अवलोकन किया है। गोपाल प्रधान के लेख में हाल में ग्राम्शी पर आई कई उपयोगी किताबों की समीक्षा की गई है। वैभव सिंह ने ग्राम्शी को विचारधारात्मक वर्चस्व का विखंडनकार मानते हुए लेख लिखा है। वहीं, शुभनीत कौशिक ने ग्राम्शी की इतिहास दृष्टि पर विचार किया है।

पत्रिका के तीसरे हिस्से में ग्राम्शी और भारत के अन्तर्गत हिलाल अहमद और विनोद शाही के लेख शामिल किये गए हैं। चौथे हिस्से में ग्राम्शी के दस पत्रों का अनुवाद दिया गया है। ग्राम्शी के पत्रों में उनके व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों- मां को सांत्वना देते कैदी बेटे, पत्नी को लंबे पत्र लिखने का अनुरोध करते पति, पुत्र के बौद्धिक विकास की चिंता करते पिता, शोध और अध्ययन की योजना बनाते बौद्धिक आदि- की मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति हुई है।

(लेखक नेहरू मेमोरियल में रिसर्च असिटेंट हैं)

■

पेज 12 का शेष भाग

थे। अध्यक्षता आलोचक वीरभारत तलवार ने की। प्रशस्ति-पत्र का वाचन सत्राची फाउंडेशन के निदेशक आनंद बिहारी व मंच संचालन आलोचक कमलेश वर्मा ने किया। सुचिता वर्मा ने चौथीराम जी का संक्षिप्त जीवन-परिचय प्रस्तुत किया। इस अवसर पर सम्मानित आलोचक चौथीराम यादव को सत्राची फाउंडेशन के द्वारा एक प्रतीक चिन्ह, अंगवस्त्र और 51 हजार रुपये का चेक प्रदान किया गया।

इस मौके पर 'वर्तमान साहित्य' पत्रिका के संपादक संजय श्रीवास्तव ने चौथीराम यादव को बधाई देते हुए कहा कि चौथीराम यादव की आन्दोलनधर्मी चेतना विख्यात है। दूसरी परम्परा को प्रबल एवं जनोन्मुखी बनाने के लिए उनका योगदान अप्रतिम है। वे सर्वाधिक लोकप्रिय शिक्षक के रूप में जाने जाते रहे हैं। उनका आन्दोलनधर्मी व्यक्तित्व उन्हें औरों से अलग करता है। मुख्य अतिथि वरिष्ठ कथाकार काशीनाथ सिंह ने बताया कि उनकी 55 साल से चौथीराम यादव से दोस्ती है, उनकी यह दोस्ती चौथीराम यादव की रचनात्मकता के कारण बनी हुई है। उन्होंने कहा कि चौथीराम यादव का लेखन मुख्यतः उनकी सेवानिवृत्ति के बाद का है। उन्होंने बताया कि बताया कि चौथीराम यादव के आलोचकीय चिंतन को प्रभावित करने वाले दो बड़े मोड़ हैं। एक है —नामवर सिंह द्वारा 'दूसरी परम्परा की खोज' पुस्तक का लिखा जाना और दूसरा है —वीपी सिंह द्वारा मंडल कमीशन को लागू करना। उन्होंने कहा चौथीराम यादव इतिहास पुरुष हैं। दलित आदिवासी साहित्य के पास जब आलोचक नहीं थे तब उसके प्रचारक, व्याख्याता और समीक्षक के रूप में उन्हें चौथीराम मिले। दलित विमर्श को साहित्य का अंग बनाने का श्रेय उन्हें ही है। चौथीराम यादव मनुवाद व ब्राह्मणवाद को निर्भीक चुनौती देने वाले आलोचक हैं। अपने विद्वतापूर्ण अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रसिद्ध आलोचक वीरभारत तलवार ने इस बात को रेखांकित किया कि सामाजिक रूप से पिछड़े व उत्पीड़ित वर्ग में सर्जक बहुत हैं, लेकिन आलोचक नहीं हैं। चौथीराम यादव पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने उत्पीड़ित वर्ग की आलोचना लिखी। उन्होंने कहा कि चौथीराम यादव की आलोचना का बीज शब्द है —लोक। उन्होंने मार्क्स एवं अंबेडकर के सिद्धांतों से प्रेरित होकर अपनी दृष्टि बनाई। सिर्फ हाशिए के विमर्श की ही नहीं, आर्थिक रूप से शोषित पीड़ित लोगों के साहित्य की भी आलोचना लिखी। उन्होंने जिस निष्ठा के साथ दलित आदिवासी साहित्य पर लिखा, उसी निष्ठा से स्त्री पर भी और कृषक मजदूर के साहित्य पर भी।

अपने आत्मवक्तव्य में चौथीराम यादव ने सत्राची फाउंडेशन एवं वक्ता और श्रोता के रूप में उपस्थित जनों के प्रति आभार प्रकट किया। धन्यवाद ज्ञापन आनद बिहारी जी ने किया।

इस अवसर पर जुल्फिकार अहमद को 'सत्राची राजभाषा सम्मान' प्रदान किया गया, जिसके अंतर्गत उन्हें पांच हजार रुपए का चेक दिया गया। सत्राची फाउंडेशन के द्वारा प्रकाशित दो पुस्तकों- राजू रंजन प्रसाद कृत 'प्राचीन भारत वर्चस्व एवं प्रतिरोध' एवं आलोक सुमन दूबे के काव्य-संग्रह 'सब एक साथ' का विमोचन किया गया।

■

डॉ. दिनेश पाल

अवध बिहारी चौधरीः फर्श से अर्श तक का सफर

भारत शासन अधिनियम, 1919 के तहत वर्ष 1920 में बिहार और ओडिशा (तब उड़ीसा) को पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ। पूर्ण राज्य का दर्जा मिलने के बाद नव निर्मित बिहार विधानसभा भवन में 07 फरवरी, 1921 को पहली बैठक हुई। साल 2021 में बिहार विधानसभा के सौ साल पूरे हुए हैं, जिसके उपलक्ष्य में 'बिहार विधानसभा भवन शताब्दी वर्ष' मनाया गया। समारोह की शुरूआत 21 अक्टूबर, 2021 को महामहिम राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने तथा समापन 12 जुलाई, 2022 को माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया। शतक पूरा कर चुके विधानसभा भवन में अध्यक्ष के आसन पर एक से एक दिग्गज नेता आसीन हुए और लोकतंत्र की खूबसूरती में चार चांद लगाये। इसी कड़ी में 26 अगस्त, 2022 को 17 वें अध्यक्ष के रूप में राजद के वरिष्ठ विधायक अवध बिहारी चौधरी ने पदभार ग्रहण किया, जो कि अपने सरल व सहिष्णु स्वभाव से लगभग सबके प्रिय हैं। विदित हो कि सन 1967 में धनिक लाल मण्डल भी इस आसन पर बैठकर इसे ऊंचाई प्रदान कर चुके हैं।

पढ़ाई में औसत लेकिन नेतृत्व क्षमता जबरदस्त

सारण प्रमण्डल के सीवान जिला में मुख्यालय से कुछ दूरी पर जियांव नामक गांव में साधारण कृषक मोतीलाल चैधरी तथा गृहणी भागमानो देवी के आंगन में 17 अगस्त, 1950 ई. को एक बच्चे का जन्म हुआ, जो आज अपने संघर्षों की बदौलत पूरे प्रदेश में प्रसिद्ध है। इन्होंने स्कूली शिक्षा पास के सरकारी विद्यालय से किया, लेकिन आगे की पढ़ाई के लिए सीवान के डीएवी कॉलेज में दाखिला लिया, जहां से विज्ञान विषय में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। मालूम हो कि अवध बिहारी चौधरी छात्र जीवन से ही राजनीति शुरू कर चुके थे। उनके सहपाठी गंगा सागर यादव बताते हैं कि, 'अवध बिहारी चैधरी डीएवी, सीवान में मेरे क्लासमेट रहे हैं। पढ़ने में औसत विद्यार्थी थे लेकिन नेतृत्व क्षमता जबरदस्त थी। छात्र-संघ चुनाव में सचिव के पद पर विजयी हुए थे।'

पंचायती चुनाव के मैदान से राजनीतिक सफर की शुरूआत

सन 1977 में पंचायती राज चुनाव के मैदान में अवध बिहारी चौधरी उतरे और खुद को अपने लोगों के बीच विश्वसनीय साबित करते हुए जीत हासिल की। राजनीतिक इच्छाशक्ति रखने वाला महत्वाकांक्षी व्यक्ति भला पंचायत तक ही खुद को कैसे रोक लेता। आपातकाल के बाद देश एक अलग प्रकार के राजनीतिक दौर से गुजर रहा था। हर तरफ राजनीतिक बदलाव की अनुगूंज सुनाई पड़ रही थी। उसी बदलाव को बलवती करने सीवान सदर से निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में अवध बिहारी चैधरी भी मैदान में आ गए, हालांकि जनता द्वारा उन्हें पर्याप्त समर्थन नहीं प्राप्त हुआ। बिहार विधानसभा चुनाव, 1980 में कांग्रेस(यू) ने उनपर विश्वास जताया और सीवान सदर से अपना प्रत्याशी बनाया, लेकिन चुनाव परिणाम वरिष्ठ भाजपा नेता जनार्दन तिवारी के पक्ष में रहा।

सीवान सदर से सदन में दस्तक

बिहार विधानसभा चुनाव, 1985 में चंद्रशेखर जी ने अवध बिहारी चैधरी को अपनी पार्टी का प्रत्याशी बनाया, तब तक चौधरी जी ने अपने विधानसभा क्षेत्र में आम जनता के दुःख-सुख में शामिल होकर अपनी लोकप्रियता बढ़ा ली थी। इस बार वहां की जनता भी मन बना चुकी थी कि इस युवा नेता

को सदन में भेजना है और अंततः यही हुआ। सिवान सदर से जीत का ताज पहने माननीय विधायक के रूप में अवध बिहारी चौधरी ने बिहार विधानसभा की चैखट को लांघ कर सदन के सदस्य के रूप में शपथ लिया। 1985 में जीतने के बाद अपनी जीत को जारी रखा। साल 1990 में पुनः सीवान सदर से जनता दल के चुनाव चिह्न पर विजयी होकर सदन में पहुंचे और इस बार इनकी पार्टी बहुमत के बल पर सरकार बनाने जा रही थी। बिहार में पहली बार 10 मार्च, 1990 को कोई मुख्यमंत्री राजभवन की बजाय आम जनता के बीच गांधी मैदान में शपथ ले रहा था, जिसने बिहार में सामाजिक न्याय का नया पाठ्यक्रम लागू करके गरीब-गुरबों को स्वर व स्वाभिमान देने का काम किया। माटी के लाल लालू ने गुदरी के लाल अवध बिहारी के संघर्षों तथा राजनीतिक कर्मठता को पहचाना और बिहार राज्य वित्त निगम का अध्यक्ष बनाया, जो कैबिनेट मंत्री के समतुल्य था। सन 1995 के विधानसभा चुनाव में इन्होंने राष्ट्रीय जनता दल के लालटेन चुनाव चिह्न को लेकर चुनाव मैदान में उतरा और पुनः जनता जनार्दन ने उनपर भरोसा जताया। इस बार लालू जी ने इन्हें लोक स्वास्थ्य अभियंत्रया मंत्रालय सौंप अपने मंत्रिमंडल में शामिल किया। जब 05 जुलाई, 1997 को लालू जी ने जनता दल से अलग होकर राष्ट्रीय जनता दल का गठन किया तब जनता दल के 164 विधायकों में से 136 विधायक राष्ट्रीय जनता दल के साथ खड़े हुए, जिसमें अवध बिहारी चैधरी भी थे और सबने राबड़ी देवी को अपना नेता माना। राबड़ी देवी के मंत्रिमंडल में भी चौधरी साहब को शामिल होने का संयोग बना। सन 2000 के बिहार विधानसभा चुनाव में श्री चैधरी सीवान सदर से पुनः अवध बिहारी चौधरी चुनकर सदन पहुंचे। किसी भी दल को बहुमत स्पष्ट नहीं होने के कारण ऊहापोह की स्थिति थी। आनन-फानन में एनडीए के विधायक दल के नेता नीतीश कुमार 146 विधायकों के समर्थन का दावा पत्र राज्यपाल वी. सी. पांडेय को सौंपा। राबड़ी देवी का 14 अप्रैल तक कार्यकाल था लेकिन राज्यपाल ने 03 मार्च, 2000 को ही नीतीश कुमार को सरकार बनाने का नेवता दे दिया और नीतीश कुमार ने पहली बार 03 मार्च को बिहार के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लिया लेकिन बहुमत के आभाव में सिर्फ सात दिन तक ही मुख्यमंत्री की कुर्सी संभाल पाए, अंततः 10 मार्च, 2000 को इस्तीफा देना पड़ा और पुनः एक बार 11 मार्च, 2000 को राबड़ी देवी मुख्यमंत्री पद की शपथ लीं। 2005 के फरवरी-मार्च में विधानसभा चुनाव हुआ तो राजद के मात्र 75 विधायक ही चुनाव जीत पाये, लेकिन सीवान सदर की जनता अपने चहेते विधायक अवध बिहारी चौधरी को पुनः जीत का सेहरा बांधी। चुनाव परिणाम त्रिशंकु रहा लेकिन लोजपा ने शानदार प्रदर्शन करते 29 विधायकों की पार्टी बनी और सत्ता की चाभी लेकर रामविलास पासवान घूमने लगे। 'न खेलब, न खेले देब, खेलवे बिगाड़ब' के तर्ज पर उन्होंने किसी को समर्थन नहीं दिया और

राष्ट्रपति शासन लागू हुआ। छः माह बाद नवंबर, 2005 में पुनः विधानसभा चुनाव हुए और इस बार राजद के मात्र 54 विधायक ही जीत पाए। लगातार पांच बार जितने वाले अवध बिहारी चौधरी भी इस बार चुनाव हार गए। 2010 में भी जनता ने इन्हें जीतने से रोक दिया। लोकसभा चुनाव, 2014 के समय राजद को छोड़कर जेडीयू में चले गए और 2015 में जेडीयू को भी जुदा कह गए और निर्दलीय मैदान में उतर गए। पुनः हार मिली, यह लगातार तीसरी हार थी। जमीनी नेता राजनीति में हार-जीत से विचलित नहीं होते हैं बल्कि जनता के निर्णय को शालीनता से स्वीकार करते हैं। 2020 के विधानसभा चुनाव में अवध बिहारी चौधरी को एक बार फिर जनसमर्थन मिला और 15 साल के अंतराल के बाद पुनः इन्होंने सदन की चैखट को लांघा। इस बार राजद ने तय किया कि वरिष्ठ नेता को इस सदन के सर्वोच्च पद पर बैठाया जाए लेकिन बहुमत इनके पक्ष में नहीं रहा, जिसके कारण 25 नवम्बर, 2020 को आसन पर आसीन नहीं हो सके। भला कौन जानता है कि कल क्या होने वाला है। दो साल भी नहीं बीते कि समय का पहिया घूमा और 72 वर्षीय वरिष्ठ राजद विधायक अवध बिहारी चौधरी निर्विरोध रूप से 26 अगस्त, 2022 को विधानसभा अध्यक्ष बने।

सीवान के गांधी के रूप में जनता का सम्मान

मुखिया से विधानसभा अध्यक्ष तक का लम्बा सफर तय करने वाले सादगी सम्पन्न और सहजता से जनता को सुलभ होने वाले सरल स्वभाव के नेता अवध बिहारी चौधरी को सीवान की जनता 'सिवान का गांधी' कहती है। इनके मित्र व जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा के राजनीति विज्ञान विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ.लालबाबू यादव इनकी शिक्षा के प्रति लगाव की ओर इशारा करते हुए बताते हैं कि, 'बिहार के मुख्यमंत्री दारोगा प्रसाद राय 1980 में सीवान से चुनाव लड़ने गए थे, तभी अवध बिहारी चौधरी उनके सम्पर्क में आये और दारोगा बाबू के व्यक्तित्व से चौधरी जी इतना प्रभावित हुए कि उसी समय तय कर लिया कि इनके नाम पर भविष्य में विद्यालय खोलूंगा। बाद में सीवान में दारोगा प्रसाद राय महाविद्यालय खोला, जिसे कि जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा से स्थायी सम्बद्धता प्राप्त है। उन्होंने आगे इनकी सांस्कृतिक चेतना तथा खेलकूद-प्रेम की ओर संकेत करते हुए बताया कि, 'अवध बिहारी चैधरी महापुरुषों की जयंतियां बड़े धूमधाम से मनाते रहे हैं। गांधी जी की 125वीं जयंती के अवसर पर भव्य आयोजन किया गया था, जिसमें कई प्रतिष्ठित वक्ता पधारे थे। इतना ही नहीं उन्हें खेल-कूद से भी बहुत लगाव है। उन्होंने फुटबॉल का राष्ट्रीय स्तर का मैच आयोजित कराया है।' इनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि लगभग 45 साल की राजनीति करने के बाद भी इनपर किसी प्रकार का दाग नहीं लगा है। इतनी लंबी राजनीति करना और बेदाग रहना किसी भी नेता के लिए बड़ी उपलब्धि मानी जाती है। जीवन में कई बार दुःख इंसान को तोड़ देता है लेकिन उस स्थिति में भी सामाजिक लगाव तथा सामाजिक जिम्मेदारियां इंसान को उठ खड़ा होने के लिए प्रेरित करती हैं। कुछ ऐसा ही इनके साथ भी हुआ। इकलौते बेटे का अल्पायु में साथ छोड़ जाना किसी भी माता-पिता के लिए कितना पीड़ादायक होता है, यह बताने की जरूरत नहीं है। बाद में पत्नी भी अलविदा कह गईं। ऐसी स्थिति में कई बार इंसान समाज को ही परिवार समझकर जीने लगता है और कोशिश करता है कि समाज को अधिक से अधिक बेहतर कुछ दूं। वर्तमान बिहार विधानसभा अध्यक्ष अवध बिहारी चौधरी भी इसी कोशिश में प्रयासरत हैं।

(लेखक जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं। संप्रति राजद अतिपिछड़ा प्रकोष्ठ के प्रदेश प्रवक्ता हैं।)

■

बिहार विधान परिषद के उपसभापति

डी.के. पाल

डॉ. रामचंद्र पूर्वे: एक पूर्ण समाजवादी नेता

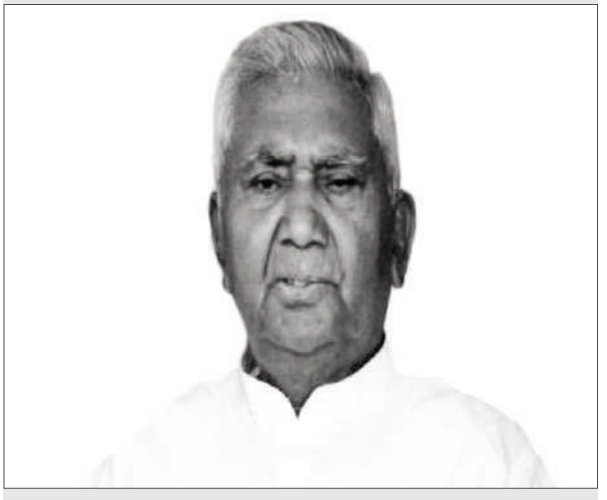

'हमें जो जिम्मेवारी मिली है, उसे पाकर अभिभूत हूं। सीमा में रहते हुए संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करूंगा। संसदीय जीवन में जो भी जिम्मेवारी मिली है, उसका सही तरीके से निर्वहन करता आया हूं। 1986 में पहली बार जननायक कपूर्री ठाकुर के कारण विधान परिषद का सदस्य बना था। जननायक के साथ ही सामाजिक न्याय के प्रणेता लालू प्रसाद यादव और पूर्व सीएम राबड़ी देवी के साथ काम करने का मौका मिला। कई विभागों का मंत्री रहा..'

उपर्युक्त बातें 26 अगस्त, 2022 को बिहार विधान परिषद उपसभापति के रूप में डॉ. रामचंद्र पूर्वे के द्वारा सदन में कही गईं। जिस सदन में इन बातों को जिस दिन वह कह रहे थे, उससे मात्र दो माह पूर्व 29 जून, 2022 को उसी सदन के बाहर अग्निपथ योजना के विरोध में सर्वसम्मति से सभापति बन सदन चलाने लगे थे। समय का चक्र इतना तेज घूमेगा, इसका अंदाजा तो पूर्वे जी को भी नहीं रहा होगा।

सीतामढ़ी से मुजफ्फरपुर वाया छपरा

सीतामढ़ी जिला के सोनबरसा थाना अंतर्गत बन्दरझुला गांव के साधारण व्यक्ति रामलखन पूर्वे के घर सन 1943 में एक बच्चा का जन्म हुआ, जिसका नाम रामचंद्र पूर्वे रखा गया। इनका बचपन अपने गांव की गलियों में ही खेलते-कूदते बीता और पास के ही विद्यालय से स्कूली शिक्षा प्राप्त किया। 1958 में मैट्रिक तथा 1960 में इंटरमीडिएट की परीक्षा पास करने बाद छपरा के प्रतिष्ठित राजेन्द्र कॉलेज में दाखिला लिया। तब राजेन्द्र कॉलेज बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर का अंग था और बिहार के चुनिन्दा कॉलेजों में से एक था। बिहार के तमाम जिलों से मेधावी विद्यार्थी छपरा के राजेंद्र कॉलेज में आकर अध्ययन करने के लिए लालायित रहते थे। पूर्वे छपरा शहर के दौलतगंज में रहकर राजेन्द्र कॉलेज की कक्षाएं

करते थे। दौलतगंज से इतना लगाव हो गया था कि शिक्षा मंत्री बनने के बाद दौलतगंज में एक सरकारी विद्यालय का निर्माण कराया। साल 1963 में गणित विषय में स्नातक बने। वर्ष 1967 में गणित विषय से एम. एससी. करने के उपरांत शीघ्र ही राममनोहर लोहिया महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर के गणित विभाग में व्यख्याता के पद पर बहाल हो गए। नौकरी में आने के बाद मुजफ्फरपुर से ही 1984 में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। इन्हें राजनीति में बहुत रुचि थी, छात्र राजनीति में तो चुनाव नहीं लड़ा लेकिन शिक्षक-संघ की राजनीति में उतरे तो संयुक्त सचिव बने। उस वक्त मुजफ्फरपुर विश्वविद्यालय शिक्षक संघ के सचिव और अध्यक्ष पद पर जाति-विशेष का कब्जा होता था, इसलिए संयुक्त सचिव के पद से ही संतुष्ट होना पड़ा। जाति विशेष के लिए किसी प्रकार का लिखित आरक्षण नहीं था लेकिन पारंपरिक व मौखिक आरक्षण जरूर था। विदित हो कि इनकी पत्नी भी एक बेहतर शिक्षिका रही हैं।

जननायक कपूर्री ठाकुर ने सदन की सीढ़ी चढ़ाया

डॉ. रामचंद्र पूर्वे को जननायक कपूर्री ठाकुर बहुत स्नेह करते थे और इधर ये भी जननायक की सेवा व सम्मान समर्पण भाव से करते थे। कपूर्री ठाकुर क्षेत्रों में जाते थे तो कई बार रामचंद्र पूर्वे को साथ लेकर जाते थे। इसी अपनत्व के कारण जननायक ने 1986 में इन्हें विधान परिषद का सदस्य बनाकर सदन में भेजा। एक बार आगे बढ़ने का मौका मिला तो फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। लालू प्रसाद यादव जब पहली बार 10 मार्च, 1990 को मुख्यमंत्री बने तो उनके मंत्रिमंडल में इन्हें भी शामिल किया गया और इन्हें संसदीय कार्य मंत्री तथा शिक्षा मंत्री के रूप में काम करने का मौका मिला। मालूम हो कि विश्व का सबसे अनोखा शिक्षा मॉडल 'चरवाहा विद्यालय' को जब तत्कालीन मुख्यमंत्री लालू जी ने लॉंच किया, तो उस वक्त शिक्षा मंत्री रामचंद्र पूर्वे ही थे, जिन्होंने उसे मूर्त रूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका दर्ज की। यह अलग बात है कि कुलीन नौकरशाहों के असहयोग और कुछ कारणों से यह योजना सफल न हो सकी। एक तरफ मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव गरीब-गुरबा के बच्चों को काम (पशुपालन) के साथ पढ़ने का मौका मुहैया कराने में लगे हुए थे तो दूसरी तरफ सामन्ती व मनुवादी सोच के नेता तथा पत्रकार उपहास उड़ाने में जी-जान से लगे हुए थे। उस वक्त एक नारा खूब चला था, 'गाय बकरिया चरती जाए, मुन्निया बेटी पढ़ती जाए।' यह वाक्य चरवाहा विद्यालय की अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए काफी है। अफसोस, बहुत दिनों तक वह विद्यालय चल नहीं सका और आज अधिकांश फॉर्म हाउस में तब्दील हो गए हैं।

पार्टी के समर्पित सिपाही

राबड़ी देवी जब पहली बार मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली थीं, तब इकलौते मंत्री के रूप में डॉ. रामचंद्र पूर्वे ने ही शपथ लिया था। ऐसे देखा जाए तो ये कई मंत्रालयों की जिम्मेदारी निभा चुके हैं। लालू के मंत्रिमंडल में संसदीय कार्य मंत्री तथा शिक्षा मंत्री रहे हैं तो राबड़ी देवी के मंत्रिमंडल में परिवहन मंत्रालय, लघु सिंचाई मंत्रालय और सूचना एवं जनसंपर्क मंत्रालय की जिम्मेदारियों का बखूबी निर्वाह किया है। राजद में प्रदेश अध्यक्ष के पद पर सर्वाधिक समय आसीन रहने का रिकॉर्ड इन्हीं के नाम है। 05 दिसम्बर, 2010 से 26 नवम्बर, 2019 के बीच लगातार चार टर्म प्रदेश अध्यक्ष रहे हैं। पार्टी के प्रति प्रतिबद्धता, बौद्धिक क्षमता, सहिष्णुता, सरलता एवं समाजवादी चरित्र इनकी विशेषता रही है। एक सामान्य कार्यकर्ता भी इनसे आसानी से मिल सकता है, यह इनकी विनम्रता का परिचायक है।

मुख्यमंत्री बनने के बाद लालू प्रसाद यादव की लोकप्रियता तेजी से बढ़ने लगी, जिसके कारण उनके साथी उनसे ईर्ष्या करते हुए अलग होने लगे। 1991 के लोकसभा चुनाव में चंद्रशेख, चौधरी देवीलाल एवं मुलायम यादव जनता जल से अलग हो चुके थे, फिर भी लालू प्रसाद के नेतृत्व में जनता दल गठबंधन को 54 में 48 सांसद मिले, जिसमें से 33 मात्र जनता दल के थे। इसके बाद साथियों की साजिश और बढ़ने लगी और 1994 में जॉर्ज फनार्डिज तथा नीतीश कुमार भी अलग हो गए तथा समता पार्टी का गठन कर लिया। 1995 के बिहार विधानसभा चुनाव में लालू प्रसाद के नेतृत्व में जनता दल को 324 में से 164 विधायक मिले और पुनः लालू प्रसाद मुख्यमंत्री बने, साथ ही जनता दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी बन गए। 1996 के लोकसभा चुनाव में भाजपा-समता पार्टी का गठबंधन भी लालू प्रसाद की लोकप्रियता को कम नहीं कर पाया। अविभाजित बिहार में जनता दल की झोली में 22 सांसद आये। राष्ट्रीय स्तर पर लालू प्रसाद की लोकप्रियता बढ़ते देख उनके साथी और विपक्षी दोनों पीछे पड़ गए, जिसके कारण लालू जी को जनता दल से अलग होकर नई पार्टी बनानी पड़ी।

लालू जी के इस बुरे वक्त में पूर्वे जी पूरी मुस्तैदी से खड़े रहे। नई पार्टी के गठन हेतु प्रस्ताव तैयार करने और नाम का चयन करने के लिए चार सदस्यीय प्रारूप समिति बनाई गई, जिसमें डॉ. रामचंद्र पूर्वे, शकील अहमद खां, विजय कृष्ण एवं चितरंजन गगन को सदस्य बनाया गया। समिति द्वारा दो नाम तय किया गया। पहला राष्ट्रीय जनता दल और दूसरा राष्ट्रीय जनता पार्टी। कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री रामकृष्ण हेगड़े की सलाह पर राष्ट्रीय जनता दल नाम को ही चुना गया। 05 जुलाई, 1997 को दिल्ली के बिहार निवास में आयोजित एक भव्य समारोह में राष्ट्रीय जनता दल का औपचारिक रूप से गठन किया गया। 22 सांसद में से 21 सांसद तथा 164 विधायक में से 137 विधायक नई पार्टी के साथ खड़े हुए। विधायकों ने सर्वसम्मति से राबड़ी देवी को दल का नेता चुना, जो कि बिहार में प्रथम महिला मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लीं। आज से 25 साल पहले भी आज ही कि तरह स्थिति थी। उस वक्त सीबीआई लालू जी के पीछे पड़ी थी, आज तो आई.टी, ई.डी. एवं सी.बी.आई. तीनों एजेंसियां राजद नेताओं को केन्द्र सरकार के इशारे पर परेशान कर रही हैं। चारा घोटाला के आरोप में 1997 में पहली बार लालू जी जेल गए। उस समय लालू जी के विश्वसनीय नेताओं में पूर्वे जी अग्रणी थे। वर्तमान में बिहार विधानपरिषद तथा विधानसभा में राजद के सबसे उम्रदराज सदस्य डॉ. रामचंद्र पूर्वे ही हैं। लगभग चालीस साल राजनीति करने के बाद भी ये बेदाग हैं, यह इनकी बहुत बड़ी उपलब्धि है। इन्होंने जननायक कपूर्री ठाकुर से जीवन की सादगी को आत्मसात किया है। हाल ही में अपने राजनीतिक गुरु जननायक की स्मृति में 'गांधी-लोहिया-कपूर्री ठाकुरः विचार प्रवाह' नाम से 2022 का एक कैलेण्डर छपवाया है। इन तीनों महापुरुषों के सन्देश को लोगों तक पहुंचाने का इन्होंने सार्थक प्रयास किया है। राष्ट्रीय जनता दल की ओर से उपसभापति के रूप में इन्हें चुनना एक मुकम्मल चयन है। विदित हो कि कई बार सीतामढ़ी के सोनवर्षा विधानसभा क्षेत्र से चुनकर विधानसभा में भी सदस्य रहे हैं। उम्मीद है दोनों सदनों का अनुभव और 15 साल तक मंत्रिमंडल में रहने का अनुभव उपसभापति की जिम्मेदारी को निभाने में मददगार साबित होगा।

(लेखक सामाजिक-राजनीतिक कार्यकर्ता हैं। लेखन इनकी विशेष दिलचस्पी का क्षेत्र है।)

यशवंत गिरि

प्रदीप गिरिः हिमालय का एक समाजवादी संत

(नेपाल के समाजवादी विचारक और दार्शनिक प्रदीप महिलाप गिरि का 20 अगस्त, 2022 को काठमांडू में निधन हो गया। 74 वर्षीय गिरि नेपाल के सबसे लोकप्रिय राजनेता थे। उन्होंने अपनी उच्चतर शिक्षा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय और जेएनयू में हासिल की थी। वह भारत में राममनोहर लोहिया के नेतृत्व वाले समाजवादी आंदोलन से काफी प्रभावित थे। प्रस्तुत है नेपाली मीडिया में प्रकाशित उनके व्यक्तिव के कुछ अनूठे पहलुओं को उजागर करती उनके भांजे की मर्मस्पर्शी श्रद्धांजलि का अनूदित अंशः सम्पादक)

जब मैं 14 साल का था तब मुझे अपने मामा प्रदीप गिरि से रू-ब-रू होने का मौका मिला। मैंने उन्हें एक अनूठे व्यक्ति के रूप में पाया-बाकी तमाम बड़ों से थोड़ा अलहदा, इसलिए मैं तुरंत अभिभूत हो गया।

वह घंटों अपने कमरे में बंद रहते थे और कभी किसी को अंदर नहीं जाने देते, यहां तक कि सफाई करने के लिए भी नहीं। एक बार, जब वह घर से बाहर थे, तो मैंने अंदर घुसकर देखा, कमरा पूरी तरह से अस्त-व्यस्त था, सब कुछ उल्टा-पुल्टा था, मानो लुटेरों के एक दल ने कमरे में कोई कीमती चीज खोजी हो और लूट कर चला गया हो। मैंने आधी पढ़ी हुई इतनी किताबें किसी कमरे में कभी नहीं देखी थी। मैंने उनसे जवाब तलब कियाः 'आप दिन भर अंदर बंद क्या करते हैं?' वह मुस्कुराये और कहा, 'मैं उड़ना सीख रहा हूं।' उनका जवाब पूरी तरह बकवास था, लेकिन वह मनोरंजक था! उन्होंने मुझे एम स्कॉट पेक की किताब 'द रोड लेस ट्रैवलेड' पढ़ने के लिए दी। 'जिंदगी में एक दो-किताब पढ़ लेनी चाहिए।' वह मेरे साथ ठिठोली कर रहे थे। मन में सोचा मैं यह किताब नहीं पढ़ूंगा। (हालांकि कई साल बाद मैंने यह किताब पढ़ी।)

घर की औरतें हमेशा शिकायत करती थीं कि उन्हें कितनी परेशानी उठानी पड़ती है। वह समय-बेसमय बिल्कुल ताजा बना खाना मांगते और खाते वक्त खूब मुंह चबाते थे। खाते वक्त अक्सर उनके कुर्ता का बाजू दाल की कटोरी में तैरता रहता था। और फिर वह अकल्पनीय काम करते, पानी डालते और वहीं थाली में अपनी हथेलियां धोते!

उन्हें अपने बिखरे हुए बाल, फटे हुए कपड़े पसंद थे, और कभी-कभी वह अपने जूते पहनना भूल जाते थे। बहुत कोशिश करने के बाद भी सफर में अक्सर उनकी उड़ानें छूट जाया करती थीं, इसे देखते हुए मैं उनके साथ यात्रा की योजना बनाने से परहेज करता था। लेकिन, ज्यादातर लोग अभी भी उन्हें अपने आसपास चाहते थे। उन्होंने त्रासदियों के दौरान भी मजाक किया और खूब हंसे। गंभीर किस्म के लोग भी इस हंसी में उनका पूरा साथ देते थे। जहां भी वह मौजूद रहते, जीवन हल्का और आसान दिखाई देता था।'मैं एक निराशा की गर्त में डूबा एक सकारात्मक व्यक्ति हूं' वह कहते और उन कहानियों को सुनाते जिन पर मुझे संदेह था कि इसे कुछ हद तक बदल दिया गया है। 'एक अच्छी कहानी के लिए थोड़ी-सी हेरफेर में क्या बुराई है?' उनका सपाट-सा जवाब होता। सालों उन्होंने मुझे सुकरात, प्लेटो और अरस्तू, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद, गांधी, राम और इस्लाम से जुड़ी कहानियां सुनाईं। ईसा मसीह और बुद्ध, महाभारत और रामायण, बीपी कोइराला, जय प्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया, और अनगिनत लोगों से जुड़ी कहानियां। बीच-बीच में जब भी वह मुझे झपकी लेते हुए पकड़ लेते तो मुझसे एक सवाल पूछते थेः 'तुम्हारी राय में एक अच्छी जिंदगी क्या है?' अपने लिए इस अप्रत्याशित महत्व को पाकर, मैं तुरंत तरोताजा हो जाता और स्वयं शेखी बघारने लगता। जैसे-जैसे साल बीतते गए, राजनीतिक महत्व, साहित्यिक प्रतिष्ठा, व्यापारिक साम्राज्य और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि के लोगों से मिलने पर वह मुझे अपने साथ चलने के लिए कहते। वे सभी शख्सियतें जीवन और जगत के बारे में उनकी व्याख्या जानने के लिए उत्सुक रहतीं। वह बेहद जोश से बोलते थे और जब तक उनका व्याख्यान खत्म नहीं हो जाता, कमरे में पूरी खामोशी छाई रहती और अधिकांश संतृप्त-सा दीखते थे। फिर एक सवाल जो मैंने कई बार सुनाः 'प्रदीप जी, आप नेपाल के प्रधानमंत्री क्यों नहीं हैं?' वह इसे खारिज कर देते, 'मैं किसी भी ऑफिस को कुशलता से चलाने के काबिल नहीं हूं।' लेकिन मैं अपने मन के अंतरे में इससे सहमत नहीं हो सकता था। बाद में, मेरा हाथ पकड़कर, सड़क पार करते हुए वह आगे स्पष्ट करते, 'मैं सत्ता के मायाजाल के लिए अपनी आजादी को गिरवी में कभी नहीं रखूंगा।' मुझे यकीन नहीं हुआ लेकिन उन्होंने हमेशा मेरी बात सुनी। उन्होंने हमेशा मुझे अपना ध्यान दिया। मुझे हमेशा अपने मन की बात कहने की आजादी थी। मन में उन्होंने यह उम्मीद पाल रखी थी किसी दिन मैं अपनी राह उस पथ पर चुनूंगा जिसपर मुझे लम्बी यात्रा करनी ('द रोड लेस ट्रैवलेड') है। ■

राष्ट्रीय जनता दल कार्यालय, बिहार द्वारा आदेशित तथा यूनाईटेड पिंटर्स एण्ड सर्विस प्रोभाइडर, सन्दलपुर, पटना द्वारा मुद्रित, मो.-8434977434